2374

स्वस्तिश्री गिरीराज चक्रचूडामणि नरनारायण

श्री नेपाल

स्वस्तिश्री गीर्वाण
राज्यधुरंधर

स्वस्तिश्री [illegible]

चक्र

१

५

५ ५

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ देवदेव महादेव कृपा कृत्वा ममोपरी ॥
सर्वसिद्धिकरं ज्ञानं कथं यस्य मम प्रभु ॥ १ ॥ तस्यार्थ पार्वती जो है सो श्री
महादेव का आगे कर जोरी वीनति करके पुछता है हे देवता का पती देवता हुआ
का है जगदिश्वर मेरे उपर दया कृपा करके सम्पूर्ण सिद्धि होने का ज्ञान
ध्यान क्रिया हमको विस्तार करके कही सुनावना ॥ १ ॥ कथं ब्रह्माण्ड
उत्पन्नः कथं वापरी वर्तते ॥ कथं विलिन्यते देवः वद ब्रह्माण्ड नीर्नय ॥
२ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी यो ब्रह्माण्ड कौन हि साव से उत्पन्न हुवा और फे
री कौन ही साव से वर्तमान भै रहा का है और फेरी कौन ही साव से लय
होना फेरी यो ब्रह्माण्ड को लय हुने उपाय जो है सो ही ज्ञान हमको
बताना चाही ये कहि के पार्वती ने विनि करी लगा ॥ २ ॥ ईश्वरउवा
च ॥ तत्वब्रह्माण्डमुत्पन्नं तत्वेनपरी वर्तते ॥ तत्वं प्रालिय ते देवी तत्वब्रह्मा
ण्डनिर्नय ॥ ३ ॥ तस्यार्थ हे वरानने सुन श्रीमाहादेव कहने लगा की तत्
वे से कर के यो ब्रह्माण्ड मुत्पन्न हुवा है और यो ब्रह्माण्ड जो है सो तत्वे
से कर के सिद्धि होना है और यो ब्रह्माण्ड कि तिर्नय जो है सो तत्वे से क
रके लये होजाना है कही के श्रीमाहादेव ने कहने लगा ॥ ३ ॥ श्रीदेव्यु
वाच ॥ तत्वमेपरमं मूलं निश्चितं तत्ववादिभिः ॥ तत्वस्वरूपकी देव त
त्वमेव प्रकासय ॥ ४ ॥ तस्यार्थ हे देवी सुनश्रीमाहादेव कहने लगा तत्
व कहा का जो है सो अपना देह का परम मूल है कही जानना और
मन से निश्चय कर के वीस्वास बी वीचार कर देवना हे जगदिश्वर तत्व
स्वरूप कहा क्या है तो तत्व प्रकास करने का उपाय ज्ञान मेरे को कही
सुनाई दे कही के वीनी कीया ॥ ४ ॥ ईश्वरवाच ॥ नीरं जगति कारण

का देवमहेश्वर ॥ तस्माद्वाकाससमुत्पन्नः आकासाद्वायुसंभवम् ॥५॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी उस श्रीमाहादेव कहनेलगाकी : येक परमात्मा निरंजन निराकार देवि आकास उत्पन्न हुवा और तीन आकास देवी वायु उत्पन्न हुवा ॥५॥ वायुस्तेजस्ततश्चापस्ततः पृथ्वी समुद्भव ॥ एतानि पंचतत्वानि विस्तरांवीच पंचधा ॥६॥ तस्यार्थ हे पार्वती तीन वायु देवि तेज उत्पन्न हुवा फेरी तीन तेज देवि जल उत्पन्न हुवा और जल देवी पृथ्वि उत्पन्न हुवा हे देवी ईस प्रकार से पांच तत्वके कर के यो संसार मे माया मोह लोभ मे संपूर्ण तत्व माहा भूत का अस्तित्व विस्तार करके अंकुर हुई रहा ॥६॥ तेभ्यो ब्रह्माण्डमुत्पन्नं तत्रैव परिवर्तते ॥ विलियते यत्रैव तत्रैव रमते पुनः ॥७॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी यह देह भि पंच तत्वसे बनाया काहे और तत्वतो आतिसुक्ष्म रूप से रहा की पंच तत्वको योगीजन ने तत्वको जानिके हमेसा अभ्यास करके रहता है ॥७॥ पंचतत्वमयं देहः पंचतत्वाते सुन्दरी ॥ सुक्ष्मरूपे स्थाकर्ते : स्थायोते तत्वयोगीभी ॥८॥ तस्यार्थ हे वरानने तीनें पंच भूत देवि यो ब्रह्माण्ड उत्पन्न हुवा फेरी यो ब्रह्माण्ड जीन हे तीन पंच भूत मे रहता है और यो ब्रह्माण्ड मे मन मेरमन करके रहता है पाछे फेरी संपूर्ण लय हो जाता है ॥८॥ अन्यत्वं प्रवक्षामी : शरीरस्य स्वरद्वयम् ॥ हंसचारस्वरूपेण : भवज्ञानं त्रिकालय ॥९॥ तस्यार्थ हे देवी ईस प्रकार से यो शरीर मे स्वरद्वय ज्ञान रहता है सो ज्ञान तुम को मैने सुना उगास न ईस स्वासरूपी हंसका चाल स्वभाव भेद ज्ञान योगीजन ने त्रिकाल ज्ञान जानने वाला हो जायेगा ॥९॥ ब्रह्माण्डस्थित संसार : उपकारप्रकाशक ॥ ईदस्वरद्वय ज्ञान : ज्ञानी नो मंडकमाणि ॥१०॥ तस्यार्थ हे

पार्वतीइस स्वरदयज्ञानउत्पन्नसे विश्वाग्नि उत्पन्नहुवा का हुवा तप्रकास मानहोई
हाका और परउपकारमीन यो स्वरदयज्ञानजोनहै सोओर कोदिज्ञानसे
भिन्न यहपरमसूलज्ञानहुवे सेवातेसलथरा सेउत्पन्नहुवा का और हातिका
मध्यकमेरहाकामारा जैसे तेजप्रकासहुवा काव है स्वरदयज्ञानजोनहै
सो तीन ज्ञानीजनतेवो हुवीचारकरके रहनाचाहीये ॥ ७० ॥ सुक्ष्मा
सुक्ष्मतरज्ञानं सुबोधस्तत्प्रकाशेत ॥ आश्चर्यमेनास्तिकेलोके आधारस्वा
तिकेजने ॥ ७१ ॥ तस्यार्थ हेसुन्दरी यो स्वरदज्ञानजोनहै सोसुक्ष्मसेसुक्ष्म
वहुत सुक्ष्म हुवा का सुबोधनीसन्वप्रकास मान हुवा काजोननास्ती लो
कवीबे आश्चर्य मानहुवा का और ज्ञानीसज्ञानका वाले आधारस्वरूप
मान भयाकी ऐसे ज्ञानका वास्ते हमे सवीचार करके रहना चाहीये ॥ ७१ ॥
अथ शिष्य लक्षणं ॥ शान्ते शुद्धे सदाचारे उत्तमभक्ति सदानर ॥ दृढचि
ते हुतंसत्यः देयचैवस्वरदयम् ॥ ७२ ॥ तस्यार्थ हेवरानने यह स्वरद
यज्ञान कैशाशिष्य कुउपदेशादिय से आसाहुवेगा कहे तो अतिवहु
त शांतिशीलवि चित हुवाका हमेस अभ्यास करेवाला शुद्ध पवी
त्रचीत हुवाका और दृढमनाधैर्यवंत और प्रति प्रेम पियारसे सदास
दा उसका सेवाभक्ति करेवाला ऐसा शिष्य कुंयह स्वरदयज्ञान
उपदेशकरणा चाहिये कहीके जानना ॥ ७२ ॥ दुष्टदुर्जनकुलेअ
सत्यगुणत्यागे हीनसत्यदुराचारे स्वरज्ञानंदीयते ॥ ७३ ॥ तस्या
र्थ हेदेवी यह स्वरदयज्ञान दुष्ट दुर्जनाशिष्य और क्रोधि अभिमा
न आलस्य और गुरु का निंदाकरेवाला अलप्पबोलनेवाला
फेरेहुनाकपटकरेवाला ऐसा शिष्य कुंयह स्वरदयज्ञानका

उपदेस नहि देना चाहीये ॥ १३ ॥ शुरयुतोकाथितो देवी: देहस्थज्ञानमुत्तमम् ॥
यत ज्ञानवीज्ञानेन: सर्वज्ञत्वहीजायेते ॥ १४ ॥ तस्यार्थ हे पार्वती योदेहका
भितर हृदयमे शुद्ध पवित्र निर्मलपरमहंस उत्पन्न मोल आत्मा ज्ञान स्थिरर
हता है सो ज्ञान तुमको मे कहि सुनाउंगा सुन: जौन ज्ञान का वीचार वो धक
रके जाने तो और सभी विज्ञान ध्यानि यावहि उत्पत्ति वन्न सवजानने वाला
हो जायगा ॥ १४ ॥ स्वरवेदाश्चशास्त्रानि स्वरगायच मुत्तमम् ॥ स्वरेचसर्व
त्रैलोके: स्वरमात्मास्वरूपकम् ॥ १५ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी योस्वरदय
ज्ञान से चार वेद और अठार पुराणा फेरी नवव्याकरणी नानानरहका धर्मशा
स्त्र उत्पन्न हुवाहे और ज्ञानवी ज्ञान अज्ञानभी उत्पन्नी हुवाहे तस अर्थ आ
फना स्वभाव आगमनिगमका भेद ज्ञान हुवेसे अन मोलहे ॥ १५ ॥ स्वरहि
नंचदेवज्ञा: नाथहिनन थाएहे शास्त्रहिनंयथावक्ता: सीरोहीनंय
थाकेह ॥ १६ ॥ तस्यार्थ हे वरानने जौन मनुष्य स्वरदयज्ञान शास्त्रसे
हीन हुवाहे सो मनुष्य हुवातो भी और देवब्रह्म हुवातोभी क्या हुवा जन्म पाया
कातो व्यर्थ है फेरी और जीस्का घरमे मालीक नहि हुवातो तौन घरमे न्या
यनी आवन होय सेतो घरभी व्यर्थ है और स्वर ज्ञानसे हीन हुवाकामनु
क्षभी व्यर्थ जन्मा लियाहे फेरी और जीस्का देह मे सिर नहि हुवाहे सो देह
भी व्यर्थ हुवाहे कहीके जानना ॥ १६ ॥ नाडिभेदन्तथाप्राणि: तत्वभे
दन्तथैवच ॥ सुक्ष्मरागमित्रभेदंयजोजानातीसमुक्तिय ॥ १७ ॥ तस्यार्थ हे
देवी जीसमनुष्यने अपना देहमेंरहाकी स्वरदयज्ञान जानेनोई नने और
रईगलाकि गलाकानाडि भेदभिजानेगाफेरी और प्राणातत्वभिजाने
गा और अन्तस्करणा मेरहाकिपरमामित्र हुवा काअती वहुत गुप्त हुईर
हाका सुक्ष्मरागनाडिका भेदभिजानीके भक्ति से मुक्ति होगा कहीके

जानना ॥ १७ ॥ आकारेचनिराकारे : शुभवायुबलाश्रये कथयंतीं
शुभाकिंचित्स्वरज्ञानवरानने ॥ १८ ॥ तस्यार्थ हे उमा साकार सेहुवा तो
भी निराकार से हुवा तो भी तस अर्थ स्वास रूपी वायु का लक्षण भेद जाने
तो हे वरानने किंचित् हुआ का स्वरदय ज्ञान जो न है सो तो न ज्ञान में मेरु
प्रको कही सुना गया ॥ १८ ॥ ब्रह्मराड पिराड पिराड ध्वं : स्वरैनेव
हिवाहीनी स्थितिमृतिशहार्कती स्वरशाक्षात्म हेश्वर ॥ १९ ॥ त
स्यार्थ हे पार्वती यो शरीर रूप पीब्रह्मराड पिराड देह है पाछे नाश होई
के भस्म हुने वाला है सो शरीर स्वर का आधार से वानि रहता है फेरी आयु
करोवाला और पालना करोवाला फेरी शहार करोवाला स्वरे हे तस
अर्थ ॥ स्वर रूप हाका को हे कहे तो शिव शाक्षात्म हेश्वर हे कही के जान
ना चाहीये ॥ १९ ॥ स्वरज्ञानात्परंगुह्यं : स्वरज्ञानात्परं धन ॥ स्वरज्ञाना
त्परामित्रं : नवाह्वेनवाश्रुतम् ॥ २० ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी स्वरज्ञान जैसे प
रम गोप्य वस्तु और ज्ञान नही है फेरी और स्वर जैसे परम पदार्थ धन और
धन नाही है फेरी और स्वर ज्ञान जैसे परम मित्र और मित्र नाही है तस्कार
ण हे पार्वती आगे वो स्वरदय ज्ञान किसी नो भे देवा नहि और किसी ने
भी सुनाया नाही ऐसा परम मूल अनमोल स्वरदय ज्ञान हे कहि के जान
ना चाहिये ॥ २० ॥ शत्रुहत्यास्वरबले : तथामित्रसमागमे ॥ लक्ष्मी
प्राप्ते स्वरबले : कीर्तिस्वरबलं सुखम् ॥ २१ ॥ तस्यार्थ हे वरानने स्वर का
बल से शत्रु भी मर जाते है फेरी स्वर का बल से मित्र भी प्राप्ति हो जाते
है और स्वर का बल से लक्ष्मी भी प्राप्ति हो जाते है और स्वर का बल
से धर्म सलाकुशल फुलरा रीभी वनि जाते है कहि के जानना ॥ २

कन्याप्राप्तिस्वरबले: नबलराजदर्शन॥ स्वरेनदेवतासीद्धि: स्वरे नपृथिवी
बला॥२२॥ तस्यार्थ हेपार्वति स्वर कोबलसे कन्याप्राप्ति होताहै औरस्वरका
बलसे राजाकादर्शनमिलेगा औरस्वरका बलसे देवता कासिद्धि होताहै
और स्वरकाबलसे पृथिवीका वस्तुकरोंकासमर्थ होताहै औरज्ञानसे
नहीसधेगा॥२२॥ स्वरबलेगम्यदेस्य: भोजस्वरेबलेतथा। रत्नादिबलि
रबले मलचैवानिवारयत्॥२३॥ तस्यार्थ हेसुन्दरी स्वरकाबलसे परदेश
जानेमेकुशलआनंदसुखपावेगा: औरस्वरकाबलसे मेवामिठाईभो
जनभीपावेगाफेरी औरस्वरकाबलसे खराबीसाबकरोंकाभी यो
ग होजायगा॥२३॥ सर्वशास्त्रपुराणानि: श्रुतिवेदानपूर्वकम्॥
स्वरज्ञानात्परतत्वं नो लोकेविद्धरानने॥२४॥ तस्यार्थ हेवरानने चारवे
दअठारहपुराणवाकयसेंपूरीधर्मशास्त्रसकलसे हेपार्वति स्वरद यज्ञा
नवरावस्वरमंत्रेबहुलअनमोलनिर्मलशुद्धपवित्र वोदेवीकेऔरज्ञान
नाहिहैकहीकेज्ञाननाहि॥२४॥ नामरूपोसर्वदेव: मिथ्यासर्वभुवीभ्रमा अज्ञा
निमोहिना स्वयावत्तत्वनविद्यते॥२५॥ तस्यार्थ हेदेवी योजगत सं
सारमेंसंपूरी नामरूपिदेवीऔर देवताकेहीनानारूपकापूतिमाका
उनकीदेवताकापूजासेवाभक्ति करोंवालामनुष्यलोकदुनीयापर
पंचजोनहैसोअज्ञानि मूर्ख मनुष्य असत्यकुसत्यजानकर भ्रमजाक
र केफिरठतसमनुष्यजन्मनायाकाव्यर्थ हेकीसवाले कहेतोकोटजि
भालियसोभितचरानमिलनेकानाहिलेगाऔर पाछे कोईसमेवेतचला
नजावेगातोनामरूपी पूतीमाकादेवतासेपूरी दुठामेक्या होजायेगाक
हिकेज्ञाननाचाहीये॥२५॥ ईदंस रोदयशास्त्र: सर्वशास्त्रोत्तमोत्तम

॥ आत्मा घटप्रकाशार्थं प्रदीपकाले कोपम ॥ २६ ॥ तस्यार्थ हे पार्वतीयो
स्वरद्वयशास्त्र जो नहे सो संपूर्ण शास्त्रसो भी यो शास्त्र उत्तम श्रेष्ठ वरेण्य
रेण्य थ हे यो शास्त्र कालानसो क्रिया कर्म ने हृदयरूप का आत्मानत्वका
प्रकाश करणे का सामर्थ हे जैसे निर्मल वाले वारेसे अंधकार की नाश
होता हे तैसे यो शास्त्र का ज्ञान ध्यानसे अभ्यास करेतो संपूर्ण आपना
देह का वीवय अज्ञान दूर तानाशकर देते हे फेरी और निर्मल शुद्ध
पवित्र कर उजल कर देता हे ॥ १६ ॥ यस्मै कस्मै पर स्मैवा नयो क्तो प्रस्नहे
तवे तस्मादेत स्वर्द्वाय आत्मनैवात्मनात्मनी ॥ २७ ॥ तस्यार्थ
हे वरानने यो स्वरद्वयशास्त्र का ज्ञान जो नहे सो तो नकोइ को सत्रि
पृती प्रेमापियार करके पूछे तो कीसी को भी नहीं वताना नाउपदेश ज्ञान
क्षेक्षणा जस अर्थ यो स्वरद्वय जीव सो तो नआपके सेमात्र वो धवी
चार देवकर जानिले नाकि सवास्ते कहे तो आपना हृदय मे आत्मा
वि वेआत्मे सेकरके मात्र जानने का ऐसा गुप्त भेद का ज्ञान और का
नहिवताना ॥ २७ ॥ नतीथी वनक्षत्रच नवारे ग्रहदेवता नच वेष्टि वती
पातगेधनाव्यतथैवच ॥ २८ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी यो स्वरद्वय शास्त्र जा
नने वाला का तीथे वार नक्षत्र ग्रह देवता वेतिपात वेष्टि योग
आदि जो वात आ कहा हे सो वात स्वरद्वय शास्त्र के ज्ञान का वास्ते वहवीचार
नहि चाहीये कहीके जानना ॥ २८ ॥ कुयोगानास्ती देवेसी भवातेन
कदाचन ॥ प्राप्ते स्वरवलेयुक्ता सर्व मेवफलं लभ्यते ॥ २९ ॥ तस्यार्थ
हे देवी यो स्वरद्वय शास्त्र का ज्ञान नेवाला का आगे का हे आयाका

कुयोग कदाचि नाहि चाहिये कि सवास्ते कहे तो स्वर का बल से युक्त
मे प्राप्त हुवा काहे और सं पूर्ण बल स्वरे का बल सो ज्ञान ध्यान यज्ञ
दान पुण्य तीर्थ व्रत दया धर्म स्वरे का बल से प्राप्ति होती है सो दान पु
ण्य तीर्थ व्रत दया धर्म स्वरे का बल से प्राप्ति होती है और से नहि होता है ॥ २९ ॥
देहमध्ये स्थिता नाडी: वह्नरूपा वसास्थिता ॥ ज्ञान तथा ध्यान बुध्दे निर्मि: स्व
देहे ज्ञान हेतवे ॥ ३० ॥ तस्यार्थ हे पार्वती यो देहाभ्यंतर चालि रहा का नाडी
जो नहि सो वह्नि रूप से रहता है और ज्ञानी बुद्धिमान सें तो नाडि का नीच
हमेस बोध विचार कर रहना चाहिये कि सवास्ते कहे तो आपना देहमी
तर रहा का आत्मा का जानने निमीत्त हरदम अभ्यास कर विचार करते
रहना ॥ ३० ॥ नाभिस्थो कुण्डलि शक्ति: भुजगाकार रूपायनी ॥ तत्र दे
शो गा हि नाड्यो: द्विदशो ध्य प्रतिष्ठिता ॥ ३१ ॥ तस्यार्थ हे वरानने जो नाभि
स्थान में रहने वाला कुण्डलि शक्ति नाडि जो है सो तो सर्प का
ज जैसा आकार भे रहता है दो दश नाडि उहि गामि होई रहता है और
दो दश नाडि जो है सो अ धो गामि होई रहता है काहि के जानना चाही
ये ॥ ३१ ॥ नाभिस्थाने स्थिता नाडि: मेकुण्डे वा निर्गता ॥ द्विसप्ति सह
स्राणि देहमध्ये व्यवस्थिता ॥ ३२ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी यो देह में नाभि
स्थान में एक नाडि जो है सो नाडि अनेग प्रकार से अंकुर भे दे ली
या का है वैसे यो देह मध्ये बहत्तरि हजार नाडी का शाखा होई व्यव
स्था हुई रहा काहे का है के जानना ॥ ३२ ॥ द्वे द्वे तिर्यग्गते नाड्यो: चतु
र्दिशानी शोरव्यया ॥ प्रधाना दशा नाड्य: दशवायु प्रवाह का ॥ ३३ ॥
तस्यार्थ हे पार्वती ईन दुई नाडि जो है सो तिर्छा करके वही रहता है

तीननाडिमध्ये और चौवीसनाडिमुख्य कहता हे फेरी तो नाडिमध्ये औरद
सनाडि प्रवाह हुई रहा का उत्तम कहता हैं ॥ ३३ ॥ तेयेण प्राणयुक्ता च देहमध्ये
समंवीता ॥ चक्रवत्संतथादेहे : सर्वेप्राणि समंविता ॥ ३४ ॥ तस्यार्थ हे देवी
यो देह मे चालि रहनेवाला वायु जो हैं सो वायु सब जगे मिला कर संयोग भेजे
से काठ्ठ करि कावना हुवा कुलारका चाक जैसे फिरता हैं तैसे यो देह मे च
लि फिरे रहता हैं सो सब प्राण का आधार आश्रय मे बैठा रहता हे ॥ ३४ ॥
तस्य मध्ये दश श्रेष्ठा दशो नाडीस उच्यते ॥ ईडा च पींगला नाडि सुक्ष्मणा च
तृतीयेकम ॥ ३५ ॥ तस्यार्थ हे पार्वती तीन नाडि मध्ये दश नाडि और हे सो
और से भी वरे श्रेष्ठ हैं फेरी तीन दस नाडी सो भे और १ गला पिंगला सुक्ष्म
णा नाडी कहा का परम श्रेष्ठ मुख्य मोक्ष देनेवाला अजम अगोचर मे रहा का
हे कहि के जानना चाहिये ॥ ३५ ॥ गांधारी हस्तिनी जिह्वा : पुषाश्चैव य
शास्विनि ॥ अलंबुषा कुहुश्चैव शाकिनी दशामे स्तथा ॥ ३६ ॥ तस्यार्थ
हे वरानने अब नाडि का नाम कहूंगा सुन गांधारी १ हस्तिनी २ जिह्वा ३ पुषा ४
रि ५ अलंबुषा ६ कुहु ७ चकाह शंखिनी ८ ईगला ९ पिंगला १० सुक्ष्मणा ११
समे तदश नाडि मुख्य कहता हैं कहि के जानना ॥ ३६ ॥ ईडा वामे थे नाभा
गे : दक्षेरोपि पिंगलास्थिता ॥ सुक्ष्मणा मध्ये देशे तु : गांधारी वाम चक्षु
॥ ३७ ॥ तस्यार्थ हे देवी ईडा नाडि देह को वाम भाग मे रहता हैं और पिंगला
नाडि देह का दक्षिण भाग मे रहता हे और सुक्ष्मणा नाडि देह का मध्ये भाग
मे रहता हे ॥ ३७ ॥ दक्षेरो हस्तिनि जिह्वा : पुषा कर्णे दक्षेरो ॥ य
शास्विनि वामकर्णे : पुषा ऊर्ध्व अलंबुका ॥ ३८ ॥ तस्यार्थ हे पार्वती द
क्षिण आंखी मे हस्तिनि जिह्वा नाडि बैठि रहता हैं पुषा नाम नाडि दक्षिण

कानमेंबैठि रहता और अलंबुका नाम नाडि मुख मे बैठि रहता है कहि के जान
ना ॥३८॥ कुहुवालिंगयोदेशे मूलस्थाने तु शंखिनी ॥ यवं द्वारे समाश्रि
त: तिब्बातिदशनाडिका ॥३९॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी कुहु नाम नाडि लिंगस्था
नमे रहता है और शंखिनि नाम नाडि मूलाधार मे रहता है ऐसी तरहसे दश
नाडि दश द्वारमे द्वारका आश्रयमे रहता है कहि के जानना ॥३९॥ ईडापिंगो
लासुक्ष्मशा प्राणमार्गे समाश्रिता ॥ यतानि दसनाड्यास्तु: देहमध्ये व्यव
स्थिता ॥४०॥ तस्यार्थ हे वरानने ईडा नाडि और पिंगला नाडि और
सुक्ष्मशा नाडि ईनातिन नाडी प्राण का आश्रयमे बैठि रहता है और द
श नाडि देह मध्ये व्यवस्था करके बैठि रहता है कहि के जानना
॥४०॥ नामानि नाडिकानां तु: वायुना प्रवदाम्यहम् ॥ प्राणापानसमा
नश्च उदानव्यानमेव च ॥४१॥ तस्यार्थ हे देवी देह का विषय पंच वायु रहा
का जो है सो ईस वायु का नाम कहि सुनाउंगा सुन: प्राण वायु १ अपान
वायु २ और समान वायु ३ और उदान वायु ४ और व्यान वायु ५
मेरा पांच वायु का नाम तुमको सुनाया ॥४१॥ नागश्चकूर्मकृकलो:
देवदत्तधनंजया ॥ हृदि प्राणो वसेन्नित्यं अपानो गुदमंडले ॥४२॥
तस्यार्थ हे वसुधरा और पंच वायु का नाम कहि सुनाता सुन नाग वायु
१ कूर्म वायु २ कृकला वायु ३ देवदत्त वायु ४ धनंजय वायु ५ और आगे
पांच वायु: यह पांच वायु समेत दश वायु का नाम तुमको सुनाई कुकाके
रि और ईस दश वायु मध्ये प्राण वायु हृदय मे रहता है और अपान
वायु गुद द्वार मे रहता है कहि के जानना ॥४२॥ समानो नाभिदेशे तु उ
दानो कंठमध्ये तु ॥ व्यानो व्याप्य शरीरे तु प्रधान पंच वायव ॥४३॥

तस्यार्थ हे सुन्दरी समान वायु नाभिस्थान मे बैठि रहता है और उदान वायु कंठ स्थान मे बैठि रहता है और व्यान वायु सै पुरी सरीर मे फैलि रहता है कही के जानता ॥ ४३ ॥ प्राणा व्यापं च विख्याता नागा व्यापं च वायुवा ॥ तेषामपी पं च वायु स्थानानि च वदाम्यहम् ॥ ४४ ॥ तस्यार्थ हे वरानने प्राणा आदि पंच वायु का नाम स्थान मै तुम्को समझाई के मै ने सुनाया अब फेरि और नागादि पंच वायु का पांचे स्थान मै ने कहुंगा सुन ॥ ४४ ॥ उद्गारे नागा श्रुता कुर्मा चानि मेषे स्मृता ॥ कृकलो क्षुत कृत्रयो देवदत्तो जमाईव ॥ ४५ ॥ तस्यार्थ हे देवी यो देह को वी अपं च वायु का लक्षण भेद मै ने कहुंगा सुन हि कुचि आउने मे नागवायु सेंआ उता है और निद्रा आई के आदि पं च करी वाला कुर्मवायु उठने मे निद्रा आउता है और कृकला वायु उठने मे नाक वा मोंहि क आउता है और देवदत्त वायु उठने मे मुख मे जमाई आउता है कही के जानता ॥ ४५ ॥ न जहाति मृतवापि सर्व व्यापि धनंजय ॥ यते नाडि वसूर्ये वः भ्रमतानिवसूपीरा ॥ ४६ ॥ तस्यार्थ हे पार्वती धनंजय नाम वायु जो न सोतो यो देह मे सर्व व्यापक फैली रहने वाला है इस से जो मनुष्य बीमार होई के मर जावेगा प्राण निकल जाय सो भी धनंजय वायु इस के घरी सम शरीर रहता है की सवास को कहे तो जी वसूपी प्राण लो निश्चा वेगाक होके आकाश मे थहरि रहता है जब एक घरी वैठे सो भी प्राण सपिजिव लौंनि न आवे तो तब पाछे धनंजय वायु प्रवाहे रति काले जाते है तब शरीर मर जाते है कहि के जानता नाही ये ॥ ४६ ॥ प्रकर्ते प्राण सं वारो लः क्षते देहमध्ये ॥ ईडा पिंगला सुक्ष्म राः नाडि भिरसो देहमध्ये ॥ ४७ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी यो देह मे ईडा पिंगला और सुक्ष्म राई नाम नाडि जो है ॥ सो तो प्राणी जब अधिक मान ने ईनाति न नाडि कपती प्रेम पियाक रके नमस्कार कर कुं

हातजोरिके आप नाहेह को नमे निकलाका शब्द कोष वरआवे गानो नाद
का आवाजसुनिबोध विचार कर अभ्यास करिरहनाचाहिये ॥४७॥ ईडावामे
चावेद्वर्या पिंगोलादक्षिणोस्मृता॥ ईडा नाडि स्थिता वामे तत्वबेक्षाच
पिंगाला ॥४८॥ तस्यार्थ हे वरानने ईडा नाडी देहको वामभाग मेरह
ताहें फेरि और पिंगला नाडि देह का दक्षिणभाग मेरहताहें फेरि औ
र ईडा नाडि पिंगला नाडि का स्थान मे आसन पर बैठि कोनिरंतर
अभ्यास करे मे इन नाडि लय होजाते हें काहि के जान नाचाहिये ॥४८॥
ईडा नाडि स्थितो चंद्रः पिंगला नाडि भास्करः ॥ सुषुम्णा सं भवेपेन
शिवहं सत्वरूपकम् ॥ ४९ ॥ तस्यार्थ हे देवी देह में ईडा नाडि जोन
हे सो साक्षात आदि शक्ति पार्वती हें तोभि चंद्रमाका रूप धरी
रहताहें फेरि और पिंगला नाडि जोनहें सोतो नसाक्षात आदि
ब्रह्मा शिव स्वरूप हे फेरि और सुषुम्णा नाडि जोनहें सोहें सरूप
लिये निरंजनाथ श्री महादेव हें काहि के जान नाचाहिये ॥४९॥
अनेन क्षणे योगी यो वेद चित समाहित ॥ मार्गे चंद्र सूर्ययोः सर्व
मेवविजानियात ॥ ५० ॥ तस्यार्थ हे पार्वती योई गला नाडि अपना देह मे अ
भेद से चलि फेरि रहनेवाला स्वर को भेदना
नजानिके इ स्थान मे आसन पर बैठि के इक चित करके निरंतर मे
अभ्यास कर के रहने वाला योगि जोन सो योगी ने सब ज्ञान
मालूम होजावेगा काहि के जान नाचाहिये ॥ ५० ॥
धायेत्तत्वास्थिते जीवे अस्थिरेच कदाचनम् ॥ ईच्छा सिद्धि भवेत
स्य माहालाभोजयंतथा ॥ ५१ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी जिस ज्ञानि जन

ने अपनादेहमे शुद्ध होई अभेद सेरहने वाला मनऔर स्वास रूपी वायु
जोहै सोइन दुनकोकावा सँभारि अचल कर के साधनकर अभ्यास
सें स्थिर करो कोजाने तोतसम मनुष्य नेमन मेजो वांछाकरेगा सोफल
पावेगा औरे ईछ्यासिद्धी प्राप्ति होजावेगा औरे तिरतत्वप्रकास
होगा तो माहाला भक हो कांजिव मुक्ति होजायेगा कोनेबात का
संदेहनाहि करो फेरी औरे मन स्वास रूपी वायु का तिरतर अभ्यास कर
के स्थिर करनस केतो औरे कोटि यत्न करे सोभि कदाचित ईछ्यासि
द्धि माहालाभ कासिद्धि करे नाहि सकेगा काहि केजान नाचाहिये ॥ ५१ ॥
चंद्रसूर्यसदाभ्यासे: येक्षवानि सदानर ॥ अतीतानागतज्ञान: तेषा
हस्तगतसदा ॥ ५२ ॥ तस्यार्थ हेवरानने जिस मनुष्यने अपनादेहमें
वलि फिरी रहाका ईंगलापीगला चंद्र सूर्य्य गाडि कोनिरंतर हृदय
मे शुभअशुभवोधविचार कर सदासर्वदा अभ्यासकर के रहनेवा
लाजोन योगीहै सोतोन योगी काआगे गया कायुक्त: और पाछे हु
येका भविष्य और आगे वर्तमान कर्ते रहाका योगि नोज्ञान उस्का हृ
दय मे प्रकास होई रहता है कहीकेजान नाचाहि ॥ ५२ ॥ हंकारनिर्गी
न्यप्रो क्तो सकारे न प्रवेसन ॥ हंकारशीभुसूपेशा: सकारशाक्तीस
च्यते ॥ ५३ ॥ तस्यार्थ हेदेवीयो शरिर मेहंकार: सकार ईडापीगला
गाडि जोन है सोतोन हंकार कर्ते मे पुरुसका रूप धारि के स्वास
बाहेर निकसी आउ ते है फेरी और सकार कर्ते मे स्त्रीका रूप धारिके
स्वास भितरजाते है तस अर्थ हंकार आउ ते मे माहा देव शिवे
ईर और सकार मे भितरजा ते मे गौरा पार्वती है कहिके जानना

चाहिये ॥५३॥ शाक्तिरूपं स्थितं चंद्रः वामनाडिप्रवाहकम् दक्षी
णानाडिप्रवाहे कम् ॥ दक्षिणा नाडि प्रवाहे ज्ञः सूर्य अपरूपदीवाकरम
॥५४॥ तस्यार्थ हे पार्वती चंद्र नाडि का वेला मे शक्ति रूप पाले ये वाम
नाडि का चलाऊना है फेरी सूर्य नाडि का वेला में शिव रूप लेके
सूर्य काभे वाले ये दक्षिणा नाडि को चला ऊना है कहिके जानना
॥५४॥ स्वाशेसकार संस्थेज्ञः यदा नदि यते ज्ञः। तदा नांजे
वलोकेस्मी: कोटि कोटि फललभ्येत ॥५५॥ तस्यार्थ हे सुद
रि जिस मनुष्य ने अपना देह मे रहा का स्वास रूपी जिव ब्रह्म
अपना देह मे भितर जाने मे ॥ जो को इस मनुष्य ने दया ध
र्म से दान पूरा पक करेगा तो उस मनुष्य के परलोक मे कोटि
कोटि फल को प्राप्ति हुवेगा कहिके जानना चाहिये ॥५५॥
वामनाडि मृत रूप जगत्पालन समर्थ दक्षि च रभावेन
जगद्धुमतय सदा ॥५६॥ तस्यार्थ हे वरानने यो देह मे वा
मनाडि वाले रहता है सो नाडि अमृत रूप हुने से तस्की
लक्षणा स्वभाव से जगत संसार सें पूरा जीव का पालना
करो का समर्थ हुवा का है कहिके जानना फेरी और द
क्षिणा नाडि का चतुर चंचल रूप हुने से जगत संसार
सें पूरा जिव का उन्मत उत्पात करो वाला सब का दुख
भय देने वाला है कहिके जानना चाहिये ॥५६॥ शुभा
शुभ सर्वत्र कर्म सुमध्यमभवाते ॥ सर्वत्र शुभकार्येषु
वामनाडि व प्रशस्त दा ॥५७॥ तस्यार्थ हे पार्वती यो है

हे मध्ये मनाडि कहा का सुषमरा नाडि जो न हे सो नाडि
चलने मे दुनिया पर चंचने का मकार्य शुभ हो गा तो भि शुभ
शुभ हो गा तो भि को ने का मन करे और शुभ कर्म यो गरसमा
धि मात्र करो का शुभ जानना और घर का मन करे तो विघ्न
उत्पात कर देते हे और वाम नाडि चलने मे सीधा का म
कार्य मे शुभ फल करो वाला हे और चंद्र नाडि बरे चला
ना पूर्व करो वाला हे कहि के जानना ॥५७॥ निर्गमे
शुभावामेश्व प्रवेस्यदक्षिणे शुभा ॥ चंद्र समसुषि
रा यां रवीसुविषयसदा ॥५८॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी
यो देह मे चंद्र सुर्य्य नाडि वाले रहा का जो न हे सो तो न
पर देश जाना चाहे तो दाहिणा पछिम आदि शा जाये तो वा
मभाग का चंद्र नाडि चलने मे जाय तो शुभ लाभ दे
ने वाला हे और घर प्रवेश करो वाला सुर्य्य नाडि च
लने मे जाय तो शुभ लाभ देने वाला हे और बरे करा जो
वर जाहि कार्य मे सूर्य नाडि चलने मे करा तो और शान्ति
कारज मे चंद्र नाडि चलने मे करे तो ॥ कारज सिद्धि होई
कहि के जानना ॥५९॥ स्त्री चंद्र पुरुष सूर्य्य चंद्रो गो
रि सि तो रवि। चंद्र नाडि प्रवाहे च सो भकर्मा नी कार
येर ॥५९॥ तस्यार्थ हे वरानने यो देह मे वाम भाग
चंद्र नाडि वाले रहा का जो न हे सो तो न आदि शक्ति

पार्वती हे स्त्री का रूप लिये गौवर्ण हवा का है श्री सूर्य
नाडि जौन हे सो नौ न श्वादि पुरुष स्याम वर्ण का रूप लि
ये शिव शाक्षात् महादेव है कहि के जानना चाहिये ॥५८॥
सूर्येनाडि प्रवाहेच रौद्रकर्मनिकारयेत्। सूक्ष्मरागार्थी
प्रवाहेच सिद्धी मुक्ति फलानि च ॥६० ॥ तस्यार्थ हे दे
वी यो देह मे सूर्येनाडि चलने मे जबर जाहि हवा का कुरक
र्म करे तो सीधी होई श्री र मध्ये नाडि कहा का सूक्ष्म राग
नाडि चलने मे अपना हृदय का मन स्थिर करके करे
श्री र स्वास रूपि वायु घट्टाने का यत्न जो न हे सो विधी
उपाय करके योग समाधि मात्र करे तो सीधि श्री र मु
क्ति का फल प्राप्ति होगा श्री र कर्म को नै भी न करे ॥६० ॥
आदौ चन्द्र सितो पक्ष: भास्कर सूर्य तस्य रे। प्रदि पादि
न मारभ्य त्रि रिति त्रिरिति क्रमो दय ॥६१ ॥ तस्यार्थ हे पा
र्वती महिना का शुक्ल पक्ष को प्रति पदा का दिन चन्द्र नाडि का
उदय होगा कहि के जानना फेरि श्री र कृष्ण पक्ष को प्र
ती पदा का दिन दे बिति न दिन स मग्राफना कर्म का स्व
भाव से सूर्ये नाडि कृष्ण पक्ष मे प्रती पदा का दिन उदय
होगा कहि के जानना ॥ ६१ ॥ सार्द्ध द्वि घटिकारा यो: शु
क्ल पक्षा शशिर वीव हते कार्द्ध नैनैव यथा वधि घटि
क मार ॥६२ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी यो शरीर मे दहिने वा

ये नाकाभेतर चंद्र सूर्य्ये नाडि चालि रहा का जो न हे सो
तौंन हुई चारि आधा कहा का पक्ष हे क घटा का प्रमान से
चंद्र सूर्य्ये नाडि का ग्रह दला बदला करके चालि रहता हे फे
रि ग्रोर तलै हो साव से साठि घरी का रात दीन बिती जाते
हो ॥६२॥ वहेतावार घटे मध्ये पंचतत्व विनीर्दि शोर ॥६
ति पत्योदि नाम हु: वि परिते वो ह्य माश्च ॥ ६३ ॥ तस्या
र्थ हे वरानने यो देह मे वाय तर्फ ईडा नाडि चालि रहा का
जो न हे सो नाडि शुक्ल पक्ष का प्रतिपदा देवि ग्रक नास्व
भाव से पंचरा दिन पूर्णिमा सत कृष्ण भारित से वहे तो
ग्रभ्यास मे रहने वाला योगी का पंचतत्व का ज्ञान हि देवि
परे गा कहि के जानना फे रि ग्रोर विपरीत कर के वहेतो
विघ्न करके दुख देता हे ॥ ६३ ॥ उदयचन्द्र गार्गे नः सूर्येनष
मयं यदि ददाति गुण सधाम विपरिते विजयश्च ॥ ६४ ॥
तस्यार्थ हे देवी सोमवार का दीन वि हा न चंद्र नाडि व हेतो
फे रि संध्या काल मे सूर्य नाडि वहि के ग्रष्ट हो जाय तो तस
मनुष्य कुं गुण का फल दायक हो कर लाभ का प्राप्ति हो जा
य गा ग्रोर फे रि वी परीत हो ई के नाडी वहे तो मन मेरी स
म्याई के सो क सं ना पक्ष फल देने वाला होगा तस्कार रा
हमे सरान दिवि वार कर्ते रहना ॥ ६४ ॥ शुक्ल पक्ष भवे द्वा
मा कृष्ण पक्ष व दक्षिणा ॥ यो नी वा प्रतिपत्सूर्य योगी

तद्वर्तमानस ॥ ६५ ॥ तस्यार्थ हे पार्वति यो देह मे शुक्ल
पक्ष मे वाम नाडि वहे तो ओर फेरी कृष्ण पक्ष मे दक्षि
ण नाडि वहे तो ओर फेरि प्रति पदा देखिये सी रिन
से तर्वमान से नाडि वाहि चालि आवे तो तस योगी नेमा
त्र योग का मार्ग जाने गा और योगी ने योग का मार्ग नहि
जाने गा कहि के जानना ॥ ६५ ॥ शशाकवारय चंद्रो : दी
वा वा वे दिवाकरा । ईत्य भ्यास रतो नित्य सयोगी श्वनसी
सय ॥ ६६ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी ईस देह मे चंद्र सूर्य
नाडि वहि चालि रहता है सो नाडि का रोक ने बुद्धि मान ने
चंद्र नाडि वहि चालि रहा का वेला मे सुगतियान से नि रो
र रोक देना और फेरि सूर्य नाडि वही चली रहा का वेला
मे सुगतियान से नी रोक रोक ना तो : ईस प्रकार सहज मे
सनित्य अभ्यास मे रहने वाला योगी जो न है सो : योगी
कहने ईने हो ॥ ६६ ॥ सुर्य नवा धते सूर्य : चन्द्र चंद्र वा
धते ॥ जो जाना निक्रीया मे नात्रैलो क्य वस्य तार आगार
॥ ६७ ॥ तस्यार्थ हे वरानने सुर्य नाडि वहि चलते मे सु
र्य नाडि का यान से नी रोक रोकी देना और फेरि चंद्र
नाडि वहि चलते मे चंद्र नाडि का यान से रोकी देना तो ई
स प्रकार से जिस मनुष्य नो नित्य हे सभ्यास कर रहा
होगा तो तस ताणी जन का समर्थ छिन भर मे त्रैलोक्य
वस्य करे सकता है कहि के जानना ॥ ६७ ॥ ग्रसुक्ष

बुधे दुग्धं वासरे वामनाडिका ॥ सीधि दास्यं सर्वकार्ये शु
क्लपक्षविशेषतः ॥ ६८ ॥ तस्यार्थः हे पार्वती शुक्र
वार वहे स्यनीवार ॥ सोमवार बुधवार योचार वार
शुक्लपक्षका जौन दीन में सवेरे चंद्रनाडि वहि चले तो
तस दिन उस साधिजन का कामकारज सवसीधे हो
जायगा हे कहि के जानना फेरि उस मे सेवी परीत वहि
चले तो विघ्न करदेता है सो जानना ॥ ६९ ॥ अर्की गारो
मि सारगा वासरो दक्षनाडिका ॥ स्मर्तव्यं सर्वकार्ये शु
क्लपक्षविशेषतः ॥ ६९ ॥ तस्यार्थः हे देवी आईत वार
शनिचरवार मंगल योगीनवार कृष्ण पक्षका जौन
दिन सवेरे सूर्यनाडि वहि चलै तो उस दिन तस साधिज
नका सब कामकारज सीधी होजायगा फेरि इस तरह से
सूर्यनाडि सदा वहि रहे तो सदा वहि के जस लाभ प्राप्ति
होगा कहि के जानना ॥ ६९ ॥ सकैकस्य घटिपंचक मे
नैवोदयः ॥ तीव्र ॥ क्रमादेकैकनाड्यस्तु तत्वनाथ क्रम
व ॥ ७० ॥ तस्यार्थः हे सुंदरी योदेहका भितर अगम भेद
जानि गला नाडि वहि वाले रहता है सो नाडि अदलाबदला
करके अपना स्वभाव से फिर नेकुई घरि आधा आधा पका
एक घंटा किजाते है सो बात समझाई के रखना ॥ ७० ॥
अहोरात्रस्य मध्ये तु द्वादशक्रमाद्वा दशकर्क

ट कन्या ति मृगा मिना नेशा कर ॥ २१ ॥ तस्या र्थ हे वरा
नने यो देह मे रात दिन भर मे अपना स्वभाव से वाहु शी
भा ति चालि फिरती है कहि के जानना चाहिये कौन शी भा
ति चालि फिरती है कहि के जानना चाहिये कौन शी भा ति क
हे तो दव १ कर्क ८ २ वृश्चिक ३ मकर ४ मिन ५ कन्या ६
इन छ राशी रात दिन भर साठि घरी मे वाहु शी भा ति छरा
शी फिरे रहता है ॥ २१ मेष सिंह धनु पूर्व तुला यो
मिथुने घटे ॥ उदयोदक्षिणो रात्रयो शुभाशुभ विनि
य ॥ २२ ॥ तस्या र्थ हे देवी दक्षिण नाडि मे छ राशी फिरे
रहता है कौन कहे तो मेष १ सिंह ५ धनु ९ तुला ७ मिथुन
३ कुंभ ११ इन छ राशी दक्षिण नाडि मे फिरे रहता है क
हि के जानना चाहिये ॥ २२ ॥ तीसे पूर्व तटे चन्द्र भाग पक्षि
मदक्षेणो ॥ दक्षीना च प्रवाहे च नग छेद्या मे पाक्षे मे ॥ २३ ॥ त
स्यार्थ हे पार्वती पूर्व दिसा मे और उत्तर दीसा मे चंद्र नाडि
वे हि रहता है फेरि और पश्चिम दीशा दक्षिण दिसा मे सूर्य
नाडि वहि चली रहता है फेरि और चंद्र नाडि वहि चाले रहते
मे पूर्व दिशा मे और उत्तर दिशा मे नहि जाना फेरि और सू
र्य नाडि वहि चलते दक्षीण दीशा और पश्चिम दीशा मे
नहि जाना कि सब ग्रास कहे तो वीचार न कर के जावे तो र

धा में बल से अपना देह में चोट लगेगा और चोर का भय और धन जैसे जनाकर का दर है कहीं के जाना नाहि यो॥७३॥
वामनाडि प्रवाहे चन्द्र गङ्गे पूर्व उत्तरे॥ परी पश्चिम भयन स्य गङ्गे सौनाडि वर्तते॥७४॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि वामनाडि वाहि चलने में पूर्व दिशा और उत्तर दिशा नहि जाना फेरी और दक्षिण नाडि वाहि चलने में पश्चिम दिशा और दक्षिण दिशा नाहि जाना न मानि के जाय तो वि पारित का फल से रहा चलने में अनेक विघ्न भे आफना देह में दुष सोक दुनेका भय लगेगा॥७४॥ तस्मात्र न कर्तव्य वै सर्वाहे तु प्रयत्नतः॥ तदा तत्र संघाटम पुरेवन संसय॥७५॥ तस्यार्थ हे वरानने तस्मात् सर्व कामकारज मे प्रेम पियार कर ईक्षा करी पालाशानी उस मने वर्जित किया का दीशा में कदाचित नहि जाना अथवा गय तो अनेक प्रकार का विघ्न भे शस्त्र से चोट लगी नीश्चय मरणो का दर भय है कहि के जाना ना॥७५॥ शुक्लपक्षा द्वितीया यां अर्को भवति चन्द्रमा॥ दुस्पनेलाभ दे पुत्रा सो मे सो व्य प्रजायते॥७६॥ तस्यार्थ हे देवी शुक्ल पक्ष का द्वितीया में सोमवार में चन्द्र नाडि वाहि चले तो तस पुत्र सका शुभ फल भे लाभ हुने का देखि परेगा और फेरी कृष्ण पक्ष का द्वितीया में आईतवार परी के सूर्य नाडि वाहि चले तो तस पुत्र सका शुभ

लभै लाभ प्राप्ति होजायेगा॥ २६॥ सूर्योदय सदा सूर्ये चंद्रो चंद्रदयो भवेत॥ सो ज्ञानि सर्वकार्यानि दीवा रात्रौ गतागत॥ २७॥ तस्यार्थ हे पार्वती सूर्य नाडि का उदय वेला मे सूर्य नाडि उदय होगा तो फेरी और चंद्र नाडि उदय वेला मे चंद्र नाडि उदय होगा तो तस पुरुष का मै पूरी का मनका वांछित सिद्धि होजायगा कि सब्दा सो कहे तो रात दी चंद्र नाडि सूर्य नाडि अपना स्वभाव से रित मे गवहि वाले आये सेओर का मनका वांछित हुवा है यह वात और मनुष्य से नहि जानेगा कहि जानना॥ २७॥ चंद्रकाले दयो सूर्ये सूर्ये चंद्रदयो भवेत उद्वेग कलहो हानि दुःख सर्व निवारयेत॥ २८॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी चंद्र नाडि वही चलने का वेला मे सूर्य नाडि वाहि चले तो फेरी और सूर्य नाडि वाहि चलने का वेला मे चन्द्र नाडि वही चले तो तस मनुष्य का वरे उद्वेग कलह दुख सोक मन मे संताप सब का मनका वांछित अरीष्ट भारिष्ट होजायगा की सब्दा सो कहे तो विपरीत नाडि वहे से कहि के जानना॥ २८॥ प्रथमे महाउद्वेगो धनहानि द्वितीयक॥ तृतीये वागमनेप्रोक्तो ईष्टनाश चतुर्थक॥ २९॥ तस्यार्थ हे वरानने प्रथम पहर मे यो देह मे तत्व को उदय हु

ने का वी परीत हुवे तो वरे उद्वेग हुवेगा फेरी दो अ पहर
मे होगा तो धन का हान्य होगा फेरी तेश्र पहर मे हो
गा तो अपना घर छोर के बाहेर का जाना पडेगा फेरी
चौथा पहर मे होगा तो ईष्टामित्र का हानि गा हुवेगा
कहि के जानना ॥७९॥ पंचमराज्ये विध्वसःषष्ठे स
र्वार्थ नाशनम् ॥ सप्तमे चन्याधि आनि अष्टमे मृत्युमा
दिशेत् ॥८०॥ तस्यार्थ हे देवी पाच पहर में राज्ये को वीध्वं
स हुवेगा फेरी छ्थो पहर मे सर्व अर्थ को नाश हुवेगा
फेरी सातो पहर मे रोग व्याधि से पिडा हुवेगा फेरी आ
ठो पहर मे अपना प्राण का मृत्यु हुवेगा कहि के जानना
चाहिये ॥८०॥ कालत्रयादिनान्यष्टौ वीपरीतपदाभवे
त् । तदा दुःख फलप्रोक्तो कीचिन्यतस्य शोभना ॥८१॥
तस्यार्थ हे पार्वती त्रिकाल वेला सम आठ दीन तक
वीपरीत भे स्वर वहि चले तो दुःख अष्ट फल देनेवा
ला होगा फेरी और किचित रित सेग स्वर वहि चले
तो थोरे रेज सलाभ हुवेगा नाश नहि हुवेगा ॥८१॥ प्रा
तमध्येदयो वंद सायकाल दिवाकर तदा तिष्ठ जयला
भ विपरीत च दुःखदः ॥८२॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी सो
मवार का दिन में विहान और मध्यान में चन्द्र नाडि वहि च
ले तो फेरी और शीघ्र काल में सूर्य नाडि नहि चलि

के अष्ट होजाय तो तस पुरुस का नित्य जय लाभ प्राप्ति हो
जाय गा फेरि आगे कहि आया का स्वर में वि परीत भेव
हि आवे तो तस का दुख सोक का ताप लगे गा कहि के
जानना ॥ ८२ ॥ वा दक्षि णो वा पि तत्र शक्ति मतो हि वा ॥ ल
भ्या तत्य दमा सो वा जाया भवती सिद्धि दा ॥ ८३ ॥ तस्या
र्थ हे वरानने यो देह में वा य स्वर चले तो भि और द
क्षि ण स्वर चले तो भि जो न फि स्वर वहि चलते होंगे
न फि मे शिव शक्ति हुन सँग साथ वहि चलते हे फे
री और कोई समय पर देश जाना परे तो जो न फ्र गन
फि स्वर वही चले सो हि न फि का पैर दर्वाजे आगे धरि के
चले जाये तो सब का न कार्य शुफल लाभ सिद्धि दा
यक हुवेगा कहि के जानना चाहिये ॥ ८३ ॥ पंडु वारे चतु
र्पि दः पंच पादे च भास्करे ॥ यदि चगव नेश्रेष्ठ साधु
वन चात्रे य ॥ ८४ ॥ तस्यार्थ हे देवी सोमवार का दीन दक्षिण
क्षि मादि शा मे जाना करना चाहे तो पंडु नाडि चलाई पूरी
वार पाउ आगे धरि के चली जाय तो कार्य सिद्धी होजायगा
फेरि और पूर्व दिशा उत्तर दिशा जाना करके जाना चाहे
तो आई न वार का दीन सूर्य नाडि चलाई पूरी पा च पाउ
आगे धरि के चली जाय तो अैसे श्रेष्ठ हुवा का साई न पर
गमन करि के चले जाय तो सं पूरी कार्य सिद्धि होई के
मिलो क्या भि वस्य करो का समर्थ होता है कहि के जानना ॥ ८४ ॥

वह समपदा कारे: रविसु विषमसदा ॥ इरा पाद पुर कृत्वा यात्रा भवति सिद्धि दा ॥ ८५ ॥ तस्यार्थ हे पार्वती कोई दोन मे न जाना चाहे तो चंद्र नाडि चलाई समपाद लेके जाय तो शुभफल होजावे गा फेरो और कोई दिन मे गमन जाना चाहे तो सूर्य नाडि चलाई विषम पाद लेके चलिजाय तो कार्य शुभ फल होजायगा और न जानो सदा सर्वदा इरा स्वर तर्फ पाउ अगारि करके जावे तो सर्वसिद्धि होजाय गा ॥ ८५ ॥ यत्र स्वजेव हृत्वायु: तस्मे रा प्राण देवता ॥ स न पुरेव पद दत्वा लभते वांछित फलं ॥ ८६ ॥ तस्यार्थ हे सुंदरि जब परदेश का गमन जाना चाहे तो जो न अंग तर्फ स्वास वायु चलते हो सो हि वायु नाक वाले रोकी कर समाधि के उसे तर्फ का हाथ पाउ अगारि चलाई गमन जाय तो जो मन में वांछा करके जाय सो कार्य सीद्धी होजायगा मनकि इच्छा फल प्राप्ति होजायगा इस बात में संदेह नाहि करणी ॥ ८६ ॥ परहारेपर पहे: ग्रहणि गम नोदिव ॥ येअंगे वहते वायु ग्राह्य हस्त स्पर्शे गमे ॥ ८७ ॥ तस्यार्थ हे परमनने आफना धर्म सेदान पुण्य किया का घर मे जाना चाहिये तो जिस अंग गमर्फ स्वर वायु चलेगा तिस अंग गमर्फि का हाथ या पाउ आगे पसारि के गमन करि जावे तो बहुत साधि शुभफल होजा

जायगा कहिके जानना ॥ ७ ॥ बहुनैकलहोनैव कैव कैनापि
किंचने नीपर्तेनुबेनैव सर्वोपद्रविवर्जितं ॥ ८८ ॥ तस्या
र्थ हे देवि ईस प्रकार स्वर का वीचार कर गमन कर जाय
तो तस पुरुस का हानि कभि नहि होगा और स पुरुस का भिम
यनहि और स्त्री पुत्रादि धन उपद्रव नाश होई के कुशल
आनंद सुख से घर आवेगा कहि के जानना ॥ ८८ ॥ पुरु
षेषु नपन्थाः स्वः अपि शुभ दायिनः ॥ नरो गेषु कर्मस्थः
कार्यसिद्धी समिरिता ॥ ८९ ॥ तस्यार्थ हे देवि अपना गुरु
वा और बंधु जन हा परिवार हुवा और राजा राजदर्सन हु
वा और शुद्ध पवित्र शुभ कर्म काई सा करी वा लाभ मनुष्य ने
प्रेम से शिव ब्रह्म रूपि स्वर का प्रेम भाव से अभ्यास करते रहा
होगा तो सदा तस का वढि वा शुभ फल देने वाला है कहि के जा
नना ॥ ८९ ॥ अरिचौरधनाः प्राः अपवादादिभिर्ग्रहाः ॥
कर्मावलरिक्ताश्चः नयलाभ जुवार्थिभि ॥ ९० ॥ तस्या
र्थ हे पार्वति शत्रु सेलर नेका चोर पकरी का धन वधि
करी का कार्य सिद्धि करी का वाद विवाद करी का अकला
का जय लाभ हुने का सुख आनंद मिलने का ईतना का
र्य में सूर्य नाडि चलते मेकरेतो सब कार्य में शुभ फल देने
वाला है कहि के जानना ॥ ९० ॥ इरदेशोदिधातव्यः अमने
नशुभाफलं ॥ अंतः सूर्यादेशादिक्षे तरशोनिते कैवन

॥८१॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि उत्तर देश में गमन करने में चंद्र नाडि उदय होने में करणी फेरि और सूर्य नाडि चलने में गमन करे तो पूरणी स्वर लेके जावणो तस पुरुस का सब कार्य सिद्धि होगा और कुशल आनंद से घर आवे गा कहि के जानना चाहिये ॥८१॥ यत्किंचित्पूर्व देशे स्यः लाभादि समयगम। तत्सर्व पूरणी नाडि यः जायते विकल्पक

॥८२॥ तस्यार्थ हे वरुन ने किंचित आगे तुमको उपदेश कि या का लाभ हुने का फेरि और कार्य करने में विघ्न होने का निमित्त फेरी पूरणी नाडि लिये कार्य का मन करे तो सी पूरणी विघ्न नाश भये पाछे सब काम करने में शुभ लाभ हुने का तस पुरुस कि प्राप्ति होजायेगा ॥८२॥ शुन्यनाडि पर्येष्टः यत्पूर्व प्रतिवादितम्॥ जायते नाश भावैव यथा सर्व समाप्तितम्॥८३॥ तस्यार्थ हे देवी आगे कहा का विपरीत शुन्य नाडि का छोरकर पूरणी नाडि काले के कार्य का मन करे तो पूरणी भये कार्य सिद्धि होगा कहि के जानना फेरि और शुन्य नाडि में शुभ का मन करे तो कि अशुभ काम करे तो कि नाश हो जावेगा कहि के जानना ॥८३॥ व्यवहारे मलो वाटः दोष वि

वादि पीवका॥ कपिलास्वामिरे एव: पूर्णिस्वा लभयकर
र॥८४॥ तस्यार्थ हे पार्वति व्यवहार करने में और शत्रु
से संवाद विवाद करने में और विद्या कर्म से पर पीव
का दुख पिजा देने में और छल कपट करने में और चो
रकर्म करने में और भयंकर जगा जाने में यत्न नेक
र्म करने में पूर्णिस्वर होने में कर्णी जो निर्भय से
का र्य सिद्धि होजावेगा और संदेह नहि करणी॥८४॥
उरदेशे शुभचंद्र: निर्विघ्न तत्र सिद्धिदा॥ प्रवेश का
र्य हेतुच सूर्ये सिद्ध प्रसस्यते॥८५॥ तस्यार्थ हे सु
न्दरी उरदेश गमन करजाने में चंद्रनाडि चलाई गम
नजाय तो तस्य मनुष्य का निर्विघ्न होई के शुभ सिद्धि
पावेगा फेरि और घर प्रवेश करने में सूर्य नाडि चलते
में जावे तो तस्का जल्दे का र्य सिद्धि होगा कहिके जान
ना॥८५॥ चंद्र नाडि विष हेति: सूर्ये नाडि वसेन यदि
॥ सुखमणायी भवेत्तो क्षा: य को देवाकि धास्मिता॥८६॥
तस्यार्थ हे वरानने चंद्र नाडि चलने में शुभ कर्म भाव
भक्ति ज्ञान ध्यान का न कार्य जो कुछ करेगा तो वे बयनु
पान उपद्रव से पूर्णि का मारि के नाश कर देगा हे फेरि

और तत्व का ध्यान योग समाधि करने से सब विषय का
रहीत कर मन लय होजाते हैं यह योगी का मोक्ष पद हुवे
का है फेरि और सूर्य्य नाडि चलने से तत्व का ध्यान करने से
प्राण का मारने वाला का लका वस्य करवेता है फेरि और
सुषमणा नाडि चलने से योग समाधि करे तो जिव का
मोक्ष सिद्धि करवेता है तस्य हे पार्वती प्राप्ति नाम से
एक ब्रह्म कालि न प्रकार का काम कार्य शुभ अशुभ क
र्म सब करवलाई रहता है कहि के जानना ॥ ९६ ॥ प्र
योजन योजनादि: योजन स्थाने व्य योजनात् ॥ कार्य्यानि बंध
निर्जीव: कथ मुक्त समाचरेत् ॥ ९७ ॥ तस्यार्थ हे देवि प्र
योजन नाडि से योजन सिद्धि होता है कैसी है कहे तो यह जिव
रूपि प्राण जो है सो काम कार्य से सुर्ख कर्म शुभ करने
वाला फेरि और सब व्यवहार वा वस्या बंधन मेरने
वाला है ईसवास का निश्चय करके विचार करो चा
हिये तो सुन ॥ ९७ ॥ शुभाशुभ कार्य्यानि: शिवयो
र्द्वारि सपद ॥ तदा कार्य्यानि शेषेन कार्ये नाडि प्रचा
लनम् ॥ ९८ ॥ तस्यार्थ हे पार्वती योद्वह मे गुप्त भेद
से ईगला पिंगला और सुषमणा नाडि चलि रह
ने वाला जो नहे सो एक दिन जिव रूपि स्वास वा

युग्माथुग्म पहर अदलाबदला करके वरोवर किये
हुये सेंतहा हानि यापर पैचने योका मकरे सेंवनेगा और
रयोका मकरे सेंवीगरेगा कहिके कोई किसिने की नहि
जानताहैं और केरि जिस्का शुकर्म कुकर्म जैसा तैसा
कर्म अनुसारनिरन्तर सेंचन्द्र सूर्य्य सुक्ष्मशाना डिआ
के चानि किनी हैं कहिके जानना ॥८८॥ स्थिर कर्मका
रयचतुर देशगमस्कथा ॥ आश्रामादौ प्रसादेवः व
स्तुनागहेतेविच ॥८९॥ तस्यार्थ हैं कि स्थिर कर्म
करने मेंऔर दुर देश जाने मेंऔर घर प्रवेश करने मे
केरि राजदर्बार जाने मेंऔर गना पहेरने में केरि दे
वस्थल जाने में कोई वस्तु लेने मे यात्रा और कर्म करने
मे चन्द्र नाडि चलने मे करे तो सब का सिद्धि होजावेगा
कहिके जानना चाहिये ॥९९॥ वापि कुपतथा गादि प्र
तिष्ठा व्यवहारेथ ॥ पात्र दाने विवाहे च वस्त्रादि का
रयुषशो ॥१००॥ तस्यार्थ हैं वरण्ड तेतला उवनाउ
ने मे और कुवा वनाउने में और रथ वनाउने मे दे
वस्थल प्रष्ठा करने मे और व्यवहार करने में और भा
रा वर्नि दान करने मे और वस्त्र कपरा पहेरने मे और

रश्रृंगार करने मे गहना पहेरने मे ॥१०० ॥ शान्तिकपौ
ष्टिकञ्चैव: औषधिचरसायन ॥ स्वामि दर्शने मित्रो
पनिषेचक्षिश्चैव ॥१०१॥ तस्यार्थ हे देवि शान्तिक
र्म करने मे और पुष्टी कर्म करने मे और औषधि करने
मे और सुवर्णि बनाने मे और स्वामि का दर्शन करने
मे और मित्र का भोग धारन करने मे और वेपार करने मे
और खेति करने मे यत्न नै और कर्म करने मे पाछे हाल
कहूंगा ॥१०१॥ गृहे प्रवेश सेवाञ्च: कृषि बिचबीजवा
पने ॥ शुभ कर्म निगमने: निर्गमे च शुभा शा स्त्रि ॥१०२॥
तस्यार्थ हे पार्वति गृह प्रवेश करने का और सेवा भक्ति
करने का फेर खेति करने का और बीज बोने का फेर शु
भ कर्म करने का और परदेश गमन करने का फेर विवाह
रचाने मे यत्न नै कर्म करने मे चन्द्रनाडि चलने मे करेतो
सैद्ध करने कार्य मे शुभ फल जस लाभ सिद्धि दायक होजा
यगा कहीके जाना चाहिये ॥१०२॥ विचारे आश्चक
र्म: वैद्यराज वदर्शन ॥ शिव मोक्ष य धर्मे वादि शा
दि मंत्र साधन ॥१०३॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी बीचार
र्म करने मे फेर वैद्यराज दरशन करने मे फेर अच्छ राजि

वात्मा को मोक्ष हुवेका शेषाभक्ति करने से फेरि दान पूण्य
धर्म कार्य करने से फेरि चारों दिशा गमन कर जाने से फे
रि मित्र साधन करने से ॥१०३॥ कालवीरा रसत्रुवः व
नुषेदग्रहागमः ॥ कल्पाव्याधिकेचिंतास्तः स्वामिशे
षाधनेस्तथा ॥१०४॥ तस्यार्थ हे वरानने काल का भ
यनिवारन नि मित्त विरा रविचार करने से और शत्रु
संग विवाद करों का फेरि देह को रोग व्याधि का उपाय
करों का और प्रकना स्वामि को दर्सन करों का रीति करी
स्त्र का बोध विचार करों का ॥१०४॥ जजास्वानोहने
धनिः जजास्वानचवाधने ॥ परोपकारनेचैवः ध
नवृद्धि नीचस्तथा ॥१०५॥ तस्यार्थ हे देवि हानि को से
कार बेलरों का फेरि कुटापाल न करों का और फेरि
हानि कुटा वाधने का फेरि परउपकार करों का और फे
रि धन वृद्धि करों का ॥१०५॥ गितवाधादिष्टपादिः न
थाशास्त्र विचारने ॥ पुरग्रामनिवेशेचः तिलकछ
त्रधारने ॥१०६॥ तस्यार्थ हे पार्वती गित गाउने से फे
री नाचन वाजने का और नानाजर हका शास्त्र बोध विचा
र करने से फेरि गाउ सहर देश मे उलरों फिरने का फे

रि और राजा का सिंहासन देने का हाथ लगावने का ॥ १०६ ॥ कुविनां दर्शनं चैव विषविचारयेत्तथा। अन्नवाहिका
ते चैव धातादि दानग्रहे ॥ १०७ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी योगी
कुवि को देखने का और विषविचार करो का फेरि अन्नवाहि
करो का और काठ्ठ करि को वेपार करो का ॥ १०७ ॥ स्त्रीनी
शृंगारशयनं जलवाहिगमनेच ॥ गुरु पूजा विवादिनः मा
रणं चवरानने ॥ १०८ ॥ तस्यार्थ हे वरानने स्त्री का शृंगारि
करने मे फेरि कपरा पहेरने मे और वरपा विचार क
रने मे फेरि वाहेर गमन करो का और शिवरो अपना
गुरु को पूजा करो का और शत्रु का विष बनावने का फे
री अपना वैरी को मारो का यत्न नेका ये कर्म मे चंद्र ना
डि चलने मे करे तो सै पूरा का वे सिद्धी दायक होजाय
गा कहि के जानना चाहिये ॥ १०८ ॥ ईडायां सिद्धि दे प्रो
क्तो योगाभ्यासादिकर्मसु ॥ तत्रापि वर्जयेद्वायुः सोज
स्वकासमेतवचा ॥ १०९ ॥ तस्यार्थ हे देवि चंद्र नाडि चलने
मे आगि तत्व चले तो तस्का वर्जित करो फेरि और आका
श तत्व चलने मे और फेरि वायु तत्व चलने मे योग का
अभ्यास करो का मा भी वढिया होता है और कुछ क्रिया पर
पंच का का सकार्ये कुछ क्रिया न करे कहि के जानना चाहिये

॥१०९॥ सर्वकार्य्याणि सीध्यंति दीवारात्रीगतापि॥ सर्वे
शुभकार्ये चंद्रवार प्रसस्यते॥१९०॥ तस्यार्थ हे पा
र्वति ऐसि प्रकार सें शुभ अशुभ नाडिका वीचार करकें कि
या होगा तो दिन मेंकरे तो भि रात्री मेंकरे तो भि सब सें पू
र्ण शुभ काम कार्य करीका शास्त्रे चंद्र नाडि चलने मे चंद्र
वार का दिन मे करें तो सें पूर्ण कार्य सिद्धि दायक शुकन
होजायगा कहि केजाना चाहिये॥१९०॥ अथ पींगलाक
ठिन: कुरविद्या शांपठरो॥ पाठरो तथा स्त्री संजे: मा
हानें का दि रोहने॥१९१॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी अब सूर्य
नाडि का शुभ अशुभ कार्य करीका बात सुन: कुरक
ठिरा विद्या पढने मे फेरि और पाठ करने मे फेरि और
स्त्री वा: वेस्या सें भोग काम करने मे फेरि और नदि पा
र समुद्र पर जहाज जाना उपर चढि के पार उतरो का॥१९१॥
भव कार्य कुरु पाठो वीर मंत्र सा धने च॥ जव टजाहि
प्रकाशी: शत्रु शांविष मादि शोर॥१९२॥ तस्यार्थ हे व
रानने श्रेष्ठ कर्म करने मे फेरि और दास दास नाउ ने मे आ
ने मे फेरि और वीरका मंत्र साधन करने मे फेरि और
वरे बलवान सें गज वर जाहि कर केलरने का फेरि और

और शत्रु वैरि का विष बनावने का ॥ ११२ ॥ शास्त्र भाषा नगन
ने: मगायां पशु विक्रय ॥ ईंट का काठ पाषाने: तत्य बेसा
दार रो ॥ ११३ ॥ तस्यार्थ हे देवि शास्त्र लिखने का जाने
में और वन जंगल में शिकार खेलने का जाने में केरो प
शु पक्षि पालना कर्ने मे केरि ईंट मोलने काल कटि का
कार्य मे और पथर का कार्य मे ॥ ११३ ॥ गाव भास्ये पत्रत
त्रे: दुर्ग पर्वत रोहणे ॥ धूत चौर्ये गजाश्वादि रथ सा
धन वाहने ॥ ११४ ॥ तस्यार्थ हे पार्वती भुल गया का शास्त्र
यंत्र मंत्र तंत्र भोजकर विचार करो का केरि और वरेदु
र पाहार पर्वत में चढ़ने का केरि और जुवा खेलने मे का
केरि और चोरि करो का पकरो का केरि और हाति पक
रो का वा धने का केरि और रथ पर सवार कर के जाने का
॥ ११४ ॥ विश्वास राज्य मन: सतृष्णो अभ्यास्यचा ॥ ईदृशा
नइ दिस्थिते: सयोगी मोक्ष दायक ॥ ११५ ॥ तस्यार्थ हे
सुन्दरी जिस ने यह ज्ञान का हृदय मे विश्वास आवे केरि और
र जिस का रात दिन सदा सर्वदा वे राज्य में मन मगन हो
इ रहे केरि और जिस का चित मे आत्मा ज्ञान में सतृष्ण
ग करो का प्रेम लगि जाये केरी और जिस का स्वभा
व थे का मन में बैठि के निरंतर अभ्यास करो का वा

निहोय के क्रिया करके फेरि और ईसरा हृदय मे उ
दय होई आवे तो तस पुरुस का जिव बस कि हुवे का सिद्धि
प्राप्ति होजायगा कहि के जानना ॥ १९५ ॥ बरोसु माहि था
दिनो गजास्वा हतेतथा ॥ यदि जलो घटरशो भेष
जोतेदिलेबरे ॥ १९६ ॥ तस्यार्थ हे वरानने गड हा उ
त भैसी हाथि कुटा ईन पशु को लेने दिन का फे
रि और वरे सुहनादि नार पार उतरी जात का फे
रि और औसधि करने मे पूरा पुष्ट कले बने मे
॥ १९६ ॥ हुतगमनरिराज्य मारशा मोहनेसंभेद
उवस्यतथाकार्ये विद्वेषोच्चाटनेवस्य ॥ १९७ ॥ तस्या
र्थ हे देवि काहि हुत पथावने का फेरि लेना देना का
रवार बोजने का फेरि शत्रु वैरि का वस्य करो का फे
री हुस्मन को मारशो का फेरि और स्त्री का मोह देवा ई
वस्य करो का फेरि और शत्रु का घर मे कलह करो
का फेरी और कोई चीज लेन मनुष्य को उच्चाटन करो
का ॥ १९७ ॥ बद्धहलेवेरि युद्धे सनरराजदर्शने ॥ मो
जस्माने व्यवहारे करकर्मरविभुभ्रम ॥ १९८ ॥ तस्यार्थ
हे पार्वती हाथ मे बद्धलेके वेरि संग युद्ध करो का फेरि

कोई न मिलने का मिलाप करो का और राज दर्बार में राजा
को दर्शन करो का फेरि और व्यवहार कर्म लेने का देने का
फेरि और आदरमान से भोजन करो का और वरेजवर
जाति कुर कर्म हैं यात नै सै पूरा कर्म कार्य सूर्य नाडि च
लने में करे तो सब सिद्धि दायक हो जायेगा ॥ १९८ ॥ भो
जने चस येने च : स्त्री गाव स्वादि कर्मणि ॥ सूर्य नाडि
स्त्री गमने कार्य सर्व दा च चे ॥ १९९ ॥ तस्यार्थ हे सुद
री भोजन करने में और पलंग पर सुवने में और स्त्री
जन का वस्य करने में ॥ और फेरि स्त्री का वंद नाडि चलने
में और पूरुस सूर्य नाडि चलने में स्त्री का सै भोग क
रे तो का सिद्धि जन्मी जल्दै अप गा वस्य में आ जाता है क
हि के जानना ॥ १९९ ॥ कुरा शि सर्व कार्या शि : सर्व रा
शि वीहा नी च ॥ तानि सिद्धानि सूर्य रा मात्र कार्य वि च
रय ॥ १२० ॥ तस्यार्थ हे वरा नने सर्व सं पूरा कुरने
में काम कार ज : जव रजा दि करो का जो न हे सो का र्य
का शास्त्र वंद नाडि धोर के सूर्य नाडि चलने में करे
तो कुर कार्य कि या का सै पूरा सिद्धि दायक हो जा येगा
॥ १२० ॥ अथ सुरा का काल धरा ले रवने हे ॥ धो रो वा

मे क्षेरो दक्षिरो: वदायहंति मारुत।। सुक्ष्मरा हान्यविस्त
यो: सर्वकार्ये निस्फलं च।। १२१।। तस्यार्थ हे देवी तुम्ह
व सुक्ष्मरा काल करा कहुंगा: जब सुक्ष्मरा नाडि चलेगा
तब उस्का स्वभाव छिरभर मे वायु तर्फ चलते है रो छिरभ
र मे हिने तर्फ चलते है फेरि ऐसे स्वभाव से सुक्ष्म रा
उठि ग्या ई स्वास वायु चलेगो सो नि सज्जन ने समुझि उक
कर ग्यास न पर वैठि के मन मन पवन साधि के एकचि
त कर नीरंतर हृदय मे तत्व को विचार करते रहगधि
सवा से कहें तो ग्रा फगा का वास से सुफल जय लाभ का
सिधी करो निमी नग्रो रुनिया पर पैच का काम का
रज कु छूमि न करे: करे तो सब कार्ये विघ्न उपड्ड हो
है के निस्फल होजायेगा।। १२१।। तस्य नाडस्थितात्व
हि: वहि चकाल रूपिरा।। वीज सर्व विरा नि या: सर्व
कार्ये विनाशन।। १२२।। तस्यार्थ हे पार्वती ईगला पिंग
ला नाडि का वीच मे काल रूपि अग्नि तत्व वैठि रहता है: है
नग्न अग्नि तत्व जो रहे सो पहुंचा विघ्न वाल है है न का वि
चार न करके काम का रज करेगो सें पूरा कार्ये का वि
घ्न उपड्ड करगा शकर देगा है कहि के जाना चाहिये।। १२२।।
क्षेरो वा मे क्षेरो दक्षो: वीज मे भय सादि शेरा।। वीज
रो न फल तस्य: रा तं वंध वरा नये।। १२३।। तस्यार्थ हे

सुन्दरीयो देह में विषमनाडिका जो न है सो नाडि करो
भयंकर देखे तो भि दरला जाता है कैरी और अपना ला
ज छोड़कर कायेवा वा कि किनी है कभि दहिने न कि कि
नी है ऐसे कि रनेवाला का वी षमनाडि कहता है कहि
के जाना ना ॥ १२३ ॥ उभयोरवसंचारे विषमतविडुर्धा
॥ नकुर्यात्परकर्मणि: तत्फलतिसफलभवेत् ॥ १२४ ॥
तस्यार्थ हे वरानने विषमनाडिका वि परित करके वहि
चले तो और कि का मा कि न करे और न नाडि के कंरे तो
सं सूरी का मउत्पात वि घ्न उपद्रव करना शकर के वि स्प
न कर देता है कहि के जाना ना वाहि यो १२४ ॥ जिवते मर
रो प्रस्ने लाभालाभौ जयाजयो ॥ वीषवे विपरीतस्व
रे तज्जगादिश्वरस्य ॥ १२५ ॥ तस्यार्थ हे देवि रोगी म
नुष्य न मरे रोग ला जिवने का रोगि है न रोगि विषमनाडि
विपरीत करके वहि चले वषत में रोगि ने रोग का प्रस्न
करे तो निस्फल होगा कि सवास्ने कहे तो विपरीत हुवा
का वषत में प्रस्न करे तो न मरे रोग ला जि उरहने वा
ला कि प्रस्न का गुरा स्वभाव से तो न रोगि मर जा य
गा जो न विषमनाडि का का उल्टो चलने वाला है क
ही के जाना ना ॥ १२५ ॥ ईश्वरविना यका वे: वेगा भवा

शादिकर्मसु अन्यतन्त्रनकर्तव्यः जयाला नौ सुखे सुधि ॥१२६॥
तस्यार्थ हे पार्वती यो देह मे आकास तत्व और सुखता
नाडि कुरविषम कहता है तस अर्थ रजा तेजाला के श्रीगा
ह देव जगदिश्वर का नाम स्मरण करते रहना और रजा
तेजाला नाडि वहि मान के समाधि योगे का अभ्यास
करते रहना और कोई काम नहि करे ॥१२६॥ सूर्ये नाडि
प्रवाहेच सुक्ष्मरागे गमे नाडि ॥ आपं च प्राप्ति वदवात्रु
निष्फलं च सर्व वाक्य ॥१२७॥ तस्यार्थ हे सुदृष्टि सूर्ये ना
डि वाहि चलते मे फेरि और मध्य मनाडि कला का सुक्ष्म
रागा नाडि उठि आई सूर्ये नाडि का साथ पाई दुर मिली
के वहि चले तो उस वखत मे कोई मनुष्य ने दुस्मन शत्रु
का आपदि पसो भि फेरि और कोई मित्र का आशिरवाद
दिये सो भि निष्फल होजायेगा कहि के जानना चाहि
ये ॥१२७॥ नाडि सक्रम समरोक्ते नाव सक्रम एव तथा
॥ शुद्ध कि चीन कर्तव्यः पूरापूरा दि कोटी भि ॥१२८॥
तस्यार्थ हे वरानने सूर्य नाडि वाहि चलते मे फेरी
और सुक्ष्मरागा नाडि वहि चाले उठि आई दुर का साथ
पाई चले तो तस वेला मे रानी उहि मान के सुदृढ
र योगे का अभ्यास करते रहना फेरी और शुभ

कर्म दान पुण्य तीर्थ व्रत पूजा पाठ लोगों का मन्त्रि न करे
तब का स्मरण ध्यान मात्र करे॥ १२८॥ विषस्य चदय
सा यामस्य सा पि न चिन्तयेत्॥ जाया हानि नरस्य स
कुलेशो न सं संशय॥ १२९॥ तस्या अर्थ हे देवि देह का या
पु पं रिन कर के वाहि चलने में फेरि और सुक्ष्म गा
ना डि उठि भाई साथ लगाई चलेगा तो विष मा डि
कला का उपै दुख कहि के जाना फेरि और सुक्ष्म क
र्म होगा तो भि अशुभ कर्म होगा तो भि कोई का मन
करे करे तो अपना देह का दुख कैसे होगा और स
पुत्र का दोष परेगा॥ १२९॥ पुरोवा मे अहि वैश्रो: दक्षि
णो पक्ष तो रवि॥ इडा रि न्ना वि को यथा: तथो वैडे श
के तदा॥ १३०॥ तस्या अर्थ हे पार्वती वैडना डि इडा भैरव
ह होने मे पा छे दाहिने तरफ जुवे ना डि वही चले तो इ
डा रि न्न से कौ कहते हैं फेरि और तस्मै रि न से
सधै वाहि चले तो तस मनुष्य का सदा हमें सुख फ
ल जस लाभ का सिधी प्रकास हो जावेगा तस अर्थ
ने समे वि परीत हो जावेगा तो वि स्फल हो जा वे
गा॥ १३१॥ उडि षा मा ग्र तो उ तो स यो वा मा प थि

स्थित ॥ एवं दक्षयथा स्वाथा: सूर्ये वहिगतश्चुभम् ॥ १३१ ॥
तस्यार्थ हे सुंदरि श्रीवायति रचं द्रनाडि वहि चलने में को
ई तुम ने कार्य का प्रश्न करे तो कहि देना तुमारा कार्य सिद्धि हो
जायगा फेरि और सूर्य नाडि श्रीवहि चले तो मे को ई तुम
प्रश्न करे तो तुमारा कार्य सिद्धि हो जायगा कहि देना ॥
॥ १३१ ॥ अनादि विषयभासं: सिद्धी हो रात्रि राकुला ॥ परे तु
क्षमया वि। ति यां: मास ध्यास सिद्धि रुच्यते ॥ १३२ ॥ त
स्यार्थ हे वरानने हे गला पि गला का वि वमें रहने वाला
तु क्षमया नाडि के शाहें कहे तो अनादि हो विषय महें स
धि हे निराकार हे निकार हे परमेश्वर हे और बहुत
गुप्त हे रहने वाला योगि जन योग का अभ्यास करने में
प्रकास हुने वाला और फेरि आदि सनातन का कुल हे
और जिय मरने का रोग से रहित हे कहि के गाते ना ॥
॥ १३२ ॥ तस्मै ध्यास्मै सिद्धि मित्यो हुस्मै ध्यास्मै निगद्यते ॥ वीयुव
तस्मै सिद्धि ग प्राण ॥ १३३ ॥ तस्यार्थ हे देवि मंत्र का सिद्धि
कहने का नहि फेरि और रात दिन साग: वीतन का मा
त्र सिद्धि कहते हे फेरि और कोई मनुष्य ने वि रामि में
वी परिन नाडि वि परिन वि षय में चलने प्राण से दे
ह का छोर जाने में मात्र सिद्धि कहते हे और सिद्धि नहि

हे जाननावाहिये॥ १३३॥ इति श्री शिवोउमासम्वादो
कनवप्रकरणाचित पवनविजयनाडिभेदोनामप्र
थमोध्याये॥१॥ इति श्री शिवोउमासंम्वादोकनवप्रक
रणाचित पवनविजये नाडिभेदोनामप्रथमोध्या
ध्याय॥१॥ श्रीदेवउवाच॥देवदेवमाहादेव सर्वसंसा
रतारकम्॥ स्थितंत्वदियहृयरहस्यवदमेप्रभु॥
॥१॥ तस्यार्थ॥ पार्वतिनेश्री माहादेवकाआगेकरजो
रिके विनिकरनेलगा॥ हेजगदिश्वरउरः सवदेव
तासेंभिदेवताहुवाकायोअसारभवसागरमेंडुबी
यापरपैवकाजमपाईकेभवसागरतरनेकाअतप
तहोईरहाहैतस्कारणासेंसास्त्रजानिपुरुषमनुष
कोपारलगावनेकानिमितउमाराहृदयेमेंस्थिरर
हाकाशुद्धपवित्रनिर्मलहुवाकातत्वआत्मासाक्षात्जो
नहेंसोतातमेरेकोआगाहोईकेहिसुनाउ॥१॥ ईश्व
रउवाच॥ स्वरसातरहस्यउः नकिंचितईष्टदेवता
॥स्वरसातरतोयोगीः सयोगीपरमोमत॥२॥ त
स्यार्थ श्री माहादेवआंगेकहनेलगाहेपार्वतीसुन
स्वरसातजेसेंश्रेष्ठपरमरहस्यशुद्धपवित्रनिर्मल

अर्थात् मोक्ष आत्मा ज्ञान का आगे और अपना ईष्ट देव
ताभि करे नहि सकता है फेरि यो स्वर दयज्ञान जो नयो
गि ने जानता है समझता है सो योगिका में महादेव का
सेवक भक्ति जनाई नहीं है और तस योगी का मेरा वहुत
पियार लगता है कहि के जानना चाहिये ॥ २ ॥ पंच
तत्व भेदि : तत्व सर्वं विलियते ॥ पंच तत्व पर
श्रेष्ठ तत्व एव निरंजन ॥ ३ ॥ तस्यार्थ हे सुंदरि यो दे
ह मे सैं इर्शी वस्तु पंच तत्व ने श्रष्टि करके सब जिवाम
का च मत्कार करके चलते फिरते रहता है फेरि इस का
त मे वैठि के अभ्यास करे तो तत्व तत्व मे मिलाकर
लय हो जाता है फेरि पंच तत्व देवि और श्रष्टि करने
वाला निरंजन नाहि है ॥ ३ ॥ तत्व ना न विरत्यी : सिद्धि
योगे नयोगिना ॥ अनाद्य दुष्ट विहानि : जानीति विश्व
रेतम ॥ ४ ॥ तस्यार्थ हे वरानने योगी जन का तत्व
सिद्धी हुने का ना न कहुं गा अर्थात् जो तत्व का स्वभाव
वाल चलन भेद जाने तो और सब प्राणि जन का लक्ष
ण सैं इर्शी जान्या हो जायेगा कहि के जानना ॥ ४ ॥ पुर
वामे अधो वंद्रो : दक्षिणे पूष तो रवि ॥ पुर्णि रि कृ विशे
ष तत्वान्य रीन्कृत्वा सदा ॥ ५ ॥ तस्यार्थ हे देवि वा

पन फिर अर प्रधोवायु चलने वाला चंद्र नाडि फेरि और
दहिने तरफ पाइ चलने वाला सूर्य नाडि जो नहें सो तत्कि
स्या
सदा सर्व दा रिक्त हे कहि के जान गया हिये ॥ ५ ॥ तस्थिप
तथा जो वायु राकास मे वचा ॥ पंच भूतात्मक सब जो
जानी ति जिताय ॥ ६ ॥ तस्यार्थ हे पार्वती सं इंद्रीसं
सारि लोक इनिया पर पंच का ॥ जिव रूपि देह मे पं
चतत्व से फर्क नहि हें फेरि और भुर्लोक देवि सप्त
लोक तक: नाडि का भेद प्रकक प्रथक कर के रहता है
कहि के जो जाने गा सो मनुष्य का सब इनिया पर पं
च ने उस्का पूजा करो को जो ज्ञ हे कहि के जान गया
हिये ॥ ६ ॥ सर्व लोक स्य जिवानी: न देहे चि तत्व
त ॥ भुर्लोके सप्त लोके च नाडि भेद प्रथक भव
॥ ७ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि सं इंद्रीसं सारि लोक इनी
या पर पंच का जिव रूपि देह मे पंचतत्व फर्क न
हि हें और भुर्लोक देवि सप्त लोक पर्यंत नाडि भे
द प्रथक प्रथक कर के रहता हें कहि के जानना ॥ ७ ॥
वामे वा दक्षिणे वापि उभया पंच किर्तित ॥ ८ ॥ प्रब
धातत्व विशा ष्टराकुवक्ष्या मी सुन्दरि ॥ ८ ॥ तस्यार्थ हे

वरानने चंद्रनाडि चले तो भि और सूर्यनाडि चले तो
भि पंचतत्व इनका साथ मिला करके चलता है फेरि और
रुद्राठ प्रकार का तत्व को भेद मैं कहुंगा कहि के पार्वति
कुं भी महादेव कहने लगा ॥८॥ प्रथमे तत्व संख्या चीह्नि
तीय स्वरचिह्नानि चतुर्थे धारणं
पंच ॥९॥ तस्यार्थ हे देवि पहिले तत्व का संख्या
कहुंगा और फेरि स्वास का भेद कहुंगा और फेरि
सीधि कहुंगा और फेरि स्वर का लक्षण कहुंगा और
फेरि तत्व का स्वाद कहुंगा हे पार्वती सुन ॥९॥ पंच
मे तस्य वर्णश्च शब्दे तु प्राण मेव च ॥ सप्तमे स्वाद संं
युक्त अष्टमे गति लक्षणं ॥१०॥ तस्यार्थ हे पार्वति पं
चतत्व का वर्ण कहुंगा और फेरि प्राण का गति सु
नि हुवे कहुंगा और फेरि स्वास का भेद कहुंगा और
फेरि तत्व का लक्षण कहुंगा सुन ॥१०॥ नवमे
ष्टविध प्राण विमुक्त चराचरं ॥ स्वरूपमा चरद देवि
गन्धधातु जाहारे ॥११॥ तस्यार्थ हे वरानने पंचत
त्व का वर्ण जानो फेरि छठो प्राण का जानो फेरि सातो
स्वास का जानो फेरि आठो स्वर का जानो तस्यार्थ हे दे

देवि आकाश का भव सागर तारने वाला आत्मा है कहिके
जानना और कोई किसी को तारने नहि सकता है कहिके
जानना चाहिये ॥११॥ निरीक्षितव्ययत्नेन यदा यत्पू
रकस्वरम् ॥ कालस्य वचनार्थी यः कर्म कुर्वन्ति योगीनः ॥१२॥
तस्यार्थ हे देवि सवेरे साजदेखि चंद्र सूर्य नाडि को वरा
यम से वीचार कर के वैठि रहना कि सवास को कहे तो का
लरूपी जिव का वचार ने का गिने योगी जन ने योग स
माधी का आसन पर वैठि के हमेसा अभ्यास करते र
हना चाहिये कहि के जानना ॥१२॥ कुत्तो रगुद कम
व्यः गुल्यानाशा पुटद्वयम् ॥ वदने प्रान्तं गुलि शो येद्वतंत
यो ॥१३॥ तस्यार्थ हे पार्वति योगिजन ने अेसे कर्म करना
चाहिये कुनः कान दुई आंखि दुई नाक दुई मुख एक दुई
नसा तार में दुई हात का दश अंगुलि ने सा तार में
लगा ईके रोकी रखना और स्वास का अभ्यास वल माफि
क रोक के रखना फेरि और लिंग में गुद द्वार में दुई
गोरका दुई दुरि से लगा के वैधकर रखे तो तहा तत्वका
लक्षण देखि परेगा ॥१३॥ अस्याभ्यासात् पृथिव्यादि तत्त्व
ज्ञानं भवेत् क्रमात् ॥ पितृश्चेत्तासतो स्यामे वीन्दु

भिनि सयाधिकमा ॥ ९४ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी ऐसि प्राणा
यामकरने रहनेवाला योगी जन का वासो पृथिवि त
त्व का पेट वर्ण केरि जल तत्व का श्वेत वर्ण केरि तेज
तत्व का अरुण वर्ण केरि वायु तत्व ॥ का स्याम वर्ण के
रि आकास तत्व का बिन्दु वर्ण ऐसि पंच तत्व का पां
चे वर्ण सब का ज्ञान उस योगि का प्राप्ति हो जायगा कहि
केजाता ॥ ९४ ॥ दर्पणे तस्य मालोक्य: तत्व सा संचालि
थि यत् ॥ अकारेणवीजानि पात तत्व भेद विचक्षिता ॥ ९५
॥ तस्यार्थ हे वरानने दर्पन मे देखने का जैसे अपना दे
ह कि नाक पात आउने वाला स्वास का मन ने चित रखा
हे रखलिकिने वाला पुरुष का हमेस आसन परवे थाक
र सो ध्यान से विचार करने रहना चाहिये कहि के आ
गे कहे वाला योगी जन ने कहि गया था ॥ ९५ ॥ पृ
थिव्यकि वैद्रो: त्रिकोणे नवतु लक्ष ॥ बिन्दु चिह्न तथो
ग्यय: साकारे तत्व लक्षणा ॥ ९६ ॥ तस्यार्थ हे दे
वि पृथिवि तत्व चार कोन होते हैं और जल तत्व अर्द्ध चंद्र
जैसे होते हैं केरि तेज तत्व त्रिकोन होते हैं और वा
यु तत्व वर्तुलाकार होते हैं और आकास तत्व बिन्दु

गों से कारहोते हैं इन सब बातक लाकातत्व की लक्षणा है कहि के जाता ॥ १६ ॥ देहमध्ये वहेत्पृथ्वि: वापोहृदयास्थिता गतिर्वायुप्रवाहेश्च: चंद्रो बिन्दु को सोस्थीता ॥ १७ ॥ तस्यार्थ हे पार्वति देहमध्ये में पृथ्वितत्व रहते हैं और जलतत्व हृदयेस्थान मे रहते हैं फेरि उभो तर्फ तेजतत्व रहते हैं और वायुतत्व तेर्छा कर के रहते हैं और चंद्रमा का बिंदु में आकाश तत्व रहते कहि के जाता ना ॥ १७ ॥ आपश्चेतक्षितिपीत: रक्तवर्णी हुताशन: ॥ मारुतो नीलवर्णश्च आकाश सर्ववर्णिकम् ॥ १८ ॥ तस्यार्थ हे सुंदरि जलतत्व से तो वर्णी होते हैं और पृथितत्व पिलवर्णी होते हैं और तेजतत्व लाल वर्णी होते हैं और वायुतत्व स्याम वर्णी होते हैं और आकाश तत्व छिर्वियावर्णी होते हैं कहि के जाता ना ॥ १८ ॥ प्रथमे वहते वायु: द्वितीयवहते जल ॥ त्रितीयवहते अग्नि चतुर्थे वहते रं ॥ १९ ॥ तस्यार्थ हे वरानने प्रथम वायुतत्व वहते हे और द्वितीय जलतत्व वहते हैं फेरि त्रितीय तेजतत्व वहते हैं और चतुर्थे वायुतत्व वहते हैं कहि के जाता ॥ १९ ॥ स्कंधवयस्थितो वह्नि: ना

भिरुत्तेप्रभंजन॥ जानुदेशेधिनिलोयः पादान्तेमस्तके
नभ॥२०॥ तस्यार्थ हे देवि दुई वाहका संधि में तेजतत्व
रहते और नाभि स्थान मे वायुतत्व रहते हैं फेरि दुई
जीघ मे पृथ्वितत्व रहते हैं और जलतत्व थिर रहते हैं
और पाउका नि वे फेरि मस्तकमे आकासतत्व रहते हैं
कहि के जानना वा हि वे॥२०॥ अंगुलेवहे वायुः अ
ग्नि चव तुरंगुल॥ पृथिवि द्वादशांगुल: षोडशांगुलव
रुणी॥२१॥ तस्याहे पार्वति वायुतत्व आठ अंगुलव
हते हैं और तेजतत्व चार अंगुलव हते हैं फेरी पृथि
तत्व बारह अंगुलव हते हैं और जलतत्व सोहु अंगुल
व हते हैं कहि के जानना॥२१॥ पृथिवि मधुर स्वा
दः कषायी जलमेवच॥ अग्नि तिक्ततेजथिराडे: आका
सकटुकंतथा॥२२॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी पृथितत्व
मधुर स्वाद होते हैं और जलतत्व का स्वाद घोका
जैसे होते हैं और वायुतत्व को बाताई का स्वाद होते
हैं फेरि तेजतत्व का [illegible] कटु स्वाद होते हैं और आ
कासतत्व को मिरचा का स्वाद होते हैं कहि के जान

नाचाहिये ॥२२॥ उद्भ्रमन्तुरधशान्तिःतिर्यग्उच्चाटन
तथा॥ मध्यस्थभविजानियाःनभसवत्रमध्यमम्॥२३॥
तस्यार्थ हे वरानने आकाशतत्वप्रधोवहेतो तसमनु
ष्यकामृत्युहुनेका भय देखिपरेगा फेरि अधोवहेतो शा
न्तिहोगा हें और तिर्छेवहेतो उच्चाटन होता हें और म
ध्येविचमेंवहेतो स्थंभन होता हें तसप्रर्थ आकाश
तत्व देह कास्थान में रहता हें कहिके जानना चाहिये
॥२३॥ पृथिव्यास्थिरकर्मनिवरकर्मनिवायुतो॥
तेजसिसमकर्मीनीःमारणोच्चाटनविलो॥२४॥ त
स्यार्थ हें देवि पृथिवितत्व चलाने में स्थिर कर्म करणी
और जलतत्व चलाने में वर कर्म करणी फेरि तेज
तत्व चलाते में समकर्म करणी फेरि वायुतत्व चला
ते उच्चाटन करणी कहिके जानना॥२४॥ योगेनकिंचि
त्फलतव्यःनधसेंयोगशेषया॥ शुभताःसर्वका
र्येषुःनाशकार्यविचारणा॥२५॥ तस्यार्थ हे पार्व
ति आसतत्व चलाते शुभ होगा तो जिस शुभ होगा
तोभि कोनैका सभिनाहि करणी और गसमाधिक
र्मोका मात्र वहिया शुभ फल होगा हें और नीरिगरहु

दयमें अभ्यासकरतेरहनाहुनियापरपैचकाकाम
कारजकुछभिनकरे॥२५॥ पृथिविजलाभ्यांसिद्धिः
वृद्धुवह्निथयोनिले॥ नभेषनिष्फलंसर्वंरामवै
नायवादिभिः॥२६॥ तस्यार्थहेसुन्दरीपृथिवितत्वमेंऔर
जलतत्वमेंकियाकाकार्यजल्देसिद्धीहोताहैऔर
अग्नितत्वमेंकियाकाकार्यविघ्नकरनाशकरिदे
ताहैऔरवायुतत्वमेंकियाकाकार्यनिष्फलकरदे
ताहैफेरिऔरआकाशतत्वमेंकियाकाकार्यसंपू
र्णनाशकरदेताहैतस्कारणसेजलतत्वमेंजानिबु
द्धिकरवर्जितकियाकाकार्यमेंकभिकुछभिनाहि
करणीचाहिये॥२६॥ चिरलाभोधितीरायंतथा
रात्वपत्वतः॥ हानिस्याद्वह्निवातानाभस्यनि
ष्फलभवेत्॥२७॥ तस्यार्थहेवरानने पृथिवितत्व
मेंकियाकाकार्यथोराविलासमेंसिद्धिहोताहैऔ
रजलतत्वमेंकियाकार्यकरेतोंजल्देसिद्धिहोता
हैऔरअग्नितत्वमेंफेरिवायुतत्वमेंकोईकार्य
करेसोभिविघ्नभेनाशहोजातेहैफेरीऔर

आकाश तत्त्व चलते में को नेका येकरे सो त्रिना
शकर निस्कन्टक करदेता है कहिके जानना चाहिये
॥ २७ ॥ पितृशत्रे मध्ये वाहि हृत्या वहेत् धनं ॥ कवो
शापार्थिवो वायुः स्थिरकार्ये प्रसाधनं ॥ २८ ॥ त
स्यार्थ हे देवि पेरवरहि वा पृथिवी तत्त्व मध्ये भा
गमें वही चले तो उस वायु नेपरे सुन्दर शब्द
का हराई देता है और फेरि वायु तत्त्व और पृथिवी
तत्त्व और फेरि आकाश तत्त्व इन तिन मिलाकर
साथ वही चले तो जन्दे कार्य सीद्धि करदेता है क
हि के जानना चाहिये ॥ २८ ॥ अधो वायु आत्मा धातः सि
द्ध गमन सितल ॥ यत्रोऽशांगुल वायुः सो आपशु
भकर्म च ॥ २९ ॥ तस्यार्थ हे पार्वति जल तत्त्व अधो
वहि चलते से आत्मारूपी सहस्रका धात करले फेरि
और सोड़ अंगुल भेजन्दे वहि चलने वाला जल त
त्व मे सब शुभ कर्म करिलेना कहि के जानना चाहि
ये ॥ २९ ॥ उन्नासित कृष्ण वर्णः सिर्वे गामि अष्टांगुल
॥ वायु पवन संज्ञेयः वायु कर्म सुसिद्धि दः ॥ ३० ॥ त

स्वार्थ हे सुन्दरि शिवतत्त्व हुआ का अंश का गुण भैने हो
वहि चलने वाला वायु तत्त्व वहि चलाने में को नेका न
करे सो भिन्न न मनुष्य का कार्य जन्देसी हि होजावेगा
कहि के जानना चाहिये ॥२०॥ यस्मिन् समस्तः सर्वत्र
त्वं गुणा वहेत् ॥ अवरत्न विजानियात् सयोगि यो
गदायेक ॥ २१ ॥ तस्यार्थ हे वरानने यो देह मे अ
ठ अंगुल भै वहि चलने वाला वायु तत्त्व जो है सो वा
युतत्त्व का स्वभाव से और सर्व तत्त्व का साथ मिलती
के समस्त सरीर भै वहि चलाने में अभ्यास पर
वेहि के योगी जन ने अभ्यास कर रहने वाला को
योगि का योग का सिद्धि से जोति प्रकास भै अमर
पद पाई के जिवन्मुक्ति होजावेगा कहि के जानना
चाहिये ॥ २१ ॥ आवर्तिकश्चात उद्याश्चस्वात मेव
उरागुल ॥ उद्वाहिरकुरुते कर्मकारि सतेजस
॥ ३२ ॥ तस्यार्थ हे देवी वा हे रुद्राक्ष के भिन्न रजा
ने का वहुत जल्दे चलने वाला और चार अंगुल वाहे
चलने का अभिन्न तत्त्व वहुत गर्मी हुआ का अंश से वा

पृथ्वी वहि चले तो कुरु कर्म करे तो जल लाभ देवे
शाला हे कहि के जानना ॥३२॥ पित श्वेत यच तु कोणी
मधुरे मध्ये माश्रित ॥ ओग दे पार्थिव तत्वे पु
वाहे द्वादशाङ्गुल ॥३३॥ तस्यार्थ हे पार्वती पेर व
र्ण चार कोने मधुर स्वाद मध्य मस्थान बैठे शा
ला द्वादशाङ्गुल भेव वहि चले तो तस्को पार्थिव तत्व
है कहि के जानना चाहिये ॥३३॥ श्वेत मध्ये तु शीका
सं: स्वाद काषाय संयुक्त ॥ लाभा कृत्वा सुगा
तत्व: प्रवाहे पवन वायु ॥३४॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि शे
तो वर्ण हुआ का चंद्र मा जैसे सि तत्व: स्वाद भया की
सो द्वादशाङ्गुल भेव वहि चले तो उस्का जल तत्व है कहि
के जानना चाहिये ॥३४॥ रक्त त्रीकोणा सि तत्व: उ
द्धि मार्ग प्रवाह कुरु ॥ वीर्य चतेज सतत्व: प्रवाहे चय
तुराङ्गुल ॥३५॥ तस्यार्थ हे वरानने लाल वर्ण हुआ
का त्रिकोणा: सि तो स्वाद उद्धि मार्ग चले शाला बारह अं
ङ्गुल भेव वहि चले तो उस्का तेज तत्व है कहि के जान
ना चाहिये ॥३५॥ सि लंबवत्तुलाकार: स्वादाम्लो

तिर्यग्गमितश्च॥ च परमाल्तत्तत्त्व प्रवाहेष्टांगुलस्थित
श्च॥३६॥ तस्यार्थ हे देवि निल्वरी : वहुत बनाई स्वा
द : धारस्वाचलने वाला सब में मिलने वाला आठ अंगु
ल में वहि चले तो उस्का वायुतत्त्व है कहि के जानना॥३६॥
वरी कारसमाश्रित्य अन्तं च सर्वगीतम॥ मोक्षता मो
दे यतत्त्वं अन्यकार्ये भवि स्फलंश्च॥३७॥ तस्यार्थ हे पा
र्वति सर्व वरी मिल्या का स्वभाव प्राप्त करने वाला अव
कभे रहा का और है सो तस्का आकाश तत्त्व है कहि
के जानना॥३७॥ पृथ्वि जले शुभे तत्त्वे तेजो मिश्रि फ
लोदय॥ हानि शून्य कतो पुत्रा : सशुभौ न समस्तते॥
॥३८॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि पृथ्वि तत्त्व में फेरि और
जल तत्त्व में जो रहा कार्य करे सो शुभ तो कारज सिद्धी
कर देता है फेरि और तेज तत्त्व वहि चलते में सब
मिल्या को कार्य करे तो तस्को कार्य सीद्धी हुवेगा
फेरि और कोई वहता आकाश तत्त्व और जल तत्त्व
मिलि साथ वहि चले तो उस्का शून्य हुवेका देखिप
ड़ेगा कहि के जानना चाहिये॥३८॥ आपूर्वे पक्षिमे
पक्षिते जन्य दक्षिणोत्तथा वायुचोत्तर दिग्ने योः म

धे कोशो गते नभ शाहृ॥ तस्यार्थ हे वरानने जलत
त्व पूर्व दिशा मे रहता है और पृथिवी तत्व पश्चिम दिशा मे
रहता है फेरि और तेजतत्व दक्षिण दिशा मे रहता
है फेरि और वायु तत्व उत्तर दिशा मे रहता है फेरि
और मध्ये कोशो मे आकाश तत्व रहता है कहि के जा
नना चाहिये॥ ३९॥ चंद्र पृथिजले स्मृता: सूर्ये वाग्नि
पदा भवेत्॥ तदासिद्धि न सी देह: सो स्या सो स्या च
कर्मसु॥ ४०॥ तस्यार्थ हे देवि चंद्र नाडि मे पृथिवी तत्व
और जल तत्व वाहि चले तो जो कार्य मन मे धरि
के करे तो सो तो कार्य सिद्धि दायक हो जावेगा फेरि
और सूर्य नाडि मे अग्नि तत्व वाहि चले तो जो समय
व्य मे जो कार्य करेगा तो भि तो कार्य पूरन सि
द्धि हो जायगा फेरि और शुभ कर्म होगा तो भि शुभ
कर्म होगा तो भि कार्य सिद्धि हो जावेगा क
हि के जानना॥ ४०॥ लाभा पाखि कृते दिने निसायी
लाभ यजले॥ वहि पृथ्वी क्षिति वायु नभस्थान दाह
यच॥ ४१॥ तस्यार्थ हे पार्वति पृथिवी तत्व मे दिन मे

लाभकर देता है फेरि और जलतत्व नेत्री में लाभ
कर देता है फेरि और अग्नितत्व में और पृथ्वितत्व फे
रीवायुतत्व मिलि आवे तो उसते मृत्यु भय का देता है
फेरि और कोई वेलामि आकासतत्व मिले तो देह भेद
हकर देता है कहि के जानना चाहिये ॥ ४१ ॥ जितवो
नपोलाभेच: क्षेमेचधनकर्षिरा ॥ मैत्रार्थे युद्ध प्रश्ने
च: [illegible] नागमनेतथा ॥ ४२ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी हमारा
परदेश गया का आदमि जल्दे आवेगा कि नहि आ
वेगा कहि के कोई पुन प्रश्न करे तो फेरि रणयुद्ध में
हारेगा कि जीतेगा और फेरि मैत्र का सिद्धि होगा कि
नहि होगा फेरी और बेटा का जन्मे में पुत्र का लाभ हो
गा कि नहि होगा फेरि और धन प्राप्ति होगा की नहि हो
गा कहि के कोई पुन प्रश्न करे तो ॥ ४२ ॥ आयानि आयुतो
नेच: हानि मृत्युनभेलते ॥ प्रयातिवसुतोनत्वतत्रस्थो
पिसुभास्थितो ॥ ४३ ॥ तस्यार्थ हे वरानने आकासतत्व
चलते कोई प्रश्न करे तो प्रपट देसि मृत्यु होगया कहि
देगा ई समे सँदेह नहि कहि देना फेरि और जलतत्व

चलने में कोई उतने पर दे सिका प्रश्न करे तो तुमारा पर दे
श गया का आदमी जल्दे लौटि आवेगा कहिना फेरि श्रोता
पृथ्वीतत्व चलने में प्रश्न करे तो तहा देखि पर गया है कहिदे
ना॥४३॥ पृथिव्यामूर्द्धितस्यापि जीवतेजस्तत्वयो॥ तेजसि
धावचितस्यशून्यामाकासवदन॥४४॥ तस्यार्थ हे देवि
पृथिवीतत्व में प्रश्न करे तो बहुत पाउहुआ का चिंताया
कहि देना फेरि पृथ्वीतत्व चलने में प्रश्न करे तो बहु
त पेर हुआ का चिंताया कहि देना फेरि श्रोता का तत्व
चलने में प्रश्न करे तो पेर न हुआ का चिंताया कहि
देना॥४४॥ पृथिव्यामूर्द्धितस्यापि: जीवतेजस्तत्व
यो॥ तेजसि धावचितस्यशून्यामाकासवदन॥४४॥ 92
तस्यार्थ हे देवि पृथिवीतत्व में प्रश्न करे तो बहुत पाउहु
आ का चिंताया कहि देना फेरि वायुतत्व में प्रश्न करे
तो हुई पेर हुआ का चिंताया कहि देना फेरि तेजतत्व
चलने में प्रश्न करे तो बहुत पेर हुआ का चिंताया क
हि देना फेरि श्रोता का तत्व चलने में प्रश्न करे तो पेर
न हुआ का चिंताया कहि देना॥४४॥ पृथिव्यावहुआवहु
पाउपरि: दिपदानवायुतत्व॥ तेजसि चवतुआदा

नभासि पाद वर्जिता ॥४५॥ तस्यार्थ हे पार्वति पृथि
तत्व मे प्रश्न करे तो तुमको पाउ नहुआ का चिंता या के
हि जरो पति चिंता या और तेज तत्व मे प्रश्न करे तो तु
मको धातु व सुचिंता या कहि देना के हि आकास तत्व
मे प्रश्न करे तो कुछ चिंता नहि चिंता या कहि देना ॥४५॥
कुतो वहिर विपथी सौरि राय प्रकिर्तीत ॥ पाउ
स्थान स्थितो एकुदक्षर प्रवाहक ॥४६॥ ते
स्यार्थ हे सुदरि सूर्य नाडि में अग्नि तत्व रहते हैं और
ग्रह देवता भी गर रहते हैं फेरि वायु तत्व में ग्रह दे
वता राहु रहता है और जल तत्व में ग्रह देवता शनि
वर रहता है फेरि वायु स्थान मे राहु ने दहिना स्वर
वहि बला उसको कहि के जानना ॥४६॥ जल वैद्रो उध
पृथि गुरु वासि तो नला वा मनाडि स्थितास्व: सर्व
कार्ये सुनिश्चिता ॥४७॥ तस्यार्थ हे वरानने चंद्र नाडि
मे जल तत्व रहता है फेरि पृथिवी तत्व मे बुद्धि स्वामी
रहता है और अग्नि तत्व मे शुक्र देवता रहता है फे
रि इन सब जल वायु नाडि में रहा का समये शुभ कर्म
करे तो सर्व कार्य सिद्धि दायक होजायेगा कहि के

जानना चाहिये ॥ ४७ ॥ चंद्र सूर्ये परीत्य ज्ञः यथा राहु गतोनला ॥
तदा सौ पलितो ज्ञेयो स्थानं तत्र मयाहितं ॥ ४८ ॥ तस्या
र्थ हे देवि चंद्र सूर्ये नाडि मे जल तत्व पृथ्वी मे राहु गया का वे
ला मे प्रश्न करे तो उस पर देशी वहा से दुसरा जगा में गया क
हि देना ॥ ४८ ॥ ज्ञा शी तीव्र रोग तत्वे : तत्र वा स्ति शुभेथ
तौ ॥ प्रवासि पवने ज्ञत्र : स्तु रेवा नल व दे ॥ ४९ ॥ त
स्यार्थ हे पार्वती जल तत्व मे कोई प्रश्न करे तो पर देशि
जन्दे घर आवेगा कहि देना फेरि पृथ्वि तत्व में कोई प्रश्न
करे तो उसे स्थान मे बठिया कर के बैठि रहता है कहि देना
फेरि और वायु तत्व मे और अग्नि तत्व मे कोई प्रश्न करे तो
मरी का सक्क ष्ट होई रहा है कहि देना ॥ ४९ ॥ बुधो गला की
शुक्रो : वहि रवि कुजस्तथा ॥ वायु राहु शनि योग्नि
ग्रहदेव प्रकिर्तीता ॥ ५० ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि तेज तत्व मे
बुध ग्रह देवता रहता है फेरि जल तत्व मे शुक्र ग्रह देवता रह
ता है फेरि अग्नि तत्व मे सूर्य ग्रह देवता रहता है फेरि वायु
तत्व मे राहु ग्रह देवता रहता है फेरि और आकास तत्व मे
शनिचर ग्रह देवता रहता है फेरि पृथ्वी तत्व मे ग्रह देवता बृ

हे स्वामि रहता है कहि के जानना चाहिये ॥५०॥ पार्थिवेस्त
त्वविज्ञानः शिवेज्ञानं तथा ॥ आप्यायां चातु विज्ञा
नं वायौ विशुद्धविनीर्दिशेत् ॥५१॥ तस्यार्थ हे वरानने
पृथिवीतत्व में कोई दुत प्रश्न करे तो तुमने स्तम्भ दर्शन वि
ज्ञान या कहि देना और जलतत्व में कोई प्रश्न करे तो कोई जी
वका चिन्ता या कहि देना फेरि आकाश तत्व में कोई प्रश्न क
रे तो तुमने कुछ भि नहि चिन्ता या कहि देना ॥५१॥ यथाय
दि मुराकाशे चैव स्वस्य प्रकिर्तिता ॥ द्वादशे च प्रश्ने
नः ज्ञानं वैसि के सदा ॥५२॥ तस्यार्थ हे देवि रक्षा
वलेनेका : वलकरणी : गुरु मुन्या वनु : पसारणी का फुरणी
का : इन ने पांच थोर कर्म वायु तत्व ने उत्पत्ति किया का है
कहि के ब्रह्मज्ञान से कहि गया का है ॥५५॥ तस्थि तस्थि
रविक्षया : जयहान्य धरतले ॥ ते जो वायु स्च सुपी
धा गरुकं प्रवासिन ॥५३॥ तस्यार्थ हे पार्वती पृ
थिवीतत्व में कोई प्रश्न करे तो कुस्थ भेरन युद्ध मे लड़ाई
कर्ति रहा है और जलतत्व में कोई प्रश्न करे तो किया में
गमन से होई रहा फेरि उस मे वायु तत्व मिलि रहे तो उ

स्का ज्वर सें कै प्रमान होई रहा है कहि देना॥५३॥ पृथिव्या
पतथा तेजो वायुराकासमेवच॥ पंचभूतात्मकं देहं रा
तर्वं चवरानने॥५४॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि पृथिवीतत्व और
जलतत्व और तेजतत्व और वायुतत्व और आकासतत्व
ईन पांच तत्व सें सब सें श्रेष्ठ जिवात्मा मनुष्य का शरिर बनाई
रषा का है फेरि और ईन पांच तत्व नें देह भितर शुभअ
शुभ कर्म का निमह मेस भोग प्रकार हा है कहि के जान
ना चाहिये॥५४॥ पूर्वे पश्चिमे वास्य उत्तरे स्य यथाक्र
म॥ पृथिव्यादि निशुद्धानि पालिष्यानि विनिर्दिशेत्
॥५५॥ तस्यार्थ हे वरानने पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिणादि
शा में परदेश जाने का वास्तो गमन करणी चाहिये तो चार दिशा
का विचार करके गमन करे तो मनुष्य का सें श्रेष्ठ कार्य शु
फल सिद्धि दायक होजायगा कहि के जान ना चाहिये॥५५॥ आस्वि
मास त्यथा नाडि रेनार्थे वपु पंचमे॥ पृथिव्यं पंचगुणो ब्रह्मो
ब्रह्मणेन भाषितम्॥५६॥ तस्यार्थ हे देवि मास वासरौ
नाडि हाडि ईन नैपीव जोन सो पृथिवीतत्व का गुण से उत्पन्न हि
वा का है कहि के ब्रह्मा जी सें कहि गया का जान ना चाहिये॥५६
॥ शुक्र सोनित मज्जा च शुक्लालत्व पंचमम्॥ आप पंचगु

राग द्वेष क्रोध ब्रह्मरागेन भाषितम् ॥ ५७ ॥ तस्यार्थ हे पार्वतीवि
येदिक मज्जा सूत्र रार ईतने पांच जोन वस्तु सो जल तत्व
गुण देषि उपती हुआ का ब्रह्मरागसें कहि गया का हें कहि के जा
ना ॥ ५७ ॥ क्षुधा त्रिषा तथा निद्रा कांति रालस्य मेव च
॥ तेज पंच गुण क्रोध ब्रह्मरागेन भाषितम् ॥ ५८ ॥
तस्यार्थ हे सुन्दरि क्षुधा त्रिषा नीद्रा कांति आलस्य हे
तने पांच जोन वस्तु हे सो तेजतत्व का गुण देषि उपती
हुआ का ब्रह्मरागसें कहि गया का हें कहि के जानना ॥ ५८ ॥
धावलं चलनं गंध संकोचन प्रसारनं ॥ वायु पंच गु
ण क्रोध ब्रह्मरागेन भाषितम् ॥ ५९ ॥ तस्यार्थ हे वरा
नने रष्टा चलना वलकर्णी भ्रमुआउ स्फुरना प्रसा
रना ईतने पांच जोन वस्तु हें सो वायु तत्व गुण देषि उप
ति हुआ का ब्रह्मरागसें कहि गया का हें कहि के जानना ॥ ५९
राग द्वेष तथा लज्जा भय मोह पंच कम् ॥ नभ पंच गु
ण क्रोध ब्रह्मरागेन भाषितम् ॥ ६० ॥ तस्यार्थ हे दे
वि राग द्वेष लज्जा भय मोह यतने पांच जोन वस्तु हें
सो आका सतत्व का गुण देषि उपती हुआ का ब्रह्मरागसें
कहि गया का हें कहि के जानना ॥ ६० ॥ पृथि वा पलव

वास: त्वचारि शदयस्तथा॥ तेजसि सहि जानिया: पा
पुर्विंशति दशाश्च॥ ६१॥ तस्यार्थ हे पार्वती पृथिवीतत्त्व का
पांच गुन फेरि जलतत्त्व का चालिस गुणा फेरि तेजतत्त्व
का बीस गुणा फेरि वायुतत्त्व का वीस गुणा फेरि आकास
तत्त्व का दश गुणा है कहि के जानना चाहिये॥ ६१॥ पार्थिवे
चिरकारे चलाभाश्च पक्षणाभवेत्॥ जायते परमा
कूल: सिद्धिरानो विनश्यति॥ ६२॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि
पृथ्वीतत्त्व मे प्रश्न करे तो तुमारा कार्य मे थोरा विस्तार
से होजावेगा फेरि और जलतत्त्व मे प्रश्न करे तो तुमारा
कार्य जल्दे सिद्धी होजावेगा कहि देना फेरि और वा
युतत्त्व मे प्रश्न करे तो तुमारा कार्य तो सिद्धि होगा
थोरे दीन मे होगा कहि देना फेरि और तेजतत्त्व मे
प्रश्न करे तो सिद्धि कार्य मे विघ्न नाश होजायगा कहि देना
॥ ६३॥ पृथिव्याच आपवेदा: गुणास्तो जीवायुत॥ न
भयक गुणांवैव: तत्त्वानेभि दभवेत्॥ ६३॥ तस्या
र्थ हे वरानने पृथिवीतत्त्व का पांच गुणा फेरि जलतत्त्व
का चार गुणा फेरि आकास तत्त्व का एक गुणा है कहि के
ज्ञानसे कहि गया है कहि के जानना॥ ६३॥

तत्त्व को तिन गुन फेरि वायुतत्त्व का दुइ गुन फे

फलरूपश्च वस्याश्च: प्रारम्भादि चेतसा था॥ अभिजीतो
नराषाढा: पूर्वितत्वगुणा हृतम्॥ ६४॥ तस्यार्थ हे देवि सं
पूर्ण कार्य करने में जिस वषतजो नपवनका तत्व प्रका
सभै वलेगा तो सवषतजो नै फलका प्रकास कर देता है
और पूर्वितत्व का लाल फूल फुलता है सो हि हि सा व से
वीचार करजानना॥ ६४॥ धनेष्टा रोहिणी मेष्टा श्रवणा
धा श्रवणोश्च॥ दधाति सर्वकार्येषु: श्रवस्याश्च ठ्ठो
फलम्॥ ६५॥ तस्यार्थ हे पार्वती धनेष्टा: रोहीणी जे
ष्टा: श्रवणा धा: श्रवणा: अभिजित उत्तराषाढ: इतने
सात नक्षत्र जो न हैं सो पूर्वितत्व है कहि के जानना॥
॥६५॥ पूर्वाषाढ: तथा मूले वा: मूलश्चा ज्ञा: रेवती
उत्तराभाद्रपदा मित्रिवा तत्व सर्व सवतमे॥ ६६॥ तस्या
र्थ हे सुन्दरि पूर्वाषाढ: प्रसलेवा: मूलश्चा ज्ञा: रेव
ती: उत्तराभाद्र: शतभिषा: इतने सात नक्षत्र जो न
है सो जलतत्व का है कहि के जानना॥ ६६॥ भरणि
कृत्तिका पुष्य: मघा पूर्वा च: फाल्गुनी॥ पूर्वाभाद्रप
द: स्वाति नेजतत्व मिश्रि पप॥ ६७॥ तस्यार्थ वरा

तत्रे भैरवि : क्षिति का रूप : मघा : पूर्वफाल्गुनी : पूर्वभाद्रपदा : स्वाति ई
नौ सात नक्षत्र जौन हैं सो तेज तत्व का है कहि के जानना ॥ ६७ ॥
वि आकर : फाल्गुनी : हस्त : चित्रा : पूर्वाषाढ ॥ वह नाडि स्थितो
भुतो : यस्य हृति शुभाशुभ ॥ ६८ ॥ तस्यार्थ हे देवी विशाखा :
उत्तरफाल्गुनी : हस्त : चित्रा : पूर्वाषाढ : श्रवण : धनिष्ठा
: इन्हें सात नक्षत्र जौन हैं सो वायु तत्व का है कहि के जा
ना ॥ ६८ ॥ वह नाडि स्थितो भुतो : यस्य हृति शुभाशुभ
म् ॥ तस्य सर्व सिद्धि मायाति शुन्ये शुभ न संशय ॥ ६९ ॥
तस्यार्थ हे पार्वति जौन नाडि हृदय में नहिं रहते हैं सो त
सबे लाभ को ईहुतने प्रश्न करे तो शुभ का कार्य शुफल
सिद्धि दायक होजावेगा कहि देना फेरि और नाडि भितर
प्रवेश होते में प्रश्न करे तो सिद्धि कार्य विघ्न भये नाश हो
जायगा कहि देना ॥ ६९ ॥ तस्य राम जये प्राप्ति : शुभत
वेध न जय ॥ कोर वारि हतो सर्व : शुद्ध तत्वे हतो शेना ॥ ७० ॥
तस्यार्थ हे सुन्दरि हृदय नाडि लेकर शुद्ध करते में रामचन्द्र ने
रावण का लंका देश सब नाश करके आपना का जयें लाभ
पाई घर अयोध्या आई कुशल आनंद सुख पाई के वे विरह

गाहे और तस्की प्रभाव से अर्जुन के लिये पूर्वी नाडि लेकर
रणभूमि में जाय कर युद्ध करके महाभारथ में सब कौ
रव का मारि नाश करके आकुजिनि कर घर आया श्रीकृ
ष्ण का प्रताप से तस अर्थ कुरुक्षेत्र नाडि विजरी तस्य में
युद्ध करी में सब और रव का कैरव महाभारथ रन भूमि
में हारि मारि नाश करके विघ्न उत्पात उपद्रव करि दीया
है कहि के जानना चाहिये ॥७०॥ पूर्वजन्मे स्मरकारः
प्रसादाद्ग्रथ वागुरु ॥ तेषाचिन्ताजायते नित्ये वास
नाधमलात्मना ॥७१॥ तस्यार्थ हे वरानने पूर्वजन्म का
दान पुण्य भाव भक्ति करि आया का वासना से यह जन्म
में भी दान पुण्य भाव भक्ति करूंगा कहने का ज्ञान बुद्धि
हृदय में बसाई मन में चिताई देकर सो पूर्ण करने क
रने हैं ॥ करि और आगे पूर्वजन्म में दान पुण्य भाव
भक्ति कर ॥ नआवने वाला मनुष्य का ईस जन्म में भि
आगे का अधम पाप से दुख शोक विपत्ति व्याकुल कर
देता है ॥ तस अर्थ पूर्वजन्म का वासना नहीं होगा तो भि
ज्ञान से भवसागर पार नहिं लगेगा कहि के तस्मात्

नीका बोज कर उसका उपदेश लेकर होता भक्ति करनेवाला
होता है॥ ७१॥ अथ पंचतत्त्वको ध्यान करने का लं बिजध
रणि ध्यानः चतुरस्रा जपितमहः॥ सुगंधस्वरूपिणी च
च अरोगप्रदेह स्वलाभो॥ ७२॥ तस्यार्थ हे देवि लं बिजसे
पृथ्वितत्त्वका ध्यान कैसे करने का है कहे तो चारकोना पित
वर्ण हुवा का अति सुगंध से युक्त भैरहा का स्वरूप जैसे व
र्ण हुआ का अपना देह वास्ते अरोग्य करदेने वाला कहिके
जानना॥ ७२॥ वं बिजचरणा ध्यान अर्द्ध चंद्र शशि प्र
भह अधाभिआ शह शिलाः वंजले मध्ये चमीजन॥
॥ ७३॥ तस्यार्थ हे पार्वती वं बीजसे जलतत्त्वका ध्यान क
रने का कैसे है कहे तो अर्द्ध चंद्रमा जैसे कांति हुवा का अरो
र अधाभिआ भिसहने वाला शांति स्थिर रहा का केरी
जल का बिच में रहने वाला है कहि के जानना॥ ७३॥ रं बिज
अग्नि च ध्यानः त्रिकोणा मरुनप्रभह॥ वं हन्त योन
भक्ति च माता याग्नि महि कुता॥ ७४॥ तस्यार्थ हे सुन्द
री रं बिज से अग्नितत्त्वका ध्यान कैसे करने का है कहे तो त्रि
कोणा रक्त वर्ण हुवा और अन्न भोजन तर्कारी का पाक क
रने वाला और जो कोई प्राणी मे होम करे तो भि भस्म करने
वाला है कहि के मेरे ध्यान में भि माया मोह लोभ सब

वीषयभस्मकरदेकहिके ध्यानकरीकैजानना॥२४॥ ॐ
वीजपवनेध्यानवनुलस्यामलप्रभम्॥ ध्यायतासागमनना
हेनुःपरक्षागमनतथा॥२५॥ तस्यार्थहेवरुननेवीवि
जसेंपवनकाध्यानकरीकाकैसेंहेंकहेंतोवनुलाका
रअैस्यामवर्णीहुआकाहेंपरमेश्वरमेरा ध्यानकरनेमे
पाहेंलोंगीकेआकाशमेंगमनकरआवेकहिकेपवन
कोध्यानकरीचाहिये॥२५॥ हंविजंचमनोध्यान
विःएकारेवेहुप्रभम्॥ रात्रिकालविषयंप्रैस्व
र्वेमरिशादिकम्॥२६॥ तस्यार्थहेदेविहविजसें
निर्मलहुआकाआकाशकाध्यानकरीकाकैसेंकहेंतो
देहभितरअैकारअैकारभितरमेंकारमेंवहुतनु
तहुआकादिव्यकाशमेंआदिपुरुषजोतीरूपहेकहि
केगगनमेंएकचित्तसेंध्यानकरीचाहिये॥२६॥ स्वर
रात्रनरोयस्यःधर्मनासितपटम्॥ गम्यतेस्वरहा
नेनआनायासफलंलभ्यम्॥२७॥ तस्यार्थहेपार्वतीस्व
रवयरागजैसेंवरेयथश्वेतहुआकाशुद्धपवित्रनिर्म
लअनमोलअैसर्वेपदार्थरागरूपवाकाबहुलोकभि
परलोकभिकुशलआनंदसुखदेनेवालाहुआकायो

गी का प्रासे योगे सेवरे धनहानि जन का प्रासे और धन सें भवसागर पार लगाई देने नहि सकता हें और यहि ज्ञान सें आगायास का फल प्राप्ति होगा सो द्विन मात्र में शिव मुक्त होजावेगा कहीके श्री माहादेव ने पार्वती काकहि सुनाया हें ॥ ७ ॥ इति श्री शिवोउमा सम्वादे कंनव प्रकरणे चित्त पवन विजय तत्व ध्यानना महितीयो ध्याय ॥ २ ॥ इति श्री श्री वोउमा सम्वादे कंनव प्रकरणे चित्त पवन विजय तत्व ध्यानना महितीयो ध्याये ॥ २ ॥

श्री देवुउवाच देवदेव माहादेव माहाज्ञान स्वरदये ॥ त्रिकाल विलयश्चैव कथं भवति शंकर ॥ १ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी सुन ॥ श्री माहादेव आज्ञा हुआ हे देवि यो स्वरदय माहाज्ञान वरे श्रेष्ठ हुवा काहे कहना और हे जगदिश्वर यो त्रिकाल ज्ञा कहिया काके सेकरके जानने वाला हें सो ज्ञान मेरे को कहि सुना उकहिके विनती कीया ॥ १ ॥ इति उवाच ॥ अर्थ कालजयप्रस्ता शुभाशुभा मिती त्रिधा ॥ तत्त्री काल विज्ञान मन्यभवते सुन्दरि ॥ २ ॥ तस्यार्थ श्री माहादेव आज्ञा हुआ हें हे पार्वती सुन यो त्रिकाल ज्ञान कलाके सा हें कहे सो अर्थ हुआ और काल हुआ और जय

हुआ ईतानि का प्रश्न जो न हैं सो ओ का उत्तर यहि सा न हैं औ
र जा न नहि हैं कहि के जा न ना ॥ २ ॥ तत्र शुभा शुभा कार्ये
तत्रे जय पराजय ॥ तत्रे समर्थे लाभे च : तत्रे त्रिप
द मुच्यते ॥ ३ ॥ तस्यार्थ हे वरानने तत्रे में सी पूर्ण शुभ
अशुभ कार्ये रहना है कहि के जा न ना के हि ओ र तत्रे
से कर के अ फ ना का ओ र पर पैच कुनि या का त्रे ज
यला अशुभ फल इ ने का है के हि ओ र तत्रे से कर के सपू
र्ण कार्ये करों का समर्थ होना है के हि ओ र तत्रे से क
र के ई जादि गला सुख ता का ना हि भेद सा न प्राप्त हो
ना है के हि नी रि न र का त्रि पद सा न उपजे गा कहि
के जा न ना ॥ ३ ॥ देव उवाच ॥ देव देव महा देव : स
र्व संसार सागर ॥ कीं न रा णां परे मित्र सर्व कार्या
र्थ साधन स ॥ ४ ॥ तस्यार्थ श्री पार्वती ने पूछ ना होहे
स्वामि श्री महा देव सै पूर्ण जगत सै संसार सागर में
उ त्पन्न कायर मित्र क ला का को न है के हि ओ र सै पूर्ण का
र्ये मे सा समर्थ हु ने का के से है के हि ओ र साधन क ला
का के से करों का है सो बात मे रे को कहि ना है देना ॥ ४ ॥

ईश्वरवाच ॥ प्राणायामपरमेश्वर : प्राणायामपरं ज्ञात्वा ॥ प्राणायामपरं बंधु : अन्यन्नास्तिपरायणे ॥ ५ ॥ तस्यार्थ श्रीमहादेवने आज्ञा करके कहनेलगा ॥ हे वरानने सुन : योजगत संसार समागरमें यहलोकमेंवा : परलोकमेंवा : अकनाकाकुशल आनंद सुखदेनेवाला परममित्र कहनेवाला निरन्तर निराकार मेरहनेवाला आदिपुरुष अभिनाशिब्रह्म शिवरूपि प्राणका मात्रमित्र कहना : फेरि और संगसाथ कहनेका प्राणोंहें और संगसाथ नहिं कोई फेरि और दाईभाई बंधुजन हान परीवार कहनेका प्राणोंहें और कोई नहिं हैं ॥ फेरि और हे वरानने आकनाप्राणका मात्रमित्र संगसाथ दाईभाई कहना समझना और किसि को नहिं समझना ॥ ५ ॥

देहवाच ॥ कथं प्राणस्थितोवायु : देहस्य प्राणरूपकः ॥ तान्वेभुसचरेप्राणोप्राणवेत्तेयोगिश्रेष्ठ ॥ ६ ॥ तस्यार्थ फेरि पार्वतिने श्रीमहादेवसेकहा और केवितीकियाहै हे त्रिलोकेनाथजगदीश्वरवो देहतिरैनर प्राणवायुकेसे रहताहै फेरि प्राणरूप होकर कहारहताहै फेरि मनुष्यने प्राणका कोन विचार

सें रहता है फेरि अगम अगोचर में रहने वाला प्राण को
स्वभाव चाल चलन योगी जनने कौन विचार सें जानि लेता है
सो बात मैं रेकुं कहि सुनाउं ॥ ६ ॥ ईश्वर वाच ॥ कार्वेनग
रमध्ये तुः मासतो रक्षा पालकरु ॥ प्रवे शे दशमि प्रक्षो
: नि र्गिम्य द्वादसी गुल ॥ ७ ॥ तस्यार्थ फेरि पार्वति ने श्री
महादेव सें कर जोरके विनति किया है हे नाथ जग
दिश्वर यो देह निरंतर प्राण वायु कैसें रहता है फेरि प्राण
रूप लेकर कहां रहता है फेरि तत्व ने प्राण का कौन विचा
र सें रहता है फेरि अगम अगोचर में रहने वाला प्राण
का स्वभाव चाल चलन योगि जनने कौन विचार सें जानि
लेता है सो बात मैं रेकुं कहि सुनाउं ॥ ७ ॥ ईश्वर वाच ॥ का
र्वेनगरमध्ये तुः मासतो रक्षा पालकरु प्रवे शे दशमि
प्रक्षो : निर्गिम्य द्वादसी गुल ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

सात को अर्थ

तस्यार्थ श्री महादेव ने आज्ञा कर कहने लगा कि हे
सुन्दरि सुन ईस देह भितर शुभ अशुभ कार्वे करी वा
ला शरीर रूपि नगर कानी रहता है और प्राण रूपी वायु
वाहि चलते हैं सो वायु ने शरीर का रक्षा पालना करता है
हता है तस अर्थ इस वायु कैसे चलते हैं कहे तो जब

स्वासरूपी वायु अितर जाते रजाते में दश अंगुल का प्रमा
नसे प्रवेश होता है केरि वाहेर आते कि आते में वाहु अंगु
ल का प्रमाण से निकलता है कहि के जानना ॥७॥ ग
मने नुचनुवे शोः नेत्रनेवास्तु धावने ॥ मैथुने षोडश
षडिंवः सयने चसप्त गुल ॥८॥ तस्यार्थ हे वरानने
रस्ता चलने में चौविस अंगुल स्वास चलते हैं केरि द
गुने में वयालिस अंगुल स्वास चलते हैं केरि स्त्री का
हीं भोग करने में षोलह अंगुल स्वास चलते हैं केरि
निद्रा आई सुवने में सय अंगुल स्वास चलते हैं कहि के
जानना चाहिये ॥८॥ प्राणा शेनुगादि देवि स्वभावो द्वाद
शांगुल ॥ भोजने चवने चैव गतिरस्य दशांगुल ॥९
॥ तस्यार्थ हे देवि प्राणा का गति जोन है सो अपना स्व
भाव तो वाहु अंगुल का हि साव से स्वास चलते हैं केरि
भोजन करने में और वात चित करने में अठार अंगु
ल स्वास चलते हैं कहि के जानना ॥९॥ हे कौंगुल कान
मुख प्राणानिष्क्रामता मता ॥ आनंदलक्षिनिय
स्वः कविसम्पूर्णनिर्यकरः ॥१०॥ तस्यार्थ हे पार्वती
यो शरिर रूपि देह मध्ये रहा का प्राण वायु रूपि

स्वास का योग का जुगुति जा पा योगी जन में अगम निगम
का भेद जान कर साधन किया करके इक अंगुल प्राण रू
पी स्वास का घटाइना है केते जन योगी जन का हृदय मे
रहने वाला चित्त रू पी मन ने सुरती माया मोह तो
भक्ति मंगो धआदि क्रिया कर्म में निश्चिंता निस्कामता
: निर्मल यानि मेरी हुई सब काल धरा अपने देहमे
इष्टा न प्रकास होई आवेगा फेरि और दुई अंगुल
प्राण रू पी स्वास वायु का घटाइन सके तो जगत सिमा
रत्रैलोक्य मे न हुआ का और कभि न देखा का और
कभि न जाना का निरंतर अंतस्करणी मे का आनंद क
ला का जाने गा फेरि और नि न अंगुल प्राण रू पी स्वा
स वायु का घटा इन सके तो कभि न जाना का और क
भि न सुना का और कभि न देखा का नी रंतर अंतस्क
रणी का हृदय मे रहा का नाना प्रकार का अद भुत आ
श्चर्य का ज्ञान विज्ञान बुद्धि शक्ति यान प्रकास होई आ
वेगा : फेरि और उस ज्ञान का कुनियाव पर पंचने कोई
भि न हि जावेगा : करे कहि न अभेद अगम हुई रहा
का आना ज्ञान सुरती मे कवि तो हो हि जावेगा कहि के जा
नना ॥१०॥ वाक्यार्थ से कि चतुर्थ न: कुरद्वीस्तु पंच मे

॥ अष्टांगयोगसमन्वितो योगश्चसमाप्तः ॥ ११ ॥ तस्यार्थः हे सुंदरी योग प्राणरूपी स्वासवायु का चार अंगुल घटाय सके तो कोई कुछ नेक कार्य का प्रस्ताव करे तो उसके वास्ते विचार कर जो उसवात कहि देसो वात सिद्धि होजावेगा ॥ फेरी और प्राणरूपि स्वासवायु का योग क्रीया सें कर के पांच अंगुल घटाय सके तो देह भीतर ॐकार मध्ये निरंकार मे देखने वाला देव साक्षात दृष्टि प्राप्ति होई जावेगा ॥ फेरि और प्राणरूपी स्वासवायु का छ अंगुल घटाय सके तो मन रूपी पंछि होकर मनमगन होई आकास में उडि केल्लंहोई जाते हो ॥ फेरी और प्राणरूपी स्वासवायु का योग क्रिया सें सात अंगुल घटाय सके तो ऊर्ध्वरूपी पद्मनाडि चलने में अभ्यास करे तो शक्ति का चलवात सें अमरपना क्रिया का कार्य मे मन मग्न करते रहता है ॥ ११ ॥ अष्टसे सिद्धी पंचाष्टः नवमेके धयोनव ॥ दसमे दसाउतीस्वः छयाणाश्चदसैकके ॥ १२ ॥ तस्यार्थः हे वरानने प्राणरूपी स्वासवायु का योग क्रिया सें कर के आठ अंगुल घटाय सके तो तस योगी का अष्टसिद्धी प्राप्ति हो जावेगा फेरी और प्राणरूपी स्वासवायु का नौ अंगुल घटा

वृत्त सकेतो तत्र निधि कला का धन द्रव्य आदि रीधि सि
द्धि सकल सैंहुर्ती वस्तु पदार्थ प्राप्ति होई आवेगा॥ फेरी
और प्राणादि स्वास वायु का योग क्रिया सें दशा अंगुल
घटा वृत्त सकेतो अंकाराके तत्र निरंकार में दशा औतार
का स्वरूप जोत मन सें चेता वेगा सोरूप देखि पंरे
गा आनंद सें देखा वेगा॥ फेरी और प्राणादी स्वास वा
यु का योग क्रिया सें यकार अंगुल घटा वृत्त सकेतो आ
सन में बैठि कर अभ्यास करते रहने वाला योगी का अग
नि सें भस्म हुवे का शरीर रूपी देह का अंत नाश आदि से
नहि देखेगा॥ कोस वास्ते कहें तो मन ने आकर्षण आसन
छोर कर निरंकार का आकाश में मन लय होई जात हें
तब शरीर का अंत छूटी होजाता है॥ १२॥ छादशो हंस
चाश्व गीता शतरस दिवेत्॥ अव वाग्रेश्वरा रूपी सि
स्व भक्ष अभोजन ॥१३॥ तस्यार्थ हे देवि प्राणादि स्वा
स वायु का योग का अभ्यास क्रिया सें वा हु अंगुल घटा
वृत्त सकेतो तत्त्व को जि का अर्थ इना डि गंगा रूपी अंमृत
पि हि के जिव मुक्त भये अमर पद प्राप्ति हुआ फेरी और
क राह देखि निरंकार सम प्राणावायु॥ स्वास का हुर्ती क

रके योग समाधि होगया पाछे फेरी और को जगकाने
का मेला का स्वाद मेरे ध्यान ही रहेगा ॥ १३ ॥ इति प्राणा
विधी प्रको भुक्ति मुक्ति फल प्रदम् ॥ गायते गुरु वाक्यन
वि वा शास्त्रको हिके ॥ १४ ॥ तस्यार्थ हे पार्वती श्रेष्ठ प्रका
रकि गुरुको जिव मुक्ति हुने विधी कहि सुनाया फेरि और
जिस मेंयह विधी जो कोई जानेगा सो मनुष्य का सब
का सकार्थ का फल प्राप्ति करके प्रेम भक्ति भाव सें शिव मुक्ति
हुवेगा फेरि और यह प्राणा का मुक्ति हुने का मुक्ति वान
छि या मार गुरु का वाक्य सार उपदेश सें मात्र जाने गा फे
रि और को गुरु मेरा उपदेश शिका देने नो फिर फेरि और
कोई शास्त्र पढ़े सो फिर वो देह फिर नरक स्वर्ग प्रग
म अग्र गोचर मेरे लोक का प्राणा नदि स्वास वा ऊर्ध्व मेरु
द गति पति जाग उठ गुरु मुख गुरु को दिया न करे सो फिर
हि मुक्ति गा कहि के श्री महादेव ने गौरी पार्वती श्रीमुख
हि सुनाया कहे यह सार मुक्ति या पर वेद ने कोई नहि
पाया है ॥ १४ ॥ प्रातः चंद्र और वेशाख पादि देवा न लक्षे
ने ॥ दीन मध्ये न हो चंद्र रात्री मध्ये न हो रवि ॥ १५ ॥ त
स्यार्थ हे सुन्दरि सवेरा दिहाड़े चन्द्र नाड़ि वही चली

आगे केरी सैया काल में सूर्य नाडि वही चलि आगे केरी
सयान मे चंद्र नाडि वही चली आगे केरी आगे रात मे सूर्य
नाडि वही चली आगे तो तस गुण का सी सूरी का वेश
सो कुछ फल लाभ जस मान प्राप्ति होजा वेगा केरी आगे
जो जो बात कहि गया सो बात में वि परीत कर के चंद्र सूर्य
नाडि वहि चलि आगे तो सब का सका वेपि भ्रमेगा
शहो जायगा कही के जाना ना चाहि वे ॥ १५ ॥ दुर प्रदेश
य चैव समासने दीवा कर ॥ सन मुखे यदि दक्षाद
सर्व सिद्धि प्रजायते ॥ १६ ॥ तस्या थ हे वरानने दुरदे
श मे शत्रु सैग युद्ध करेंगे का जाना परे तो चंद्र नाडि वहि
चलते मेगा सन कर के जाय तो वैरी का मारी कर प्रय
नाडि ने के घर आवेगा केरी नगीच मे शत्रु सैग यु
द्ध करगी चाहे तो सूर्य नाडि वहि चलते में दहिना पा
उ दबी पे आगे धरी के गमन कर जावे तो वैरी का मा
रिना शकर अपना जिती के घर आवेगा कहि के जा
नना ॥ १६ ॥ जाआर भवि वहि चः प्रवेशे गमना दीके
॥ शुभ कार्ये भ्रमन चैव चंद्र नाडि प्रसिध्यते ॥ १७ ॥ तस्या
थ हे वि जाआर भ कर ने भ या केरी गाउ: सहर नग

रविवार प्रवेश करने भया केरी सँ शुभ कार्य करने में भया केरि स्त्री का वीवाह करने में भया : पढ़ने का यें में चन्द्र नाड़ि वाहि चलने में करे तो सब का यें सिद्धि दायक शुभ फल होजायेगा कहि के जानना चाहिये ॥ १७

प्रथम तिथि वारौ नः रविनाथेन संयुक्त ॥ यदि वहीते कदाचित : दैवयोगेन शीघ्र प्रभु ॥ १८ ॥ तस्मात् हे पार्वती प्रथम ईश्वर तिथि का दिन में सूर्य नाड़ि में प्रथम नाथ सा थ ले कर शुभ भैव ही चले तो कदाचित वरे भाग्य भाग्य सा नि सज्जन पुरुष का साथ देव सँ योग से वही चलता है सो तस पुरुष का सब का यें सिद्धि दावे शुभ फल हो जायेगा केरि और यह तो कभे वरे भाग्य मान होजायगा कहि के जानना ॥ १८ ॥ सज्जयति रिपु सैन्य सीघ्र मात्रे चन विघ्ने ॥ प्रभ दीनि च स्वरेण : केसव स्वा पिलो केश्च ॥ १९ ॥ तस्मात् हे सुन्दरी जिव ने जिव को रक्षा करने हें केरि जिव ने आजि नाथ का साथ ले कर वैरि सीग युद्ध करों को जाये तो वैरि का साथ शाथा दूभाग वान सहाय हो जाये वैरि का मारि के शत्रु जिती के घर आयेगा कहि के जानना ॥ १९ ॥ शिव रक्षा जिव

स: जिवा ग्रेपरी धाय चा। जिवोज पीजि च पुड्ड: जि वो
जपीति मेदीने ॥ २० ॥ तस्या र्थ हे वरानने जिव सं युक्त
करके शस्त्र ले करवा धन केरी जिव का ध्रका सकर केर
नभूमि मे जाय के शत्रु सेंग युद्ध करो को जावे तो वैरि
मार कर अस्त विघ्न कर अपना जिति के घर आवेगा
कहि के जानना ॥ २० ॥ अमासने च कर्तव्य: सर्व न शान्ति
कर्मणि ॥ वह्निवायु प्रदिप्तेषु: पुनर्नो भयश्च व्यापि ॥ २१
॥ २१ ॥ तस्या र्थ हे देवि परदेश मे गमन करना मे भ
या और शान्ति कर्म करने मे भया और पृथिवी तत्व मे वै
रि जल तत्व मे यो दुई तत्व मे करे तो कार्य सिद्धी दायक
फल लाभ हो जावेगा कहे श्री और वायु तत्व दुसरा अ
ग्नि तत्व मे अशुभ कार्य करे तो विशुभ हो जाते है क
ही के जानना ॥ २१ ॥ जिवेन शस्त्र ध्रा धि नी जिवे नेव
वि कास यार ॥ जीवेन प्रा धि पेन्र शत्रु: पुनर्जयंति
सर्वदा ॥ २२ ॥ तस्या र्थ हे पार्वती जो न ना डि जो न नर्दि
वह्नि चलता है सो हि नदि का हान से शस्त्रानि वी धि कर
उसे नदि का पाई उथा कर हानि घोरा रथ पर सवार क
रजावे इस प्रकार से साधन कर वैरि सेंग युद्ध करे

तो वैरि कुं मारे तो वैरि मर जायेगा। इस प्रकार जिस के घर का
प्रेत कहि के जाना ना॥ २२॥ श्रा क्ल इस प्राण पवन। समा रो हेन
वाहने। सन मुखे पदि दव्यार। सर्व कार्य योनि साधयत्॥
॥२३॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि प्राण वायु का इस योनी रंध्र चेक
र उसे तर्क का पाई उथाय कर दर्वाजे का वाहेर सन मुख
में पाउ धरि के जाय तो सर्व कार्य सिद्धि होजायगा फेरि
रीश्वर आगे जो वान कहा है उस में सो वि पारिन वायु वहि
चले तो श्राप का कार्य में वीघ्न भी सिद्ध होजायगा
कहि के जाना ना॥ २३॥ श्रा सूर्य शत्रु रा सन सूर्य स्वर
चले तु॥ कदा ते सूर्य नाव स्थे। जय प्रकाल तु अरि॥ २४॥
तस्यार्थ हे परा पने इस सूर्य स्वर मे शत्रु सें गत युद्ध करी
को जाये तो शत्रु देवि श्राप सन्मुख होजायगा फेरि श्रीर सू
र्य स्वर मे शत्रु से युद्ध करी को जाये तो वैरि कुं मारी क
र सर्व कार्य सिद्धी कर के श्रा कुं जिती के घर श्रावेगा क
ही के जाना ना॥ २४॥ पनाडि वहते यागे। तस्मे रा प्राण
देवता॥ सन मुखे पदे दव्यार। सर्व कार्य चासि ध्यति
॥ २५॥ तस्यार्थ हे देवि जो न नाडि जो न श्वास वहि

चलता है सो हित करि का नाडि में प्राण देवता रहता है कोई
और उसे हित करि का पाउँ उठाय कर दर्वाजे पर आगे सन
मुख पाउँ धरि दिजावे तो तस मनुष्य का सूर्य की पूरी का वेसी ही
कर के जस लाभ ले कर आ पना घर आवेगा
कहि के जाता ॥ २५ ॥ आदौ पुरुष अते पूजा ॥ पश्चात् पुरुष स
माचरेत् ॥ सर्व पूजा फलाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ॥ २६ ॥
तस्यार्थ हे पार्वति आगे पुरुष कर के पाछे पुरुष करी कीजा
वे तो और जिस ने पूरी पूजा किया है तस को सूर्य का
वेसि हो जावेगा और नहि होगा की कहने का मतलब
कुछ भि सी देह नहि करी कही के जाता ॥ २६ ॥ चंद्र प्र
वाहे सूर्य प्रवाहे च ॥ पस माया चि पुरुष चकाया ॥ समि
रन तन्न चि प्रवता : याशुन्य नासा प्रति का लन ॥
॥ २७ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी चंद्र नाडि वही चले तो भि के
री सूर्य नाडि वही चले तो भि इस से गुप्त करी का का
रण मे वेरि सन मुख आवे तो तस वेला मे सारी पुरुष मा
तने नाडि का विचार कर शत्रु का शुन्य नाडि देख कर आप
ना कारी नाडि देख कर पाउँ आगे धरजाय तो तो हि प
र शत्रु को मन पुरुष ने का का न देखि परेगा कहि के जाता

॥ २७ ॥ वेदिशावहहेतोवाज: पुष्टे च दिसि दायते ॥ जयी तेमन सी देह श
को जिदे वाय त ॥ २८ ॥ तस्यार्थ हे वरानने जो न दिशा की वायु वही
चलते हैं उसे दिशा की शत्रु संग युद्ध करो का जावे तो सर्व कार्य
सिद्धि शुभ फल जय लाभ का प्राप्ति हो जावेगा और दुख का आगे
स्वर्ग न काई इस हावे भे आवे तो अभिप्राय जिती के कुशल आन
दसे घर आवेगा कहि के जानना ॥ २८ ॥ यत्र नासावहे वायु
स्तद्दिगप्रारा मेवच ॥ आक्रम्य गह्वे करीत: जयतेच पुरद
रम् ॥ २९ ॥ तस्यार्थ हे देवि जो नाडि की वायु वहि चले है
सो हि दिन की प्राण देवता रहते हैं उसे नाडि को नाडि का वा
यु समाई के वैरि से युद्ध करो को जावे तो और करो आई स
हाये करे सो भे युद्ध मे आ जीते गा और कुशल आनंद दस
से घर आवेगा कहि के जानना ॥ २९ ॥ प्रतिपक्ष प्रहारेभ्यो दू
रीयोगाभिरक्षते ॥ तस्मारिजाभे शाक्ते वाले वैरि युद्ध
मते ॥ ३० ॥ तस्यार्थ हे पार्वती शत्रु ने छोर गया का शस्त्र
चलाने वेला मे जिवने आ कर प्राण का रक्षा करे तो अति
बलवान शत्रु आवे तो भे उसका मारो को नहि सके गा कहि
के जानना ॥ ३० ॥ श्रीगुरुर्तर्गतियस्य: पार्वी गुरु तथा ध्याने
॥ पुष्टे काले च दर्शन्य: लक्षयोधा जयो भवे त् ॥ ३१ ॥ तस्यार्थ हे

उन्दरि वैरि सैग शुद्ध करौं को जाते में हात का तर्जनि बजाई
के रि उसे पाद को अंगुष्ठा का शब्द धनि बजाई के तब भूमि
में वैरि सैग शुद्ध करौं को जा यतो। वरे बलवान शुद्ध करि रखो
खो जो धाग्रा ये सो भि उस्का हारने को कोई नहि सकेगा और
शत्रु का मारि के विघ्न नाश कर ग्राम पति नी के सुख ग्राम दसे
घरग्रा देगा ॥ ३१ ॥ नीसा कारे रखौ वारे। मध्ये पत्य समि रखो
॥ स्वो तो रथा हि गता नि। जया का आ रसदा ॥ ३२ ॥ तस्या र्थ
हे पराम नेरा तदिन में चन्द्र सूर्य नाडि का शुभ हित सैग व
रोधर स्वर का शुद्ध वहि चले तो केरि ग्रोर ग्राग्रा न हि जिव
ने रक्षा चलने में रथा करे तो तस का सब सर्व काज यता
भ प्राप्ति हुवे गा केरि ग्रोर जो मन में वीग्रा करे तो सो का र्य
सिद्धि होजा यगा कहि के जा तना ॥ ३२ ॥ स्वास प्रवे स काले शुभ
तो जन्म नि पाद्धि तहा ॥ तस्या र्थ सीद्धि माया नि। निर्ज में वे वशुद
री ॥ ३३ ॥ तस्या र्थ हे वी स्वास को भि तर प्रवे स होते में तस
वेला में को ई शुभ तेका र्य का नि मीभ प्रस्त करे तो शुभा रा
का र्य सिद्धि होते च लिग्रा शुभा हे कहि देना केरि ग्रोर तो न
स्वास भि तर देखि वा हेर नि कसी ग्राशुभ ते में को ई शुभ ते
का र्य को प्रस्त करे तो शुभा रा का र्य सिद्धि नहि हुवे गा कहि देना

कि सब शास्त्रके कहे तो विपरीत नाडि में प्रश्न की या का कार्य अशुद्धि
निष्फल होजाहै कहि के जानना ॥ ३३ ॥ लाभादिनां दिकाय्यीरा
: पदेनि कीर्तीनाप्यदि ॥ जीवेशासिद्धि तेहानि: शुभानि शरदो
भेद ॥ ३४ ॥ तस्यार्थ हे पार्वती लाभ हुने वाला हुतने शूरनाडि
से प्रश्न करते हैं तब उस्का सब कार्य सिद्ध ही होजायगा फेरि
और कोई हुतने शुनाडि से प्रश्न करते हैं तब उस्का कार्य कि
या का व शुभ भी निष्फल होई जाते हैं कहि के जानना ॥ ३४ ॥
नरेदक्षस्वकीयाच: सीधावामा प्रसस्येते ॥ कुम्भ के पुरुकाले
च: त्रियोनाडित्रियोगती ॥ ३५ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि पुरुष का
शो दाहिने नाडि वहिया होता है फेरी और स्त्री का शो बाम
नाडि वहिया होता है फेरी और शुभ का कार्य का शो शुभ
गमन करने में कुम्भ के में वहि चला होता है और योनि नाडि
का देह भितर और स्त्री में तिन भेद तिन नाडि जिन से स्वभा
व से वहि चला है कहि के जानना चाहिये ॥ ३५ ॥ हकार स्वस
कारस्य: स्वरभेदकथं प्रभु ॥ स्वर हंस पदेनैव: जिवोजपति
सर्वदा ॥ ३६ ॥ तस्यार्थ हे वरानने सुन हकार को और सका
र को स्वरभेद का ज्ञान कैसे करके जाय कहें तो हे देवि हं
सपद कहा या का जप का तत्त्व जिव ने सदा सर्वदा जापिर
हता है कहा सो वाम में ने कैसे जाय पता ही देना चाहिये ॥ ३६

॥ शुभ अंग सूरति किया अंग गे गोपपजय जिवी गे घाटमा
प्रोति: शुभा गेरथा गेसदा ॥ ३७ ॥ तस्यार्थ हे देवि शुभ अंग का
प्रोगे करा गेव अंग का भेतर ही पा ईसूरी कर के रवे तो
तस्को सदा सर्वदा जवेला भही तेरहे गा कि और जीव अंग
का सन मुख कर वे ही संग युक्त करी को जावे तो आप
काल देभि मस्तू हो जाय गा तस अर्थ शुभ नाडि सन मु
ख कर कोई दुनने प्रस्न करे तो तस्को कावे कि ब्रह्मे नि
स्फल होगा जब सूरी नाडि मे कर तो सब कावे सि हो
होगा कहि के जानना चाहिवे ॥ ३८ ॥ वामे वायादि दक्षे
रो: यदि तस्प्रस्न पृछक ॥ सूरी घातो न जायते: सुन्य
घातो वि निर्दि शेत्र ॥ ३८ ॥ तस्यार्थ हे पार्वती वाम
नाडि वहि चलेतो भि और दक्षिण नाडि वही चलेतो
भि जो कोई दुनने प्रस्न करे तो जिस ने सूरी नाडि वही
चलते मे प्रस्न करे तो उस्का वेरि ने मारे गा कहि के अ
ने कयन उपाय करे सो भि घात करी का नही सकेगा
कहि के जानना और जब सुन्य नाडि मे को ई दुनने प्र
स्न करे तो तस कु शत्रु ने मारे गा कहि के आप तो वि
ना उपाय से भि आप मरजाते है कहि के जानना ॥ ३९ ॥

अग्नि हृदये वायुः पदस्थाने अग्निस्तथा॥ उदस्थाने जलेऽग्नि
वेद्रः करस्थाने चवायुगा॥३९॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि पृथ्वितत्व
हृदये स्थान मे रहता है और वायु स्थान मे जलतत्व रहता
है और उदस्थान मे अग्नी तत्व रहता है और हाथ मे वायु तत्व
रहता है और ऐसे प्रकार से चार तत्व चार स्थान मे रहता है
काहिके जानना॥३९॥ स्थिर स्थावो तत्वेन सात्वी घातनिर्णय
॥ यत्र पंचविधचार: स्वरशास्त्र प्रकासनं॥४०॥ तस्यार्थ हे वरा
नने हुई फौज का युद्ध मे कौन जितेगा करि और कौन हारेगा
काहिके प्रश्न करे तो जिस ने इडा नाडि आका तत्व चलते मे
प्रश्न करेगा वाहि जितेगा कहि देना पाछे प्रश्न करे तो वाला हारे
गा कहि देना चाहिये॥४०॥ युद्धे पंक्ते प्रश्नो: इडा च प्रथमे
जयः॥ रिक्त वहिनिया च यदि प्राणेना न्यथा च॥४१॥ तस्या
र्थ हे वरानने हुई फौज युद्ध करी वाला ने कौन जितेगा और कौन हा
रेगा कहि के कोई हमने प्रश्न करे तो जिस ने इडा नाडि मे प्र
श्न किया है वाहि जितेगा कहि देना करि और जिस ने सुष
नाडि मे प्रश्न करे गा तो वाहि हार जावेगा कहि देना ईस मे
सन्देह नहि॥४१॥ इडा नाडि गतश्चंद्रः सुषुम्नि गत दग्नि
॥ सुषुम्ना स्थाने इंद्रे सत्रु: चन्द्र तस्य न संशय॥४२॥ तस्या
र्थ हे पार्वति इडा नाडि छिपाई सुषुम्नि अग्नि आगे करे और सु

सुन्न श्रीगनेश की साई करके वेरि मारी को जा पतो वेरी मर जावे
गा कहि देनि श्रवणा सुंदर कहि कराँ॥ ४२॥ वांमनाडि सम
नाम चन्द्र तस्य जयो भवेत्॥ पृच्छते दाखि रो भागे वीज यीवो
जमा धार॥ ४३॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि वा वनाडि का स्वर वाहि चल
ने मे जिस्का नाम लिया गा उसे का जय होगा फेरी श्रोर चन्द्र ना
डि वाहि चलने मे को ई पुछ श्राई सुर्य नाडि वाहि चलने वाला सेग
प्रश्न करे तो तुमारा कार्य विगार विघ्न मे सिद्धी हो जावेगा कह
हि देना॥ ४४॥ यदा गच्छति चंद्रस्य: तदा तस्यानी मादि शोत्
॥ पृच्छते दाक्षिणे सूर्य स्य: तदा जाते यवी ग्रह॥ ४४॥ तस्यार्थ हे वरा
नने जिस्के चलते चंद्र नाडि मार्ग चलने मे कोई पुछ श्राई प्रश्न
करे तो तुमारा पुछ मे पुरे का मिलाप होगा कहि देना: फेरि श्रो
र कोई पुछने सुर्य नाडि चलने मे प्रश्न करे तो तुमारा पुछ
मे वरे पुछ होगा कहि देना॥ ४४॥ पार्थिवेन समा पृच्छ: प्र
श्नसिद्धि वंधन शो॥ पृच्छे जलाभिधे भंगो: सन्मुखी पुरुष भ
वा॥ ४५॥ तस्यार्थ हे देवि पार्थिव तत्व मे कोई पुछने प्रश्न
करे तो तुमारा पुछ मे पुरे का वरे पर पुछ पुना चाहिये फेरे
री श्रोर जल तत्व मे कोई पुछने प्रश्न करे तो जिस ने श्रा
के प्रश्न करेगा वुहि जीतेगा कहि देना फेरी श्रोर वायु तत्व
मे कोई पुछने प्रश्न करे तो पुछने को उसका भागि जाना पड़ेगा

कहिदेना कि रिश्वौर श्रीकाल तत्व में कोई इन्नने प्रश्न करे तो
इन्नको तत्काल स्वरूप शरीर भरीर होई के नाश हो जायगा कहि
ना॥४५॥ अग्नितत्वे पनादाय यदा नैराय तेनि ले॥ षड्कालो
तदा कुर्यात् दुःखं यस्य गृहि मान॥४६॥ तस्यार्थ हे पार्व
ति. अग्नितत्व में कोई इन्नने प्रश्न करे तो तुमारा गृह में
वरे इन्न न होगा कहिदेना कि रिश्वौर जिस तेतत्व का वी
चार करराने तत्नेश्वु भवेला में प्रश्न करके गृह करो
को जावे तो श्रीकृ जिनि के घर श्रावेगा तत्व उसे को गृहि
मान कहना चाहिये॥४६॥ निश्चलाधार राग कृत्वा सूक्ष्म
हस्ताति पातय॥ सूर्यिरे सूक्ष्मपतनं कुरुपात फलं लभ्यत
॥४७॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि उस वेला में नाडि का अवर गहि
पावे तो श्वास तत पर वैठि के दुई हात में फल ले के स्वरका
वीचार करो जो न हात का फल लगि रहे उसे तर्फ का फ
ल कहिदेना॥४७॥ निद्रा परि संत्याग्या प्राणायामश्रि
य मन॥ मनो भंगतकृ र्यात्: सर्व कार्ये जयि ध्रुवि॥४८॥
तस्यार्थ हे वरानने श्वास तत्व दृढ वा धकर स्वास वायु का
थिर करे वैठि कर रेकी इच्छना फेरी श्वोर मन का भंगना
कर के स्थिर कर रवे श्रेसे अभ्यास कर रहने वाला योगि
का सदा सर्वदा सी रुर्ती कार्य की सिद्धि होने वाले श्रावेगा

फेरि और उस भक्ति का प्रताप से शिव रूपि प्राण का सदा
आ हुवेगा अपना शिव का आज्ञे राज जीव हुवेगा कहि के जा
नना ॥ ४८ ॥ शिवेन स्वाय पद्मा ज शिवेन धापस्तर ॥ शिवेन
शिव देहिस्थः उद्देजयति सर्वदा ॥ ४९ ॥ तस्यार्थ हे देवि हृद
य स्थान में स्वास रूपी पाप का देह भेतर ले जा के कर
स्थिर करके रवना फेरि और शिव ने शिव को ध्यान क
रना फेरि और शिव का अग्नि से विधी से ले जाय कर हृदय में स
थिर स्थापन करके अभ्यास करते रहना सो सदा काल
में इष्ट कार्य का सिद्धि होजावेगा और फेरि सुख करेगो
भि जितेगा और आपना शिव का भिर आ हुवेगा कहि के
जानना ॥ ४९ ॥ स्वरज्ञानि बलादग्रे निस्फलं कोटि धा भवे
त् ॥ ईहलोके परत्रैव स्वरज्ञानि बलं सदा ॥ ५० ॥ तस्यार्थ
हे पार्वती स्वरज्ञान का आगे कोटि बल वान हुए निरर्थ
कर आगे तो भि हारि जावेगा जिसे ज्ञान नहि उस का स
तो वीद्या कार्य सब निस्फल होजावेगा फेरि और स्व
रज्ञान का वास से इहलोक में भि परलोक में भि कुशल
आनन्द सुख भोग पावेगा ॥ ५० ॥ दस सप्त प्रशालक्ष
दशाधिवेवलं कुचित् ॥ शतक्रतु रेद्राणी परकोटि
प्रशाभवेत् ॥ ५१ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि दश हुगा दला

अर्थात् राजा हुआ तो भी फेरि और राजे को छि बल
वान हुआ कोई हुआ तो भी स्वरूपी को बल का आगे
कोई किसी से भी हार नहि सकेगा ऐसा स्वरूपी न
का प्रताप। पराक्रम: पुरुषार्थ है कहने से फेरि पार्व
ति ने कर जोर के श्री महादेव से विनती करी लगा ॥५१॥
श्री देवी वाच ॥ परस्परं मनुष्याणां कथं जय ॥५२॥ तस्या
र्थ हे वरानने मनुष्य का परस्पर युद्ध करके जय हुने
का उपाय कहि कृपा: फेरि और जो मरा जो सेंग युद्ध
करके मनुष्य का कैसे करके जये होगा सो बात मेरे कु
कहि कृपा कृपा करी के पार्वति ने फेरि विनती करी लगा
॥५२॥ श्री महादेव उवाच ॥ ध्यानं तत्र स्थिरे जीवे युक्त या
जिव सेंग मे ॥ ईशा सिद्धि भवेत्तस्य: महालाभो जयस्त
था ॥५३॥ तस्या र्थ हे देवि सुन श्री महादेव ने कहने ल
गा हे पार्वति तत्व देवता ध्यान करो का जो न हैं सो अ
पना देह भितर रहा का ईगला पिंगला रूपि स्वास वा
यु जो न वहि चलता है तो न स्वास वा यु को योग युक्ति
का ध्यान से साधि करके चित के भितर आत्मा का जोती
मण्डल में होम कर देना सके तो न स योगी के जो न

ईक्षा करेगा सो वस्तु प्राप्ति हो जावेगा और साहस लाभ क
ला का जिव सुक्ति इनेका भी जय लाभ हो जावेगा कहि देजा
जानना ॥ ५३ ॥ निराकार समुत्पन्नः साकारस्य फलं जगत् ॥
तस्मात् साकार निराकार ज्ञान में चिंति तम्य ये ॥ ५४ ॥ तस्यार्थ
हे पार्वति योजगत सी सार देह भितर निर्द्धार देखि उ
पती इन्द्र कहे केरि और ज्ञानि बुद्धिमान योगि जन ने अ
न स्कर्शी के मन पवन का जिलाव ने का योग सम साधिक
रने में बाहेर का साकार चिंपा छे निराकार हो जाने है कहि
देजाना ॥ ५४ ॥ इति श्री शिवो उमा सेवा दो के नव प्रकरण
चित पवन विजय गुह्य प्रकरण नाम समाप्ति यो ध्याये ॥ ३ ॥ इति
श्री शिवो उमा सेवा देन नव प्रकरण चित पवन विजय
गुह्य प्रकरण नाम समाप्ति यो ध्याय ॥ ३ ॥ श्री देवी वाच ॥ नर
गुह्य यम गुह्य त्वया प्रक्तो महेश्वर ॥ ईशानि देव देवी ना
मर्क्षा करणि कीवदा ॥ १ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी सुन श्री माहा
देव कहने लगा कि हे पार्वती नर गुह्य और यम गुह्य
बा का मैने तुमको कहि सुनाया केरि और अब देव सेव
स्य करों का और देवि वस्य करों का युक्ति पान उपाय
मेरे कु कहि सुनाउं ॥ १ ॥ ईश्वर वाच ॥ चंद्र सूर्य राशा क्ष व्य
स्याप वजिव मण्डले ॥ आजन्म वस्य माया च कथितो य

यतो भवेत्॥२॥ तस्यार्थ हे परमनंदन श्री महादेव आप
ने कहने लगा कि आगे से योगिजनने कहि गया था कैसे
है कहो तो वह मुर्दे नाडि का मुक्ति यान से कर के बेचि कर
देह भितर ले जाये कर रोक कर रखे मन शक्ति का रूप मन से
बेताई के देखे तो ईस प्रकार से यान उपाय करे तो कामि
निजन स्त्रि सब मन वस्य मे आवे गा कहा॥२॥ जीवेन गृहे
ते जिवो: जीव वस्य प्रदायते॥ जिव स्थाने गते जिवो: वा
नस्वो गर्भ सी स्थिता॥३॥ तस्यार्थ हे देवि जिव ने जिवे का
देह भितर वैची कर ले जाये के रोक कर रखे फेरी जिव का
स्थान में जिव जाये कर मिले तो ईस प्रकार से स्त्री का सी
भोग करे तो पुत्र हुने का गर्भ धारण हो जावे गा कहि के
जाना॥३॥ रात्रौ शुद्धि वचेत्ताथी: प्रातुद्रे कामिनि जन॥
ब्रह्म जिव पिवे वस्तु: कामिनि स्त्री वचन॥४॥ तस्यार्थ
है पार्वति जब आधा रात्री में कामि निजन स्त्री सुई रहन
में स्वास रूपि ब्रह्म जिव का उल्टा बेचि कर पिवे तो उ
स उस का कामि निजन स्त्री के देखने में मोह कर के
पियार करे गा तब वश्य मन वस्य में आवे गा॥४॥ आ
धार जपि स्थाप: तस्मिन्काले गते शिवे॥ तस्य रात्रा दाप
पर्वो: मोह मान प्रकामिनि॥५॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि स्त्री

का चंद्र नाडि चलने में अक्षर मैथुन जाति के भोग करे
तो यह कामिनि जन स्त्री को हठ हो कर अपना वस्य मे आ
वेगा कहि के जानना ॥ ५ ॥ रामा शालि गते शक्रा : प्रसीदे
दक्षरीनवा ॥ तस्यास्तान्दायवयवस्तु : मोहयत कामिनी ज
न ॥ ७ ॥ तस्यार्थ हे देवि अति सुंदर हुआ का स्त्री को
भोग करने मे सूर्य नाडि वहीं चलने मे करणी तो यह
कामिनि स्त्री बहुत मोह होई जाते हैं पा वे यह स्त्री अपना
वस्य मे आवेगा कहि के जानना ॥ ७ ॥ सप्तनव त्रि यवारा
: सीगये सूर्य सीगमे ॥ चंद्र द्वितीयं वारकृत्वा : वस्य भव
ती का मीनी ॥ ८ ॥ तस्यार्थ हे पार्वती सात : नौ : तिन वा जि
: सूर्य नाडि चलने मे कामिनि स्त्री का भोग करे तो के
रीओर हुई छ वा जि चंद्र नाडि चलने में कामिनि स्त्री
का भोग करे तो बहुत मोह कर के अपना वस्य में आ
वेगा कहि के जानना ॥ ८ ॥ सूर्य चंद्र समा कृष्य : सर्वे
नेवा धरेस्त था ॥ मोहयन्ती मुखस्पृष्टा : वारवारमि देव
रि ॥ ९ ॥ तस्यार्थ हे सुंदरि सूर्य नाडि चंद्र नाडि वहिच
लने मे स्वास रूपी वायु का इलाबे कि करदे हुआ भितर ले
जावे कर रोकी रबना तब सवेला मे स्त्री का भोग करे अ
पना मुख से स्त्री का ओष्ठ दबावे : वारवार मुख मे थुकना

रेतो वह का मिनि स्त्री वहुत मोह होई जाते है कहि के जानना॥
॥९॥ ग्रा ग्रा नामिनि ग्रानदे: यावानि ग्रा वशी गता॥ यश्चात
ग्रा यतवेला यां: नेत्र यीवा च चोच्यते॥१०॥ तस्या र्थ हे वरा
नने स्त्री का भोग करते में स्त्री का मुख ग्रपना नाक सें ऊंचे
फेरि ग्रोर स्त्री का नेत्र में ग्रोर गले में मुख सें चुंबन करे तो
वह स्त्री वहुत मोह होई जाते है कहि के जानना॥१०॥ ग्र
नेन वि धीना देवि: सव सर्व त्रका मिनि॥ नीत्या सा पर मेश्व
र: ई दृश वाच्य मन्य स्मिन्॥११॥ तस्या र्थ हे देवि का मिनि
जो स्त्री का ईस प्रकार से वस्य करी होता है हे पार्वति
यो कुक्रिया तन उपाय जो न है सो वात ग्रोर कि द्वि को नहि
वताइना ग्रपने का सो मात्र जानि के रखना॥११॥ इति
श्री द्वि वो उमासंवादे नव प्रकरणा चित पवन विजये व
शि करणि नाम चतुर्थो ध्याय॥४॥ इती श्री द्वि वो उमा सं
वादे नव प्रकरणा चित पवन विजय व शि करणि नाम च
तुर्थो ध्याय॥४॥ ग्रथ गर्भ धारणा॥ ग्रृतु काले भवेत्
रि पच माहि ये दा भवेत्॥ सूर्ये चंद्र समा योगे: सेवना
त्पुत्र सी भव॥१॥ तस्या र्थ हे पार्वति स्त्री का ग्रृतु समय
देखि पाच दीन में चंद्र सूर्य नाडि का योग मिलाय कर
गर्भ में स्त्री का ग्रृतु दान देतो तस स्त्री का पुत्र प्राप्ति हुवे

गा कहि के जानना ॥१॥ शीबाबली गया दुधः पाखि धा वह
ने सब गाभर्ई हिंगे वदे वाक्य: दहे हि त्रिभि रेव च ॥२॥ तस्या
र्थ हे सुन्दरि शीबा बली पति घोर जो का दुड मेंदि सकर
हाथ मेले कर अपना पुरुष सीख: जिन वाजि आज्ञा मान
कर बरे रहे ॥२॥ ऋतु स्नाने दि वेलारि ऋतु दाने च योग
वत् ॥ रूप लावण्य सी पन्नो: नरसिंह प्रसु नथ ॥ ३ ॥ तस्या र्थ
हे वरान ने चौथे दीन मे ऋतु का स्नान करके पवित्र शुध
होकर स्त्री सेवा किया करे रात्री मे स्त्री का ऋतु दान देजो
वरे सुन्दर नरसिंह काजे सें लक्षण हुआ का पुत्र पैदा
हुवेगा कहि के जानना ॥ ३ ॥ सुक्ष्मया सूर्ये गते नः ऋतु
दानं च योग वेत् ॥ रूप लावण्य सी पन्नो: नरसिंह प्रसु
नथो ॥ ४ ॥ तस्या र्थ हे नि सूर्य ना दि में सुक्ष्म गाना दि वाहि
वला का वेला मे स्त्री का री ऋतु दान देगा जो वरे सुन्दर
नरसिंह जे सें लक्षण हुआ पुत्र पैदा हुवे गा कहि
के जानना ॥ ४ ॥ अंगहिन प्रमान सुजायते क्षय विग्रह ॥
वीष माके दीवा रात्रेः विष माके दिना धियो ॥ ५ ॥ तस्या र्थ
हे पार्वति विष मना दि में सूर्य सूर्य नक्षि सिद्धि होना है
वा हा दिन मे होय वा हा रात्री मे होय के रि और जल न
ख का साथ अग्नि नख मिलने को प्राप्त जो वा है स्त्री का

भोग करे तो बालक पुत्र पैदा हुवेगा कहिके जानना ॥ ५ ॥ जले
पुष्टिनतत्वयुः वीर्य्या पुत्रसमापुयात् ॥ कस्तूरी आदपि पुत्रा
सम्भूत्वातेऽधाकर ॥ ६ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि जलतत्वमे
अग्नितत्व का साथ पावे तो तस वेला मे वीर स्त्री का अमृत
दान देवे तो देवे दिन मे भि तस्का पुत्र हुवेगा केरी और स्त्री
का चंद्र नाडि चलने मे पुरुष का सूर्य नाडि चलने मे योग
मिलाया कर भोग करे तो अवश्य पुत्र प्राप्ति हुवेगा कहिके
विश्वास करने ना ॥ ६ ॥ अनेन क्रम योगेन नाना दने वदीच
दक ॥ गर्भ धारण सूते स्या इशा दुरवेजले नवा ॥ ७ ॥ त
स्यार्थ हे वरानने आगे कला का क्रम योग से और वायु
का गुण से स्त्री को गर्भ का आश्रय होता है और जलतत्व का
गुण से और यह दशा गुण से भि दुख प्राप्ति होता है कहीके
जानना ॥ ७ ॥ चरवान सोरव पुक्रश्च भोग वा गर्भ सीस्थि
र सीन्नि धन चलेतत्वे व्योम्नि गर्भ विगर मीति ॥ ८ ॥ तस्या
र्थ हे देवि स्त्री का गर्भ में धारण होते चर सुख भोग हो
नसव आकाश तत्व का स्वभाव गुण से प्राप्ति होता है कहि
के जानना और उस मे से विपरीत हो गये तो गर्भ का
नाश हो जाते है सो जानु ॥ ८ ॥ माहेश्वरी सुतो पत्ति
वाहनो दुहिता भवेत् ॥ हो वेद्भुः गर्भ हानि स्याः जाव

मानस्य पाम नि॥९॥ तस्यार्थ हे पार्वति ईड़ा नाड़ी में प
रे से स्त्री का पुत्र प्राप्ति होता है फेरि और देवता का
प्रभाव पुरा से भि स्त्री का पुत्र जन्म होता है फेरि और ई
न दुनै मिलि गये तो गर्भ का नाश कर देता है पैदा होगा
तो भि मर जाते हैं कहि के जानना॥९॥ इति श्री श्री को
उमा सीवा देन व प्रकरणा चित पवन विजय गर्भ धार
णा नाम पंचमो ध्याय ॥५॥ इति श्री शिव को उमा सीवा देन
व प्रकरणा चित पवन विजय गर्भ धारणा नाम पंच
मो ध्याये॥५॥ अथ सम्वर सर प्रकरणम॥ चैत्र शुक्ल
प्रति पदा: प्रातस्त्वा भि भेदते॥ पश्यहि वक्ष रोगो योद
दक्षी रोगो वो तरुण रोगो॥१॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि सम्वर स
र चैत्र शुक्ल का परेवा को प्रात काल में पंचतत्व का वी
चार करणि का है सो कहे तो अपना देह का सिद्धि करो
कानि भी तु शरीर का सब इंद्रिय जिताय कर योगिज
नने उतरायण चंद्रनाड़ि का दक्षी णायण सूर्य ना
ड़ि का वीचार करने रहना चाहिये कहि के जानना॥१॥
चंद्रोदय चवेलायां वहे सायचन्त्व तापाधिक्याय त
था वायुः प्रक्षिप्त सर्वतोजयकार॥२॥ तस्यार्थ हे व
रानने चंद्रनाड़ि उदय वेला में योगिजन ने दिवा

एक राशि इस वेला में पृथिवीतत्व एक जलतत्व दु
ई पाषाणतत्व मिलन मध्ये एक जीव मिलार हे तो जगत
संसार सब प्राणी का सुख प्राप्ति हुवे गा काहें से कहे
तो पृथिवी में बहुत जल वृद्धि हुवे से अन्न फल फु
ल वृद्धि होय से सब का कुशल आनंद सुख प्राप्त हुवे
गा कहि देजान चाहिये ॥२॥ तेजो जो जिन भयं घोर
दुर्भिक्ष वातत्वात ॥ सर्व तत्व फलराय वर्षे सा शेदि
ने तथा ॥३॥ तस्यार्थ हे देवि अग्नि तत्व में आकाश तत्व
मिले रहे तो जगत संसार पृथिवी में जल तत्व से
से अग्नि काल में सब दुःखे या पर पंच का भुख से आकु
ल व्याकुल हुवे गा फेरि और रोग व्याधि से व्याकुल
हुवे गा तस्कार राजादीन दिसहिना में बराबर तत्व का वी
चार करते रहना चाहिये ॥३॥ मध्ये सा भवातिकुरा
देश सर्व च कर्म सु ॥ देश भंग सा हो रोग क्षेत्र शुभ्यादि
सुख दा ॥४॥ तस्यार्थ हे पार्वती सुक्ष्म राग नाडि के
आकाश तत्व मिलि के रहे तो जगत संसार का सी
ष्टि का सब कार्य में अशुभ होता है फेरि और राजा का
दर्बार में अरिष्ट भरिष्ट भी कलह होजावेगा ॥४॥ मे
ष सी मीन के लायां स्वरदय विचार पत्र ॥ सम्यक्त्व

र फल कहया: लोकानीं तत्वचैन का ॥५॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी ये असंख्यातिका प्रात काल में तत्व का वीचार करणा चाहिये कि सब शास्त्रो कहेतो लोक पैंच दुनिया का शास्त्रो सब चराचर को दीन मही ना शुभ अशुभ का फल कहि देना चाहिये ॥५॥ पृथिव्यादि कैतत्वेन: दीन मासादि फलेच ॥ साभर्वैवतथाकुष्ट: व्यासवाहुरागवहिक्रि ॥६॥ तस्यार्थ हे वरननेपृथ्वीतत्व में जलतत्व आई के मिलेतो आठ महिना सम: सकल दुनिया पर पैंच का शुभ फल कहेगा कहि के जानना: केरी और तेस में अग्नितत्व और वायुतत्व और आकासतत्व मिलि के रहेतो सब का अशुभ होता है कहि के जानना ॥६॥ सुभिक्षराजवृद्धि स्यावहुसस्यवसुधरा ॥ वहुवृष्टि तथा सौख्य: पृथिवितत्व वहेत्यदि ॥७॥ तस्यार्थ हे देवि केवल पृथिवितत्व मात्री वहि चलि रहेतो पृथिवि में जल वहुत वृष्टि हुवेगा: तव सकल दुनिया पर पैंच का शुभ तथा आनंद सुख भोग पावेगा कहि के जानना ॥७॥ अतिवृष्टि सुभिक्ष स्या: अरोग्य सौख्य मेव च ॥ वहु सस्यान तथा पृथ्वि: आपतत्व वहेत्यदि ॥८॥ तस्यार्थ हे पार्वति पृथ्वितत्व में आकासतत्व मिलि के रहे

तो जगत सैंसार पृथिवि में जल बहुत बरसैं गा तब
सकल दुनिया पर पैंच का दुःख होगा
पावेगा कहि के जानना ॥८॥ दुर्भिक्षराक्षसभयं तस्य: क्षो
णीपतिः सदा दूरगः। अल्पादल्पतरा वृष्टिः अग्नितत्त्व
वहेद्यदि ॥९॥ तस्यार्थ हे सुंदरी अग्नितत्त्व में आकास
तत्त्व मिलि के रहै तो पृथिवि भूमि में अल्प वृष्टि थो
रा जल बरसैं गा तब सकल दुनिया पर पैंच का उपद्र
व्याप का भय होवैगा कहि के जानना ॥९॥ उत्पातोऽपद
वस्य: क्षितिरल्पतरा तथा ॥ मेषसंक्रान्तिवेलायां वा
युतत्त्व वहेद्यदि ॥१०॥ तस्यार्थ हे वरानने मेष सं
क्रान्ति का दीन में अग्नितत्त्व वहि रहा का वेला में आ
का स तत्त्व आई के मिले तो जल न बरसि के सकल
दुनिया पर पैंच का बहुत दुख पाई के विकल वे पति
रि रहै उत्पात उपद्रव अरि अरि बहुवैगा कहि के जा
नना ॥१०॥ मेषसंक्रान्तिवेलायां व्यासतत्त्व वहेद्य
दि ॥ तत्रादिशुभनाशः स्यादिनाऽन्तेऽवमेव ॥११॥
तस्यार्थ हे देवि जे सैं कि बारह पाई के वे भि रहना न
वाहि वे अच्छा गा का ग्रास जे जयला भ होने का कार

जहां सब एका दो महिना आगे से जु कि यत्न उपाय कर
रकेर हुआ चाहिये मेष संक्रांति का दिन मेसूर्य ना हि पहि
वला का वेला में आका सतत्व आदि के मिलो तो सब जुगि
यापर पैच का सुरवना सो भे दुख विपती पड़ेगा कहि
के जाना ॥ ११ ॥ उपायपूर्वे मनेस्वासे: सस्वतत्व जुसि
द्धिदम् ॥ सूर्ये चैव तथा शुक्रे: संग्रहसर्वसिद्धिदम् ॥
॥ १२ ॥ तस्यार्थ हे पार्वती स्वास वायु भे तर पूर्व से होजे
मे चलना हि वहि चले तो भे केरी और सूर्य ना हि व
हि चले तो भे तस वेला में कोई मनुष्य ने दया धर्म से
दान पुण्य जोग वस्तु करेगा तो उस मनुष्य का अस
त्य पहुत फल प्राप्ति हुवेगा कहि के जाना केरी और
रजोग का सकाज करेगा सब सीद्धि होजावेगा क
हि के जाना चाहिये ॥ १२ ॥ मेष मे वहि तत्व स्व: जायते
केवलम्भा ॥ न कुर्यात्तद्वस्तु संग्राह: हि मासेन सह
धाना ॥ १३ ॥ तस्यार्थ हे उपरि मेष संक्रांति का दीन
मे अग्नि तत्व वहि चलने में कोई मनुष्य का रोग व्या
धा लगे तो उस्का विचार कर कहि देना आका स का
दोष है और कुछ नहि है कहना ॥ १३ ॥ रवौ संक्रा

मशोगादि रोहान्तेर प्रसस्य ते॥ रक्षा तिते वहि ओ गौर वै
ज गतितले॥ ४॥ तस्यार्थ हे वरा नने आहित वार कादीन से सि
का ति परी के को ई मनुष्य का रोग परे तो उस वि मा री का गादि
वि चार कर के अग्नि तत्व वहि चाति रहा होगा तो आ का स का
दोष है कहि देना॥ ४॥ इति श्री शिवोउमा सं वा देन व
प्रकरणा चित पवन विजयः सम्वत सरना म षष्ठो ध्या
य॥ ६॥ इति श्री शिवोउमा सं वा देन व प्रकरणा चित
पवन विजय सम्वत सरना म षष्ठो ध्याय॥ ६॥ महित
ने स्वरो चः जल चजल मातह॥ तेज सि पेत वा योचः शा
कि नि पिन्द दोष मो॥ १॥ तस्यार्थ हे देवि पार्वि तत्व में
कोई पुछने रोग का प्रश्न करे तो तुमारा देह में उत्पा तिह
ग का रोग है कहि देना फेरि और जल तत्व में कोई पुछ
ने रोग का प्रश्न करे तो जल कि शा च का दोष और मान्दा
को दोष है कहि देना फेरि और कोई पुछने रोग का प्रश्न क
रे तो तेज तत्व में पुछे तो तुमारा पेत का गर्मि रोग है क
हि देना फेरि और वायु तत्व में कोई पुछने पुछे तो तुमारा
देह में शा कि नि का दोष है कहि देना चाहिये॥ १॥ आदौ
शुभ गतो पुनः पश्चात् शुभि शेत्र यद॥ पुछि तोपि

सूर्य जिवे: प्यर्थ दर्थ परी पछ ॥ २ ॥ तस्या र्थ पार्वति ग्रा
मे शुन्य नाडि मे उछ नाहे पाछे नाडि सूरी हो हि ग्रावे तो वरे
भारी रोग मे मुक्ता वरे सो भि तयो रोगी बचेगा मरेगा नहि
कहि कहि देना ॥ २ ॥ ग्रस्मि नेस्मि तो जिव: तत्रस्या परी
पछ ग्रि ॥ तदा जिवा ति जिव सो: यदि रोगे रूप पुन
॥ ३ ॥ तस्यार्थ हे वसुंधरा दहिने तर फि सूर्य नाडि सूरी
हुवा का वेला मे को हि पुछने प्रस्न करे तो सा हा भारि रोग
होगा तो भि सो रोगि नहि मरेगा कहि देना फेरि ग्रौर
वा यत फि चद्र नाडि सूरी हुवा का वेला मे को हि पुछने
प्रस्न करे तो तुमारा उद्यम फल का प्राप्ति हो जावेगा क
हि देना ॥ ३ ॥ दाथे रोच वदा वा उ: पुरव रौ ग्रास क वदे
त् ॥ तदा जिवा ते वसो जिवा का हि विलोक्य च ॥ ४ ॥
तस्यार्थ हे उमा दहिना तर फि सूरी नाडि चलते मे को हि
पुछने प्रस्न करे सो रोगी का वरे भारि रोग हो गा तो भि म
रुहुगा कहि थोरा विस्कार मात्री हो गा मरेगा की कह
ने का सोच न हि करणि ॥ ४ ॥ जिव कार व पछ क: जिवा
कार विलोक्य च ॥ जिव स्थो जिव ने प्रस्ने तस्य जिवो
पने फल त् ॥ ५ ॥ तस्या र्थ हे पार्वती: जो न रोगी ने जि

वश्याई इछे तो तौन जीव का देषकर विचार करके कहि देना
की मरेगा कि कहने का धंधा तुम्हारी सोक नहि करनी ॥५॥ वाम
चारदक्षिरोचा प्रवेशेचनहान्यते ॥ तत्रस्थ पृछतेदुतः तस्य
सिद्धिर्नसंशयः ॥६॥ तस्यार्थ हे दुर्गा देवी यदि वाम कि होगा तो
अि और दाहिने नाकि होगा तो अेचंद्र सूर्य का नाडि अि तर प्रवे
श हुआ का वेला मे कोई हुआ ने प्रस्न करे तो तुम्हारा का वे सिद्धि
हो जावेगा कोने पाप का सं देह नलि करनी कहि देना ॥६॥ प्र
स्ने चाधो स्थितो जीवः जयं जीवस्य निश्चयः । उद्विचारस्थि
तो जीवः जीवो गतिजमालक्षं ॥७॥ तस्यार्थ हे वरानने प्रस्न
कर के पूछा का वेला में स्वास वायु चोजाने मे पूछा होगा तो
यह रोगि का जीव सन्दु नहि हुवेगा निश्चय कहि देना फेरि और
उभो स्वास वायु चलने मे कोई हुआ ने पूछा होगा तो रोगी
का जीव नाहि बचेगा निश्चय कहि देना अवस्य मरेगा
॥७॥ वीपरीतास्वरपस्तारी कार्यां प्रछतियदि । वीपरीत
वविस्तवीः विस्वमास्योदयसंति ॥८॥ तस्यार्थ हे देवि
सुक्ष्मरा नाडि चलने मे कोई हुआ ने प्रस्न करे तो विपरित क
र के कहि देना फेरि और विषम अंग का विषम मे लक्षण हो
ता है सो तुम जान जाहि ये ॥८॥ चंद्र स्थाने स्थितो जीवः सूर्ये

स्थाने चपृच्छति तदा प्राणाधिपुत्रो मोः यदि देवशनैश्चर
॥९॥ तस्यार्थ हे पार्वति रोगकाजि वने चढ़नाडि लेआई केरी
और सूर्य नाडि चलने वाला का पास आई प्रश्न करे तो कहि दे
ना कि तोरो गी बचा वने का पास से सब देलाया तो कि प्रहरो
गी बचेगा नहि कहि के कहीं देना ॥९॥ पिरैला सीस्थि तो जि
वो: पाने पुनस्पृच्छति ॥ तदापि स्वपते रोगी। यदि साहेमहे
श्वर ॥१०॥ तस्यार्थ हे उमा सूर्य नाडि में जिव वायु चलते र
हा केरि और चन्द्र नाडि चलि रहा की रोगी का जिव आई प्रश्न
करे तो उस रोगी का बचा वेगा कहने वाला सीसार से देखि न
हि पर्ती और कोन कहे जगदीश्वर श्री महादेव आई के उथा
ने तो कि न जिये गा ॥१०॥ एकस्य पुनस्य वः विपर्वेन रोगाक्षि
श्वः पुनरवति हुसा ॥ तयोर्द्वयोर्वै पुनर्द्वादि पतीचः प
क्षे पवेन्द्र यदा यहि तस्यारे ॥११॥ तस्यार्थ हे पार्वति के
वल एक के स्वर मात्र प्रश्न में चलि रहा होगा तो तस्का कल्याण
कुशल आनंद सुख भोग प्राप्ति हुवेगा कहि देना फेर और दो
स्वर रहित हुवे तो कैसा हुवेगा कहे तो इक मास में मर जावेगा
कहि के जाना चाहिये ॥ ११ ॥ इतो श्री पार्वती को उमा संवादे नव
प्रकरणा चिन पवन विजय रोग प्रश्न नाम सप्तमो ध्याया।

॥ ७ ॥ इति श्री शिवोमा संवादे नवद्रुकरणाचिन्तवनाधि
गमे रोगपरिज्ञानाम सप्तमोध्याय ॥ ७ ॥ अथ कालज्ञान कथि
तम्। मासादौ वत्सरादौ च पक्षादौ च तथा क्रम ॥ क्षयकालप
रीक्षाम वायुचरवसा उच्चे ॥ १ ॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि अब का
लज्ञान कहे हूं सुन महिना का आदो हुआ तो वे वर्ष का आदो
हुआ तो भि करणी चाहीये कहे से कहे तो आदका शास्त्रे कुछ
ल आनंद सुख भोग जस जयेला भुने का काम कार्य करो
शास्त्रे स्वरज्ञान विचार करते रहना ॥ १ ॥ पंच प्रमाम कदिप
ज्ञान स्नेह चिंतयत ॥ रक्षा वस्तूर्ये भवेनाते न जिवे स्थितो
भवेत् ॥ २ ॥ तस्यार्थ हे वरानने पंच प्रमाम कृदि दीया ना
ली के और ज्ञान सुधी तेल कुरणि करके सूर्ये नाडि वाम वचा
या जिव हृदय मे स्थिर होजावेगा कहि के जाण ना ॥ २ ॥ मारु
तं च ईक्षया: सूर्ये रोध यते यदि ॥ अभ्यासा जिवतोजि
व: सूर्ये काल दिप्यते ॥ ३ ॥ तस्यार्थ हे देवी सूर्ये नाडि का को
हि वृद्धि मान ने प्राणायाम का क्रिया से रोध कर रखे तो अेसी
अभ्यास करो की आजा नें तो सूर्ये सृष्टि काल देखि वचा या आ
यु जिव का भिंदगी वृद्धि जाते है ॥ ३ ॥ मनना अवतो चं
द्र: का यापवा निशि च यत् ॥ बलयोग सदाभ्यासे: रविश्चा

शिक्षा शिक्षयन्ति ॥४॥ तस्यार्थ हे वर्षधराश्रमका समें चैंडमा
देखि उन्मनि हुआ का अभ्यास में का यानि पिण्डगत अनिल निरोध
रमें का लक्षणि है कि कमल का वीरुआ है उसका नाम गंगा जल
गम पीअन्तरले जाया करि चना करो कुंजा नें तो श्रेष्ठ शिक्षा
अभ्यास कर्मयोग अभ्यास करसके तो जब तक चैंडमा सूर्य श्राद्ध
समें रमि रहेगा तब तक उस को जिका जिव जिव कुछ सिद्ध
होकर अमर होई रहेगा ॥५॥ शीशां क वार पदा तो : दीवा
वा योदिवा कर ॥ इंदिया होंर तो नित्य शा योगी श्वन सीश
य ॥५॥ तस्यार्थ हे उमा राजी मेरे चन्द्रमा व चार हैं रहे कि
दोन मेरे सूर्य व चार हैं रहें श्रेष्ठ शिष्य योग का अभ्यास नित्य क
रके रहने वाला योगी कहने का इच्छा है ॥५॥ अहोरात्रय
स कत्र वहते तस्य मारुत ॥ तदा तस्य भवेन्मृत्यु सप्तवर्ष
सरत्रय ॥६॥ तस्यार्थ हे पार्वति रात भर में दुई स्व
रसाथ वहि चले तो तस मनुष्य का जिव कुई वर्ष में मरजा
येगा कहि के जानना चाहिये ॥६॥ अहोरात्र द्वय स्वा पि
गला यी सदा गति ॥ तस्य वर्ष द्वय प्रोक्तो जीव चात्मस्व वे
दिभि ॥७॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी दुई अहोरात्री समझि गो
ला गाडि वही चले रहे तो तस मनुष्य दुई वर्ष में मरजा

यंगा कहि के योगी जनने कहि गया था कहि के जानना॥७
श्रीराम वहते यस्य दिवा पुरेपुरे स्थितः॥ तदा सर्वसुख
पूर्णः वक्ष दीति न संशयः॥८॥ तस्यार्थ हे वरानने
रात्री समय के स्वर में स्वास वायु वहि चले तो तस मनुष्य
का स के वर्ष में मर जावेगा कहि के जानना॥८॥ रात्रौ चंद्रदी
वासूर्ये वहते यस्य सध्ये मध्ये मरणं मासान्तरे भवेत्: आधे
ते चन्द्रसूर्यवा॥९॥ तस्यार्थ हे देवि रात्री भर चन्द्र ना
डि वही चले के रि ओर दीन भर सूर्य नाडि वहि चले तो
तस मनुष्य का स धे आधे से वही चले तो: छ महिना मे म
रजा यगा कहि के योगी जनने कहि गया था॥९॥ यदा
दीर्घो दशाहानिः यदि भानुनिरन्तरं॥ वहेत्प स्य च वैश्व
स्तुः शेषा हेन च मासि के॥१०॥ तस्यार्थ हे पार्वति सो
हे दिन सम सूर्य नाडि वहि चले तो तस मनुष्य का जि
वय के महिना मे मर जावेगा कहि के योगी जनने क
ही गया॥१०॥ सूर्यो वहते सूर्ये चंद्रमा नैव इस्य
ते॥ पक्षा राजा वते स्तुः कालस्या नेन भाषितं॥११
॥ तस्यार्थ हे सुन्दरि सधे सूर्य नाडि मा नी वहि चले तो

रहा और औषध नाहि न चले तो उस मनुष्य का जिव पैंचर होने
से मर जावेगा कहि के जान न चाहीये ॥ ११ ॥ सैंहूर्यो वहते चैव
इडा सूर्ये नैव वहत्यपि ॥ ज्ञाहो न जायते मृत्युः कालज्ञाने नात्रि
तः ॥ १२ ॥ तत्पार्थ हे वरानने सधे चैंड नाडि मात्री वहीं चलते
हैं और सूर्य नाडि वहि न चले तो उस मनुष्य का जिव पकैंस
हि ना मे मर जावेगा कहि के ज्ञानः ने कहि गया था ॥ १२ ॥
इत्र उदिव वायुश्च समकाल प्रवर्तिते ॥ आयु नीन पस्याति
दसा हेतु सुते ध्रुवम् ॥ १३ ॥ तत्पार्थ हे देवि इडा पिंगला
वायुः योनि न पस्तु सम के आजि मे नि कसि आवे तो उस मन
ुष्य का जिव दश दिन मे मर जावेगा कहि के निश्चय कर के
जानना ॥ १३ ॥ अस्तधाति ध्रुवचैव विस्तो स्त्री रोप दानि
च ॥ आयुहिनी न यस्यति चतुर्थे मात्री मराडलम् ॥ १४ ॥
तत्पार्थ हे पार्वति अस्त धाति हुआ ध्रुव हुआ वो वायु पाडुका
हुआ मात्री का मराडल हुआ यतने लक्षणा जिस्का आयु दी
हिन हुआ है उस मनुष्य ने इन ने लक्षणा आवे से नहि देखे
गा कहि के जानना ॥ १४ ॥ अस्तधाति भवन्नाजि हा ध्रुवना शाग
य वच ॥ अवो विषाद पदरा यः तार का मात्री मराडले ॥ १५ ॥
तत्पार्थ हे सुन्दरि अस्त धाति हुआ और जि हा हुआ और आ
या का भी हो हुआ कि विषाद पद हुआ और आप का नोक भ

या ओर ध्रुव भया कहि साखी का खण्डन भया ॥ १५ ॥
नवभ वो स प्रबोध: पंचतारा त्रिनासी का ॥ जिह्वा एक दीन प्रो
क्तो: स्वयं मारवो ध्रुव ॥ १६ ॥ तस्यार्थ हे वसुंधरानो
आदि: सात ओहों: ह्रस्वर: पंचतारा त्रिनाम: जिह्वा एक:
ईन इन अक्षरा जि स्वरो ओ ने न दे वेतो यो रोगी अवश्य मरजा
यगा कहि के जानना ॥ १६ ॥ को रो अरो गालि भी नु: किंचि
त् दिव्यानि रेक्षयन् ॥ यदान इस्य ते वि नु: दशा हे न जमोश्वर
॥ १७ ॥ तस्यार्थ हे उमा से जि को आमा का कोरो ओ अंगुली से
दवाई के वि नु न देवे तो वह रोगी दश दिन में मरजावेगा कहि
के जानना चाहिये ॥ १७ ॥ इति श्री शिवोक्त सीवादे नवप्रकरणा
त्रिन पवन विजय काल ज्ञान नाम अष्टमो ध्याय ॥ ८ ॥ इति श्री
शिवोक्त सीवादे नवप्रकरणा त्रिन पवन विजये काल ज्ञान
नाम अष्टमो ध्याये ॥ ८ ॥ इडा गंगे वा तिर्थ नि: वेयला जमुना
नदि ॥ मध्ये सरस्वति वे वाह: प्रयाग सैंगम स्मृता ॥ १ ॥ त
स्यार्थ हे पार्वति चन्द्र नाडि गंगा तिर्थ हे कहि के जानना के
रो ओर सूर्य नाडि जमुना नदि हे कहि के जानना कहि ओर
मध्ये म कला का सुक्ष्म ज्ञान नाडि सरस्वति हे कहि के जानना
ओर इन तिनमिला कर जहा वे था रहेगा तहा प्रयाग तिर्थ हे
कहि के जान ॥ १ ॥ आदो साधन मा ख्यातं सप्त प्रन्थ कारय

कस्य ॥ वैधयज्ञासनो योगिः वैधयदुरिमान कौ ॥२॥ तस्यार्थहे सुन्दरी प्रथम साधन कहेगा साधन करके पाछे प्राणायाम करे फेरि और आसन दृढ करवी वे फेरी मन पवन जिला वने को योग का अभ्यास करने रहना जो कोई दीन मे अपना शुक्र नजसलाभ प्राप्ति होजायेगा कहिके जानना ॥२॥ पुरक कुंभक चैव रेचकेश्वर नियक्रम ॥ सात्वो योगी भिनित्य देहस्य सिद्धि हेतवे ॥३॥ तस्यार्थ हे वरानने पुरक कुंभक रेचक इन तिन प्रकार को कर्म क्रिया अभ्यास करणी चाहिये की सवासो कहिये जो अपना देह का सिद्धि करणी का जिन सदा सर्वदा अभ्यास करते रहना चाहिये ॥ ३॥ पुरकेकु रुते पुष्टि धातुस्थिरतथैव च ॥ कुंभ केसंभव कुर्यात जिवरक्षा विवर्धनम् ॥४॥ तस्यार्थ हे देवी पुरक करने मे अपना देह का धातु बलवान होई के स्थिर रहता है फेरि और कुंभक करने मे अपना देह का हृदय मे रहने वाला प्राण रूपि जिव का रक्षा होता है कहिके जानना ॥४॥ रेचकेहरते पापः कुर्यात्तयो गपदवृतेद ॥ पञ्चादशात्मकारयतु प्राप्त वैधेचयात्मेन ॥५॥ तस्यार्थ हे पार्वति रेचक करने मे तस मनुष्य का सी पाप का नाश होजाते है फेरि और तस योगी का योगपद विप्राप्त होजायेगा और देह भितर विरिन्ट का तम

रात को निरछा माल महो जावेगा कहि के जान नाचाहिये
॥५॥ कुंभ यत्र सहज वायुः यथास्य प्रयत्नतः ॥ रेचकेचै
प्रमाणेन पूरके पूरयेत् बुधः ॥६॥ तस्यार्थः हे दुमा अपना श
क्ति माफिक प्राणायाम करते रहना चाहिये: और स्वास वायु
का रछा सें और कुंभक करा सवायु सें यत्न करके चंद्रनाडि सें
वहि चला वाकर पूरा करे ॥६॥ चंद्रापिबति सूर्येश्च सूर्येति
पिबति चंद्रमा ॥ अन्योन्यकाल भावेन जिवे चंद्रार्क तारके ॥७॥
तस्यार्थः हे पार्वति यो देहा भेतर रहने वाला सूर्य चंद्र नाडि
का भेद क्रिया विधि जाने के श्वास रूप करके समाधि करलेना
फेरि और चंद्रमा से सूर्य पिवना फेरि और सूर्य सें चंद्रमा
पिवना श्वे से अन्योन्यकाल रूपि पिवहा का भावना करे सें श्वा
कना प्राण रूपि जिव का जिंदगी आयुर वढ़ते हे कहि के जा
नना ॥७॥ स्वयं जेवहते नाडिः तन्नाडि रोधनकुरु ॥ तत्वर्व
धमतत्वायुः पवर्नं जायते सुखा ॥८॥ तस्यार्थः हे सुन्दरी ईग
ला: पिंगला: सुश्मणा नाडि यो तिन नाडि का यत्न सें रो
ककर सुखना कका वंधकरा बे पा छे श्वा कना शरिर फुली
आउना है वह कर्म करने में देह सें सुख दुख का सहन पना है
कहि के जानना ॥८॥ सुखना शाक्षि करीभ्यां: मैंगुली भे तिरो
धयेत् ॥ तनोदयी भेतिसर्वे शम्भुवी कटरा पथ ॥९॥ तस्या

र्थ हे वत्स तुझे उत्तम: नाम: आया: काम का: अंगुली से दबा कर रखे
पाछे ऐसा नित्य अभ्यास करके रहने वाला योगी का महातत्व को
सरा भेद देखि परेगा कहि के जानना चाहिये ॥९॥ तस्य रूपं
त्रिदोषः मराङ्गलक्षणानि ॥ योगेति मानवो लोके: तस्य रूपं
त्रियोगीयाः ॥१०॥ तस्यार्थ हे देवी ऐसे त्रिविधि क्रिया उपाय कर
के रूप लक्षण गति भेद स्वाद मराङ्ग देखना ऐसे त्रिविधि
जो न जानता है सो तो मनुष्य जानत अज्ञ है गा जो ऐसे तसको
योगि कहना चाहिये कहि के जानना ॥१०॥ निरालंबनिरस्थहे
योगी नाकि चित्त दधि चित्त वर ॥ वात्त ना उन्मनि भुवा
: काल जय नि लिलया ॥११॥ तस्यार्थ हे वसुंधरा त्रि
शैको आसाथ ऐसा फेरी और कि शैको छोड़ि प्रेम त्रिया
न करो वाला नि सैं का नि रभय हुआ काश्यप मन में दृढ
कर के थिर रहने वाला और दश इंद्रिय न चला है मुख
से न बोले के साध न कर नि रन्तर में अभ्यास करो
वाला तस मनुष्य का शास्त्र को है स मय में भव सागर से
पार लगने का रस्ता देखि परेगा कहि के जानना ॥११॥
विश्वस्य वेशि का शक्ति नेत्र भ्या पहि दस्यते ॥ तत्र स्थाणु
मनोवस्य: थाम मात्र भवेदी हा ॥१२॥ तस्यार्थ हे उमा
जो जगत सैंसार का या: मो ह: लोभ: काम: क्रोध: के

से और प्रति प्रेम पियार और रोगी को सामर्थ हुने वाला को भा
षि कालक्षय रास में जो नी पर्ती है और वासने में जिस्का चित्त लग
ता मे प्रति प्रेम पियार करी वाला को एक पहर राजे डगी आयु
र वढ़ने हैं कहि के जानना ॥१२॥ तस्या प्रवर्द्धने शिप्रीः घती
का त्रयमायुषः ॥ शिवेनोक्त पुराणत्रे शिद्धि सावरे कथितः ॥१३॥
तस्यार्थ हे पार्वती जिस्का मन निरंतर मे एक पहर तक
रोकी रखना सके तो दिन मे सब योगी का आयु ३॥ ३ घरि वढ़ने
हैं यह वात मैं ने सीखि सावर मे पुराण वाले कहि आया हैं कहि के जा
नना ॥१३॥ वाहु वयास्य स्थानः प्रदयवन वयसः नाति धादि कुथ
नाम ॥ तस्य प्राणाहि धृ कुंभके वाजिते निर्लं सम प्राणा सकला चति
रुध्ये ॥१४॥ तस्यार्थ हे वसुधरा पहला मन बाधी के मूलाधा
र धार को पुरो ककर नहा अपान वायु है उस वायु कार मा
र कर आकाश जिस वाजि कर और प्राण शक्ति वायु का हृदय
मे रोक राखना पाछे ॥१४॥ एके कुंभ्भ्रमणा विकर पुण्य पदेप्र
ष्ठ हि धवनि स्थानि ॥ विद्या आकास मा जैहि व स्मर राग आगने
सी के षि धन्य ॥१५॥ तस्यार्थ हे पार्वति एके कर के कुंभ्भ्रमणा
का छेद मे ना धर हि कर आकाश मे रहि के शिव को ध्यान करी
का विधि जाके पास उपाय योगी जन सब जानना हैं सो क्रिया
करी वाला योगी वरो धन्य है कहि के जानना ॥१५॥ वज्रजाप्ति

तिजो योगीः स्वतन्त्रः तिनिपास ॥ सर्व दुख विनी मुक्तो लभ
ते वांछित फल ॥१६॥ तस्यार्थ हे पार्वति जो कोई ब्रह्म
का योग मुक्ति का पान उपाय जो जे स्वे जानता है सो पुरुष भाग्य
वान है अथ वा बाबा आत्मी करी ब्रह्म को भी दूरी दुख का ग
हा अै मनोवांछा का फल पावि हुवेगा कहि के जानना ॥१६॥ स्व
रूपानि नरोयस्य लक्ष्मी पादतल भवेत् ॥ प्रकाशे सर्व वेदा
नी ब्रह्मा राठ भास्करो यथा ॥१७॥ तस्यार्थ हे सुन्दरी स्वरूप
यथा रूपानि स्वाहि द यसे भारि पुरुष भरि रहा है सो उस का प्रकाश
न पर लक्ष्मी ने अै वास करते रहता है कहि के जानना जैसे
रि ओर भी दूरी वीद्या भी दूरी शास्त्र में प्रकाश सहि रहता है
कैरि ओर अै लोक्य जगत भी सारका प्रकाश में वैठ सूर्य ने
राखि रहता है तसे ही भाव से स्वरूपानि सब मनुष्य में व
हु रूपानि उस मन वरो श्रेष्ठ है कहि के जानना चाहिये ॥१७॥
सप्तलोके तथा पूज्यः लक्ष्मी रूपस्य मानदि ॥ पाडिन्द्रिय
वि जानाति सत्वरूपानि तथैव च ॥१८॥ तस्यार्थ हे वरा
नने जो सेवे सप्त लोक में स्वरूपानि का ज्ञान को पुरुष का परमि
चने पूजा मान करते है कैरि ओर वो देह का भितर तो रि तंर
आ थ पूः पहुर चालि रहा का पाडि जो न है सो हि जला भिग
ला सुक्ष्म रूपा नाडि है सो योगि न पाडि काल का रूप भेद स्व
रूप पहुंचा का ह का क्षर कहा का ॐ कार का भेद स्वरूप यथा

शिवे साधिजाने गाय्यो र कुनि या वर पिवने को हि नहि जानता
है कहि के जानना ॥१८॥ नैवने लभने कुर्य: लक्षकोटि रसायना।
स काक्षर प्रदाता है नादि भेद नि वेद कहू ॥१९॥ तस्यार्थ हे देवि लक्ष
कोटि रसायन बनाइ नेश लाहोगा तो भि स्वर दयसानि का हार नेको को
ई किसी ने नहि सकेगा। किस वास्ते कहते तो यो देह नि नर प्रजा नस्यो
वर्ण नेर लाका अन्य मनुष्य प्रकुरा का स्वर अँ कार का जान
नेश लाहो यसें वह योगी वरो श्रेष्ठ उत्तम धन्य है कहना चाहीये
॥१९॥ पृथिव्या नाभि द्रव्यानि सर्व तरा मयभेदे स्वर तन्त्र
तथा पुष्ट: देव वस्य तथा स्त्रीय ॥२०॥ तस्यार्थ हे वसुंधरा स्वर द
यसानि का वास्ते उधार करी वाला ऐसो कुजगत संसार का पृ
थिवि में ॥ कोई वस्तु और कोई द्रव्य और कोई पदार्थ ये पृथिवि
ही है केरि और जगत संसार का सब पदार्थ ये तरा वरा वर
समझते हैं केरि और स्वर का भेद तन्त्र का भेद: देवता वस्य क
री का स्त्रीय वस्य करी का स्वर सारै से होता है कहि के जानना ॥२०॥
गर्भ दशक का लक्षण्या: नव प्रकरणा चीनास्त्र प्रवर्ति ने लोके: प्र
ष्टि कुयो शिवि सदा ॥२१॥ तस्यार्थ हे पार्वति स्त्री का गर्भ धारण करी
का केरि काल सारा जानने का केरि हिन नव प्रकरण से प्रकट हुई र
हा का वह स्वर दयसानि हिन मात्र में उदै तवि प्रकट करी वाला के
रो और हिन मात्र में उदै तवि प्रकास करने प्रशिद्ध करी वाला ऐसि
स्वर दयसानि शास्त्र योग कि या जाने तो उस योगी का वास्ते सक
ल सर्व उत्तम पदार्थ प्राप्ति होजाय यह कहि के जानना हि ये ॥२१॥ आ
य ग्रह नि स्य: पठ शा शिद्धि दाय कहू: स्य स्वा सर समासि नि नी

द्वाग्रहारसम्बन्धं हृ शिव यन्त्र रसायनो प्रकृत्या भविष्यति ॥२२॥ स्वा
र्थ हे उन्द शिव स्वरूपेश्वर शास्त्र का जिसने इति प्रेम पियार कर
के हूजा पाठ भक्ति भाव क्रिया करते हैं उस रात्रि का शास्त्र श्रा
वास मेरा मन में फिर रोशनाला वह हर्ष देखि परम योगी हो हूजा
ग हर फेरि श्री सदा सर्व दा हमेसा नित्य आसन पर बैठि के उ
पास करो शिवालय रात्रि का सूर्य का मन का वैहि हो हि के उ
फल उत्तम यत्न भ प्राप्ति हो जायेगा कहि के जाना चाहिये ॥
२२॥ इति श्री शिव उमा सँवादे नव प्रकरणाचित पवन विजय स्व
रूप वर्णन नाम नवमो अध्याय ॥९॥ इति श्री शिव उमा सँवादे न
व प्रकरणाचित पवन विजये स्वरूप वर्णन नाम नवमो
अध्याय ॥९॥ अथ सम्वत् १९६६ लाल भाद्रमास कृष्ण पक्ष प
ञ्चमी तिथौ ५ रोज ५ वृहस्पति वार के दीन सँ पूर्ण समा
प्त ॥ इसके पाठ का माली कृ मिलेवने वाला भी जो सी
गी ॥ सन्मा शिव विजये स्वरोदय का ॥ आनन्द पर बैठि के ले
ख गया है ॥ श्री महादेव पार्वती सँ वाद ॥ ॥ ॥ ॥

इति शिवस्वरोदयपुस्तकनाथकेदेवकुमारस्य

नारायणकेदयाल ईश्वरसाहसी कर्नल नमो श्रीगणेशाय नमो श्रीगुरु

स्वस्ति श्री सेवपिमाजी गन्नाई सकल गुणागी पुराण भारता
स्वामर्थ

स्वस्तिश्री प्रतिमान स्वीकृत

स्वस्तिश्री मङ्गलम्

स्वस्तिश्री
गणेश

शुभम् प्रतिसम्वत् १९८७ साल भाद्र २५ गते रोज ४

स्वस्तिश्री सर्वमाङ्गल्य

इति

2374
ASHA ARCHIVES